विश्वामित्र की खोज



विद्या प्रकाशन मन्दिर

दिल्ली-६

संस्करण प्रथम १९६१

मूल्य दो रुपये

प्रकाशक ... प्रकाशन मन्दिर, दरियागंज दिल्ली ६
मुद्रक जगदीश प्रिंटिंग एजेंसी द्वारा
हरिपुर प्रेस दिल्ली ।

मैं इतना ही कहूँगा—

'विश्वामित्र की खोज' नामक इस संग्रह में मेरी कहानियाँ संग्रहीत हैं। अपनी इन कहानियों के बारे में कुछ विशेष न कह कर केवल मुझे इतना ही कहना है कि इस संग्रह की सभी कहानियाँ मेरी अपनी दृष्टि से मेरी श्रेष्ठ और बहु चर्चित कहानियाँ हैं। टेक्नीक शैली तथा भाव भूमि की दृष्टि से इस संग्रह की मेरी प्रत्येक कहानी अपने अलग ही ढंग की है। प्रेम की भावभूमि पर मैंने अपनी इन कहानियों में एक नई चीज देने का प्रयास किया है।

आशा है भिन्न भिन्न प्रकार का रस ग्रहण करने वाले पाठकों को इस एक संग्रह में ही सब कुछ मिल जायेगा।

सरिता के संपादक प्रकाशक भाई श्री विश्वनाथ जी का विशेष आभारी हूं जिन्होंने "विश्वामित्र की खोज' नामक कहानी को इस संग्रह में सम्मिलित करने की आज्ञा दी।

साले की होली
बीकानेर

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

चकवी ने मुंह सिकोड़ कर कहा "अरे तुम भी खूब जानती हूँ तेरी इन मनगढ़न्त कहानियों को पहचानती हूँ तुम्हारे स्वभाव को। जब कभी तू रात भर गायब रहता है, ऐसी ही गढ़ी हुई बातें सुनाता है। पर आज ।"

"हे चकवी! भरम का मेरे पास कोई इलाज नहीं, पर जो कहता हूँ सोलह आना सच कहता हूँ। एक खूबसूरत औरत की प्रेम कथा है। सुनना चाहती है तो सुन?

चकवी ने कुछ देर तक सोचा और बाद में स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। चकवा भेद भरी मुस्कान के साथ बोला, "हे चकवी! सामने वाले मसीपाल बँगले में तूने एक खूबसूरत जोड़े को देखा होगा?"

चकवी ने उत्सुकता से कहा "हाँ-हाँ! मगर हे चकवे! इधर कई दिन से वे दिखलाई नहीं पड़ रहे हैं।

"इसी का भेद तो तुझे बताने जा रहा हूँ। कल शाम से ही मेरी तबीयत कुछ बेचैन थी। दम घुट सा रहा था। यहाँ की हर चीज मेरी बेचैनी को बढ़ा रही थी। लाचार मैं यहाँ से उड़ा और उसी के छत वाले पेड़ पर जा बैठा। खिड़की की राह मैं कमरे की प्रत्येक वस्तु को अच्छी तरह देख सकता था। तभी मैं सुनता हूँ तो क्या सुनता हूँ कि उस कमरे में खाँसी की वह भयानक आवाज हो रही है जिसमें मौत के झटके साफ नजर आते थे। उस मौत का वह रोमांचक संकेत था जिसके ध्यान करने भर से बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

"हे चकवी! कमरे के व्यक्ति को इतने जोर से खाँसी हुई कि मुझे महसूस हुआ कि उसका कलेजा मुँह को आ जायेगा पर उसकी पत्नी लता ने आकर उसे सँभाला। उसकी पीठ पर अपना कोमल हाथ रखा और आँखों में दर्द (यह दर्द बिल्कुल बनावटी था) लाकर बोली, "अरविंद! जब तक तुम अपने इस सन्देह को नहीं भूल जाओगे तब तक मौत तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी।

अरविन्द ने बोलने की कोशिश की पर लगातार आनेवाली खाँसी

चकवे-चकवी की बात

पहली रात—

रात का अँधियारा संसार पर जैसे-जैसे छाता गया वैसे-वैसे चकवी का मन बेचैन होता गया। उसने एक बार चारों ओर देखा—धुन्धला, अँधेरा और भय। वह तड़प उठी, "चकवा अब तक क्यों नहीं आया ?"

तभी पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ी। चकवी चौकन्नी हो गई। देखा चकवा भागा दौड़ा चला आ रहा है। चकवा उसके सामने की डाल पर आकर बैठ गया—चुपचाप। चकवी ने पूछा "हे चकवे! आज तेरा रंग ढंग बदला हुआ कैसा है ? रोज की तरह प्यार क्यों नहीं करता ?"

चकवे ने लंबी आह छोड़ कर कहा, "आज मेरा मन उदास है प्रिये चकवी! यह दुनिया बड़ी अजीब और मक्कारी से भरी हुई है और इस पर ये औरतें   हे राम!

औरत-जात पर लगाये हुए अधूरे आरोप को सुनकर चकवी के तेवर बदल गये। अपनी आँखों को चकवे पर जमाती हुई बोली "तुम भी रहो नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली। भगवान बचाए इन मर्दों से निर्दोष औरतों पर अत्याचार—अनाचार करने वाली जाति का मैं रोम रोम पहचानती हूँ। कैसे धर्मराज बनकर ऐंठ से बोल रहे हो ? पहले जरा तू ही बता कल रात भर कहाँ गायब रहा था ?

चकवा तुरन्त सँभला। अपने आपको गंभीर बनाता हुआ भारी स्वर में बोला "मैं कल रात उस स्त्री के जीवन के भेद का पता लगाने चला गया था जिसने एक पुरुष के साथ बड़ा धोखा किया था।

प्रसिद्ध कहानीकार एवं प्रियतम मित्र
श्री छैलीलाल गुप्त को सप्रेम
कलकत्ता प्रवास के मधुर तिक्त क्षणों
की स्मृति में।

चकवे-चकवी की बात

पहली रात—

रात का अँधियारा संसार पर जैसे-जैसे छाता गया वैसे-वैसे चकवी का मन बेचैन होता गया । उसने एक बार चारों ओर देखा—शून्यता, अँधेरा और भय ! वह तड़प उठी, "चकवा अब तक क्यों नहीं आया ?"

तभी पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ी । चकवी चौकन्नी हो गई । देखा चकवा भागा दौड़ा चला आ रहा है । चकवा उसके सामने की शाख पर आकर बैठ गया—चुपचाप । चकवी ने पूछा 'हे चकवे ! आज तेरा रंग-ढंग बदला हुआ कैसा है ? रोज की तरह प्यार क्यों नहीं करता ?'

चकवे ने लंबी आह छोड़ कर कहा, 'आज मेरा मन उदास है प्रिय चकवी ! यह दुनिया बड़ी अजीब और मक्कारी से भरी हुई है और इस पर ये औरतें है राम !

औरत-जात पर लगाये हुए अधूरे आरोप को सुनकर चकवी के तेवर बदल गये । अपनी आँखों को चकवे पर जमाती हुई बोली "चुप भी रहो नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली । भगवान बचाए इन मर्दों से निर्दोष औरतों पर अत्याचार—अनाचार करने वाली जाति का मैं रोम रोम पहचानती हूँ । कैसे धर्मराज बनकर ठाठ से बोल रहे हो ? पहले आप तू ही बता कल रात भर कहाँ गायब रहा था ?

चकवा तुरन्त सँभला । अपने आपको गंभीर बनाता हुआ भारी स्वर में बोला "मैं कल रात उस स्त्री के जीवन के भेद का पता लगाने चला गया था जिसने एक पुरुष के साथ बड़ा धोखा किया था ।

चकवी ने मुंह सिकोड़ कर कहा "अरे चुप भी रह जानती हूँ तेरी इन मनगढ़न्त कहानियों को पहचानती हूँ तुम्हारे स्वभाव को। जब कभी तू रात भर गायब रहता है, ऐसी ही गढ़ी हुई बातें सुनाता है। पर आज —।

"हे चकवी! भरम का मेरे पास कोई इलाज नहीं पर जो कहता हूँ सोलह आना सच कहता हूँ। एक खूबसूरत औरत की प्रेम कथा है। सुनना चाहती है तो सुन?"

चकवी ने कुछ देर तक सोचा और बाद में स्वीकृति-सूचक सिर हिला दिया। चकवा भेद भरी मुस्कान के साथ बोला "हे चकवी! सामने वाले मनीराम बँगले में तूने एक खूबसूरत जोड़े को देखा होगा?"

चकवी ने उत्सुकता से कहा "हाँ-हाँ! मगर हे चकवे! इधर कई दिन से वे दिखलाई नहीं पड़ रहे हैं।"

"इसी का भेद तो तुझे बताने जा रहा हूँ। कल शाम से ही मेरी तबीयत कुछ बेचैन थी। दम घुट सा रहा था। यहाँ की हर चीज मेरी बेचैनी को बढ़ा रही थी। लाचार मैं यहाँ से उड़ा और उसी के छत वाले पेड़ पर जा बैठा। खिड़की की राह मैं कमरे की प्रत्येक वस्तु को अच्छी तरह देख सकता था। तभी मैं सुनता हूं तो क्या सुनता हूँ कि उस कमरे में खाँसी की वह भयानक आवाज हो रही है जिसमें मौत के झटके साफ नजर आते थे। उस मौत का वह रोमांचक संकेत था जिसके ध्यान करने भर से बदन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

"हे चकवी! कमरे के व्यक्ति को इतने जोर से खाँसी हुई कि मुझे महसूस हुआ कि उसका कलेजा मुँह को आ जायेगा पर उसकी पत्नी लता ने आकर उसे सँभाला। उसकी पीठ पर अपना कोमल हाथ रखा और आँखों में दर्द (वह दर्द बिलकुल बनावटी था) लाकर बोली "अरविन्द! जब तक तुम अपने के सन्देह को नहीं भूल जाओगे तब तक रोग तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ेगी।"

अरविन्द ने बोलने की कोशिश की पर लगातार आनेवाली खाँसी

ने उसे बोलने नहीं दिया। लता की आँखों में एक अजीब सी कुटिलता नाच रही थी। हे भगवान! नारी ने अपने फूल से कोमल शरीर में कैसा पत्थर-सा दिल छिपा रखा है? मैंने आज से पहले कभी यह विश्वास भी नहीं किया था कि नारी इतनी कठोर बन सकती है?

'अब तक बेचारा रोगी कुछ संभल गया था। रुकते-रुकते वह बोला "लता! मुझे तुम पर किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।"

'मुझे विश्वास नहीं होता।"

तुम्हें तो मेरे हर विश्वास में अविश्वास की छाया दीख पड़ती है, और क्यों न दीखे? आखिर हो न तुम औरत ही। अरविंद के होठों पर फीकी-फीकी मुस्कान बिखर उठी जैसे वह यह भाव दरसा रहा हो कि वह सचमुच खुश है।

लता ने इस पर अधिकार भरे स्वर में कहा "फिर सुखानुरूप से उपचार करने के बाद भी यह भूल— ।" लता की आँखों में प्रश्न बोल उठा। संघर्ष के भाव अरविंद के चेहरे पर आये और गये। वह टूटते हुए स्वर में बोला "तुम मेरे पाप का प्रायश्चित है। उस समय उसकी आँखों में हे भगवान एक ऐसी वेदना चमक उठी थी, जिसे देख कर मेरा मन भर आया।

तभी उसकी पत्नी लता सिंहनी की भाँति गर्जी 'नहीं' उसकी मुद्रा से साफ मालूम हो रहा था कि वह अपने मन के तूफान को बाहर निकालना चाहती है लेकिन वह एकाएक संभल गई अभी तुम्हें आराम की सख्त जरूरत है तुम्हें पूरी तरह आराम करना चाहिए?"

भगवान! चोट खाए हुए साँप की तरह अरविंद फुफकार कर बोला 'लता! मैं आराम करते थक गया हूँ। हद से ज्यादा आराम ने मेरे मस्तिष्क और उसकी गतिविधियों को निकम्मा कर दिया है। ज़रा पास बैठो न बैठकर कुछ बातें करो न।" अब अरविंद ने उसे बड़ी विचित्र निगाह से देखा जिससे लता सहम गई। हे भगवान! लता क्यों सहम

तरह निष्कपट नहीं था।

सुन बन्नी ! अरविंद के पास बरबस बैठती हुई बोली 'यह खून तुम्हारे कर्म का फल नहीं, तुम्हारे पाप का प्रायश्चित नहीं बल्कि उस सन्देह का फल है जिसने रोग का रूप धारण कर तुम्हारा जीना नरकीय कर दिया है।" और उस दीन-हीन पुरुष ने क्या उत्तर दिया ? बन्नी ! वह टूटे हुए स्वर में एक लाचार दार्शनिक की भांति बोला 'कभी-कभी जीवन में वह नहीं मिलता जिसकी आदमी चाह करता है। कुछ आदमी इसे भाग्य का चक्र समझते हैं और मैं इसे परिस्थिति का फेर या मजबूरी समझता हूं। और उसकी आंखों में उसके अन्तर की वेदना घनीभूत होकर छलछला उठी। फिर भी वह अपने होठों पर स्मित रेखाएं दौड़ाता हुआ बोला 'यह भी मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि तुम खुश हो। मेरे इस लाल खून का रंग यदि तुम्हारे जीवन को सुरंग बना सकता है तो मेरे लिए इससे खुशी की बात क्या होगी ? लता ! मैं केवल तुम्हें खुश देखना चाहता हूं केवल तुम्हें।"

'नहीं अरविंद, तुम मुझे खुश देखना चाहते ही नहीं।'

'क्यों ?"

'क्योंकि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे इशारों पर नाचूं और इशारों नाचना मेरे लिये असम्भव है। मैं तुम्हारी किसी भी शर्त पर सत्य का साथ नहीं छोड़ सकती।

हे बन्नी ! यह है एक नारी का पति प्रेम और उसकी महानता। कितना बदल गया है इन्सान ? एक तरफ पति से प्रेम और दूसरी तरफ यह ढोंग ! वाह ! वाह !!

'फिर यह सत्य है कि तुम मुझे घुला घुला कर मारना चाहती हो।" अरविन्द ने तड़प कर कहा।

'नहीं अरविन्द, जिस दिन नारी का मन इतना कठोर हो जायेगा उस दिन संसार की कोमल भावना का अन्त हो जायेगा, अरमानों का दम घुट जायगा और मानवसमाज चीख पड़ेगी।" लता की आंखों में सावन की

वर्षा उमड़ पड़ी। सिसकते हुए बोली "जलज मुझे प्यार करता है यह मैं स्वयं नहीं समझ सकी। मगर मैं इतना जरूर जानती हूँ कि उसके प्यार में वह दुर्गन्ध नहीं जिसे समाज अनैतिक की संज्ञा देता है।"

'तुम रोने लगी लता इन अनमोल आँसुओं को व्यर्थ में मत बहने दो ये खून से बनते हैं। व्यंग किया अरविन्द ने। फिर उसे खाँसी आई। खाँसी के साथ खून लाल खून। वह सिसकता हुआ तब स्वर में बोला 'जलज आ जायेगा और तुम्हारी इन प्यारी-प्यारी आँखों में आँसू देख कर उसे कितना दुख होगा? उसकी कविता जाग उठेगी। वह कह उठेगा कि इस मदभरी पलकों से अश्रु नहीं बह रहे हैं ये ये मुक्ता हैं चाँद के अश्रु हैं। पोंछ डालो इन आँसुओं को।

लता कराह उठी, 'अरविन्द तुम चुप हो जाओ। शायद तुम्हारा यह व्यवहार मुझे आत्मघात करने के लिए विवश करे। नारी के मर्म को तुम नहीं समझ सकते। कितनी दारुण वेदना और अशान्त हाहा कार के बीच वह अपने को जीवित रखती है, यह भी तुम नहीं जान सकते। लेकिन नारी की सहज कोमलता पुरुष की मति पर जागृत हो ही जाती है और वह अपने समस्त सुखों की तिलांजली देकर त्यागी बन जाती है। मुझे भी त्यागी बनना पड़ेगा, शायद मुझे जलज से अपना सम्बन्ध विच्छेद करना पड़े, टूट जाना पड़े। पर किन्तु दृढ़ता से वह पुनः बोली 'मैं चाहती थी कि हम नये युग में नये विश्वासों और नई परम्पराओं के साथ जियें। अनुचित बन्धन और अनुचित हस्तक्षेप नर और नारी दोनों के लिए अब श्रेयस्कर नहीं। लेकिन मैं देख रही हूँ कि पुरुष अपने संस्कार इतनी आसानी से नहीं छोड़ सकता। अपनी चिर आधिपत्य की भावना का सहर्ष परित्याग नहीं कर सकता। चाहे वह कितना ही नया और आधुनिक क्यों न हो?'

है पगली! इसके बाद तेरी आज बासी आँखोंमें आँसू भरकर विनती करती हुई बोली 'मेरे नये व्यवहार से जलज के भावुक हृदय पर आघात लगेगा, उसे हमारी संकीर्णता पर तरस आयगा। सोच तो

अरविंद, अच्छी तरह एक बार फिर सोच लो।"

प्राणों से प्यारी चकवी! उस सुन्दर नारी ने हर प्रकार अंत तक अपने पति को धोखा दिया और अपने प्रेमी का प्रेम निभाया। पति खून भी के कर रहा था और पत्नी अपने प्रेमी की, उसकी भावना की उसके भावुक हृदय की चिन्ता में घुली जा रही थी। छि: यह औरत जाति भी क्या होती है। लो चकवी सवेरा हो गया है, विदा फिर रात को भेंट होगी।

दूसरी रात—

आकाश में तारों के फूल खिल चुके थे। पास ही बहती भागा-गंगा झिलमिल-झिलमिल चमचमा रही थी। ठीक समय पर चकवा आया और चकवी का इन्तजार करने लगा। रात ढलती जा रही थी पर चकवी नहीं आई। चकवा झुंझला उठा। उसके मन में सन्देह जागृत हुआ। उसे चकवी के निष्कलंक चरित्र पर काले-काले धब्बों के बड़े-बड़े गोले नजर आने लगे। वह विचारने लगा, "हूं! चकवी खुद गायब रहती है इसलिए ही डटकर मेरा विरोध नहीं करती कि मैं दो-दो चार-चार दिन कहाँ गायब रहता हूं? बड़ी चालाक है यह चकवी? पर आज मैं सारी बात का पता लगा कर ही सांस लूंगा। बस आ जाये यह।

रात अपनी रफ्तार से भाग रही थी। लेकिन चकवी नहीं आई। बिल्कुल नहीं आई। चकवा जलभुन कर खाक हो गया।

सूरज की प्रथम किरण आभी में फूटी। चकवे ने अपनी राह ली।

तीसरी रात—

आज चकवी पहले से ही चकवे की प्रतीक्षा कर रही थी। चकवे को देखते ही वह उल्लसित होकर बोली "हे प्यारे चकवे! तुने उस दिन जो किस्सा सुनाया था वह वास्तव में बहुत ही सच्चा था, पर प्राण मेरे! वह एक तरफा था। मैं कल रात उसी पेड़ की शाख पर बैठी बैठी सारा की कहानी सुन रही थी।

चकवे का सारा मन्सूबा खाक में मिल गया। अपने गुस्से को जबर दस्ती पी कर उसने पूछा "हे चकवी! मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश बेकार जायेगी। यह तुम अपनी कहानी क्यों सुनाने लगी?"

चकवे की इस बात पर चकवी खिलखिला कर हँस पड़ी। चकवा सहम गया। चकवी ने अपनी चोंच से उसके सिर को कुरेद कर कहा "वह जोर जोर से अपनी डायरी पढ़ रही थी और मैं उसकी डायरी ध्यान से सुन रही थी। हे चकवे! यह मर्द जाति वास्तव में बड़ी मक्कार जाति है इस पर विश्वास कर नारी जाति ने सदा ही धोखा उठाया है।

इतना कह चकवी एक पल के लिये बिल्कुल शांत हो गई। उसने अपनी चोंच को पेड़ की शाख से रगड़ा और बोली प्राणेश्वर! इन पुरुषों ने स्त्रियों के भोलेपन का बड़ा ही गलत फायदा उठाया है। पहले-पहल ये नारियों के सामने बिल्कुल सीधे बन कर आते हैं और बाद में ये पशु की तरह नारी के तन-मन से खेलने लगते हैं।

बात कई साल पुरानी है।

लता और अरविंद विलायत में साथ साथ पढ़ते थे। अच्छे परिवारों से सम्बन्धित होने के कारण दोनों की घनिष्ठता शीघ्र ही बढ़ गई। अरविंद का व्यवहार बर्ताव लता के प्रति अत्यन्त मधुर और मर्यादित था इसलिये लता का सहज आकर्षण धीरे धीरे प्रीत का बाना पहनने लगा। थोड़े ही काल में दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगे। निश्चय हुआ कि नये सिर से जन्म-भूमि की गोद में आते ही वे दोनों विवाह के पवित्र सूत्र में बँधे जायेंगे।

शिक्षा समाप्त करके जब वे भारत लौटे और सचमुच विवाह के बन्धन में बँध गये तब कुँवारी लड़कियों व कुँवारे लड़कों को इस जोड़ी से डाह उत्पन्न हुई पर बुजुर्गों ने उन्हें आशीर्वाद ही दिया कि यह जोड़ी सदा चिरायु रहे। दूधों नहाय पूतों फले।

विवाह के सिर्फ दो साल बाद अरविंद के प्यार ने एक नई करवट

थी। सर्दी के मौसम में जिस तरह शरीर की खाल पर हल्की-हल्की रुखाई आ जाती है उसी प्रकार अरविंद के व्यवहार में उपेक्षा के दर्शन होने लगे। लता को इस पर आश्चर्य होने लगा। और होना भी चाहिये मेरे चकवे! जो पति अपनी प्राणप्रिया को सदा पलकों की छाया में रखता हो वह उससे कतराये तो पत्नी को सन्देह मिश्रित अचरज होना ही चाहिये।

चकवी चुप हो गई जैसे वह बोलती-बोलती थक गई हो। आसमान का एक तारा टूट कर अन्धेरे में लुप्त हो गया। चकवी की आँखों में व्यथा सी तैर उठी। वह मद भरे स्वर में बोली "हे चकवे! यह तेरी नश्वर जाति कि प्रेम जैसे पवित्र नाम पर कलंक लगा देती है।

मेरे मन के राजा! उस रोज लता खाना खाकर बिस्तरे पर करवटें बदल रही थी। क्योंकि अरविंद आजकल रात को बहुत देर से आता था। आता भी था तो पी कर। लेकिन लता को उसकी अनुपस्थिति में चैन नहीं पड़ता था। वह बेचैन होकर करवटें बदला करती थी।

एक बजा होगा। घंटी बजी। लता ने द्वार खोला तो उसके मुँह से चीख निकल पड़ी। अरविंद के माथे पर पट्टी बंधी थी। पट्टी के बीच से खून का लाल दाग चमक रहा था।

'इन्हें क्या हो गया?' उसने हठात पूछा। समीप खड़ी एक अत्यंत सुन्दर लेडी ने बड़ी नजाकत से कहा आज इन्होंने बहुत अधिक पी ली थी, इसलिये 'बार' की सीढ़ियों से गिर पड़े।

"आज इन्होंने फिर पी?"

"हर रोज पीते हैं मेरे साथ अच्छा मैं चली, गुड नाइट।" लेडी के सेंडिल्स की खट खट की आवाज कुछ देर तक होती रही।

"मेरा ख्याल है की इस लेडी के बारे में आप बाद में सोच लीजियेगा पहले आप इन्हें बिस्तरे पर लेटा दीजिये" यह चमन का स्नेह भरा स्वर था। लता की प्रथम भेंट इसी चमन को लेकर हुई थी। उस रात चमन अरविंद के पास कुर्सी लगाये बैठा रहा। रात की गहरी उदासी

लता के बीच लता ने कभी रुक–रुक के लाज से कई प्रश्न पूछे थे। उसके बारे, में उसके परिवार के बारे में और उसके शौक के बारे में जिनका उत्तर लाज से संक्षिप्त संयत भाषा में दिया। उसने यह भी बताया कि अरविंद उसका जिगरी दोस्त है। वे दोनों सहपाठी भी रह चुके हैं।

हे सत्यवान के अवतार बकरे ! सवेरे ज्यों ही अरविंद जी की आँख खुली त्यों ही उन्होंने अपनी उनींदी आँखों से बिना किसी को देख अस्फुट स्वर में कहा, "रजिया कहाँ है ?"

'कौन रजिया ?" लता ने पूछा।

'ओह ! तुम लता ! तुम्हें चला जाना चाहिये था।" अरविंद ने अहसान भरे स्वर में कहा।

'चला जाता पर तुम्हारी पत्नी की घबराहट देखकर जाने की हिम्मत नहीं हुई। अच्छा अब मैं चला भविष्य में इतना अधिक मत पीना कि यह शराब तुम्हें ही पीने लगे। गुड मार्निंग लता देवी।

"फिर कब आइयेगा।" लता ने नम्रता से पूछा।

"जब जी ने चाहा।"

उस दिन के बाद मेरे बकरे उस कुसुमी कोमल लता का हृदय विदीर्ण होने लगा। जिसे वह प्रेम का अवतार समझती थी उसका वही पति उसके साथ इतना भयंकर विश्वासघात करेगा यह उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। उसके मस्तिष्क में प्रेम और घृणा के कई तूफान आये और गये। उसने धीरे धीरे प्रतिरोध करना आरम्भ किया। इस पर अरविंद ने एक दिन साफ शब्दों में कह दिया कि वह उसकी व्यक्तिगत बातों में दखलअन्दाजी न करे। पर वह तो पत्नी थी। उसका हृदय सामाजिक अधिकारों से प्राप्त उस पति को इतनी सरलता से छोड़ने को तैयार नहीं हुआ। वह नित्य झगड़ा करने लगी। रोक टोक करने लगी पर परिणाम कुछ नहीं निकला।

हे बकरे ! यही तुम पुरुषों का महान् और पवित्र प्रेम है। मैं तो

कहती हूँ कि तुम सब को सात समुन्दर पार भेज दिया जाय तो अच्छा हो। बच्चे ! अरविंद से उपेक्षित तिरस्कृत और प्रताड़ित लता अजय की साधारण सहानुभूति में गहरी आत्मीयता के दर्शन करने लगी। उस रात के बाद अजय प्रायः लता के घर जाता था। अजय ने पहले अरविंद से झगड़ा किया समझाया समझौते की बातें की पर अरविंद ने वही बात उसे कही जो उसने लता को कही थी कि मेरे व्यक्तिगत मामले अपने हैं। तब स्वाभाविक रूप से लता और अजय घनिष्ट होते गये। दोनों दुख की बातें करते जब थक जाते तो बड़ी अटपटांग बातें करके कहकहे लगा कर दिल हल्का कर लेते थे। लता पति के अत्याचार से पीड़ित थी और अजय बेचारा अनाथ था ही। चित्रकारी कर जीवन निर्वाह करता था। प्रेम से वंचित उस आत्मा ने लता के स्नेह में जीवन के महान् एवं पवित्र वरदान के दर्शन किये।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती रही।

छः महीने में लता और अरविंद का पति-पत्नी का सम्बन्ध नाम मात्र का रह गया। लता भी अब इस व्यवहार की आदी सी हो चुकी थी। अरविंद क्या करता है उस से उसे जरा भी सरोकार नहीं था ?

अब अजय ही उनके जीवन का सहारा बन गया था। हे बच्चे ! जब स्नेह की सरिता उमड़ती है तब नारी का हृदय इतना विशाल और उदार हो जाता है कि नर उसमें जीवन के परम सुख की उपलब्धि करता है। वही प्राप्ति अजय कर रहा था।

लेकिन बच्चे ! झूठे प्यार की जड़ सदा हरी नहीं रहती। एक दिन रजिया ने अरविंद की आशाओं पर पानी फेर कर किसी क्रिश्चियन साहब के साथ विवाह कर लिया। उस समय उस निगोड़े अरविंद का सारा नशा उतरा। उसे महसूस हुआ कि रजिया ने उसके साथ जो प्रेम लीला रचाई थी उसकी कीमत उसे बहुत मँहगी पड़ी है। रजिया ने काफी पैसे इकट्ठे कर लिये हैं।

मेरे सिरमौर ! अरविंद का नशा तो उतर गया पर अहम नहीं मरा।

वह फिर भी लता से दूर रहता था और लता ने उस जानवर के प्रति देखना ही बन्द कर दिया था। एक तो रसिया द्वारा सभी चोट और दूसरा जलज के प्रति लता का अपार स्नेह फूल सी महकती और घुल घुल सी चहकती उन दोनों की जिन्दगी ने अरविंद के मन में असह्य आग को जन्म दे दिया। अब वह घंटों उदास और मौन बैठा लता और जलज के कहकहे सुनता था। हंसी के उठते हुए फव्वारे उसके कानों में गर्म तेल से लगते थे पर भूखी बकरा में वह मौन रहा निश्चल रहा।

आखिर एक दिन लता और जलज ने मसूरी जाने का निश्चय किया। अरविंद अब अपने को रोक नहीं सका। पति के अधिकार की भावना उसके हृदय को आन्दोलित करने लगी। वह आया और लता से बोला "मैं तुम्हें मसूरी नहीं जाने दूंगा।"

"क्यों ? लता ने आश्चर्य से पूछा।

"लोग तुम्हारे और जलज के बारे में पहले से ही गलत धारणायें बनाये हुए हैं और मसूरी जाने पर तो ।

"आप को तो हम पर विश्वास है कि हमारा स्नेह ।"

अरविंद ने उसकी बात को सुनी-अनसुनी करके कहा "कल दरबान रसोई बनाने वाले महाराज से कह रहा था कि अपनी बीवी की आजकल जलज बाबू की है। बेचारे अरविंद बाबू तो" उसने जोर का ठहाका लगाया। इस मेरी गैरत सहन नहीं कर सकती।

वेश्या बकता महाराज! यह है तेरी कौम। खुद तो सब भूल-भाल कर जिस तिस के मुंह मारते फिरेंगे और बीवी अपने सच्चे हितैषी के साथ कहीं जा भी नहीं सकती। जिस हितैषी ने उसके दुख को सुख बनाया और उसके दुर्दिन की दारुण व्यथा को कम किया। पर मेरी वीर और दृढ़ प्रतीज्ञी लता ने कहा मैं जाऊंगी और जरूर जाऊंगी। जब आप मेरे अरमानों को कुचलकर अत्याचार कर सकते हैं तो मैं अपने जीवन के कुछ पलों को खुशी से क्यों न गुजारूं ?"

"गुजारो, पर तुम वहां नहीं जा सकती।"

शुक बोला, सुन राजा

एक राजा के दरबार में हीरामन तोता था। वह सिंहल द्वीप से भीषण संग्राम के पश्चात लाया गया था क्योंकि सिंहल द्वीप का राजा स्वयं उस गुणी और चतुर शुक को सहजता से नहीं देना चाहता था। कुछ भी हो आर्यावर्त के प्रतापी राजा के समक्ष सिंहल नरेश को पराजित होना पड़ा और हीरामन प्राप्त कर लिया गया।

शनैः-शनैः राजा और शुक में इतनी भारी आत्मीयता हो गई जितनी राजा भरत और हिरण में थी। राजा एक क्षण-भर भी उस शुक का वियोग सहन नहीं कर सकता था और शुक भी उसके अनुराग के कारण अपने अतीत को भूल गया था। वह स्वयं भी राजा से इस तरह घुल-मिल गया था जैसे प्राण शरीर से।

एक दिन सम्पूर्ण दरबार लगा था तब दरबार के बीच राजा ने शुक से पूछा "क्यों हीरामन हमारी मृत्यु हो गई तब ?"

हीरामन ने गम्भीर स्वर में कहा, 'मृत्यु निश्चय है पर वियोग नहीं। वियोग का दारुण दुख मैं कदापि सहन नहीं कर सकता।"

"फिर ?"

'यदि आपका स्वर्गवास मुझसे पूर्व हुआ तो मैं भी अपने प्राण त्याग दूँगा। मैं आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकता।

राजा और समस्त दरबारी हीरामन के इस कथन पर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने हीरामन की अत्यन्त प्रशंसा की कि वह बड़ा ही स्वामि भक्त है।

संयोग की बात कहिये कि राजा का देहान्त शुक के पूर्व ही गया। शुक इस संताप को सहन नहीं कर सका। वह राजा को साथ पर

निरन्तर मँडराता रहा और अन्त में मर गया।

स्वर्ग में अप्सराओं के मध्य उन दोनों का पुनः मिलन हुआ। राजा की विलास-प्रवृत्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। हीरामन का कार्य था—इन अप्सराओं का मनोरंजन करना। वर्ष पर वर्ष बीत गए।

अप्सराएँ शुक से नाराज होकर बोलीं "हम तुम से ऊब गई हैं। एक-सी कथाएँ, एक-सा कथानक और एक सा परिणाम! यदि तुम में कुछ नयापन नहीं है तब हमें कहानियाँ मत सुनाया करो।"

शुक का मुख उदास हो गया। उसने समस्त वैदिक पुराण उपनिषद तथा अन्य प्रचलित कथाएँ सुना दी। अब वह बेचारा नहीं समझ पा रहा था कि वह अब क्या सुनाए। इधर राजा भी उससे रुष्ट हो गया। उसकी प्रतिभा का उपहास करने लगा।

तब शुक ने नरक-स्वर्ग में भ्रमण किया लेकिन नवीनता नाम की वहाँ कोई वस्तु ही नहीं थी। राजा उस पर अत्यन्त क्रोधित था और अप्सराएँ उससे सीधे मुँह बात भी करना पसन्द नहीं करती थी। बेचारा वह बहुत दुखी था।

राजा की चिन्ता बढ़ गई। शुक चार दिन से कहीं भाग गया था। अप्सराएँ भी अब अपने मन को कोस रही थीं कि क्यों वे हीरामन से नाराज हुई? उसने हमारी कितनी सेवा की थी।

पाँचवें दिन मुदित-वदन शुक लौटा। राजा ने हैरानी से पूछा "क्यों इतने दिन कहाँ रहे?"

शुक ने उत्तर दिया, "मृत्यु-लोक में?"

अप्सराओं के कान खड़े हो गए।

'वहाँ क्यों गए थे?

आपके लिए कुछ नया लाने के लिए।'

"क्या लाए?"

"महाराज मृत्युलोक की दशा अच्छी नहीं है। वहाँ धर्म की जगह 'वादों' का बोलबाला है। साम्यवाद समाजवाद पूँजीवाद गाँधीवाद

छायावाद प्रगतिवाद, प्रयोगवाद हालावाद, पत्नीवाद और न जाने क्या-क्या वाद ? पर मैं आपको वहाँ की एक कथा सुनाऊँगा। यह कथा पूँजीवादी में प्रेम के नए रूप का प्रतिनिधित्व करती है। नई टैकनिकमें लिखी गई है इसी कि व्याख्या में टैकनिक का मतलब नहीं समझता।

युवक बोला—"सुन राजा कहानी इस तरह प्रारम्भ होती है—
कथानक भँवर जाल

एक लड़का है 'क' उसकी पत्नी है 'ख'। 'ख' की एक सहेली है मिस 'ग'। अवसर पाकर 'ग' 'क' को अपने प्रेम-पाश में फँसा लेती है। क गरीबी से तंग है उनका प्रेम प्लेटोनिक नहीं इस मिट्टी में पला प्यार है। दोनों अपने अपने घरों से बहाने बना कर आजाते हैं और तृप्त होते हैं। कभी-कभी विपुल विलास के सागर में आकंठ डूबा 'क' अचानक पूछता है— 'किधर हमारे प्रेम का परिणाम ?' 'ग' उत्तर देती है "तुम बड़े कायर हो कल की आज चिन्ता करते हो !"

पहला घुमाव असली कहानी —

मदन के हाथ काँप रहे थे जैसे उसके दोनों हाथों को लकवा मार गया हो। उसने बड़ी मुश्किल से अपनी दिल्ली निवासिनी पत्नी चन्दा की चिट्ठी खोली और वह उसे दुबारा पढ़ने लगा—

'पूज्यदेव ! आप का पत्र मिला। ज्वर बहुत तेज है। ऐसा महसूस होता है कि अचानक ताप से मेरा तमाम शरीर झुलस जायेगा। झुलस जाने दो इस पीड़ा से मृत्यु बहुत अच्छी है। मैं अपने हृदय में कोमल भावनाएँ और अधूरी अभिलाषायें लिए मर जाना पसन्द करूँगी यदि आप जीवन-दीप बुझने के पूर्व अपना दर्शन मुझे दे दें तो ? आपका गुलाब-सा चेहरा आज रह रह कर मेरे आगे घूम रहा है। मोह के बन्धन टूटने के लिए कसमसा रहे हैं। विचित्र अनुभूति अन्तर में है जिस में वर्णन नहीं कर सकती। फिर भी आपसे प्रार्थना है कि पत्र पढ़ते ही आप दिल्ली रवाना हो जाइए। आपकी देर यहाँ अँधेरा कर देगी।

आपकी अपनी-चन्दा'

स्वप्न किंकर्तव्य विमूढ़-सा खड़ा रहा। उसके आगे चन्दा का कृशकाय रुग्ण और पाण्डुर मुख नाच उठा। चन्दा की कोटरगामिनी आँखों में जीवन और मृत्यु का करुणा-प्लावित संघर्ष। दुष्कल्पनाओं ने उसे बाचाल बना दिया। ललाट पर स्वेद-कण उभर आए।

रूमाल से अपने पसीने पोंछकर वह कुर्सी पर बैठ गया। चिट्ठी को सीने पर रख कर अपने आप को आश्वस्त करता हुआ बोला—कैसी है यह अनहोनी? कल तक तो बिलकुल स्वस्थ और आज मरणासन्न। आश्चर्य? उसके विचारों ने उसे बाध्य किया यह सब भाग्य के खेल हैं।

अप्रत्याशित उसकी दृष्टि चिट्ठी के दूसरे भाग गई। उसने जल्दी से पढ़ा। नैनों में ज्योति चमक उठी। अधरों पर आशा भरी मुस्कान नाच गई। लता ने मोतियों जैसे शब्दों में लिखा था—"स्वप्नजी इसे पढ़ कर घबराने की जरूरत नहीं। यह तो आपकी कथा 'मुक्ति का आह्वान' का एक अंश है। वह कहानी मुझे बहुत प्रिय लगी। आप नारी के अन्तर में कितना पैठ कर लिखते हैं। प्रसन्न हूँ पत्र लिख। शुभ

—स्नेहलता

स्वप्न के होठों पर भेदभरी मुस्कान नाच उठी। उसने खत को फिर चूम लिया।

सिरा घुमाव की मकड़ियाँ—

आँखों में आश्चर्य भर कर स्नेहलता ने पूछा "देखो चन्दा इन मकड़ियों ने कैसे सुन्दर जाल बुना है।

घनिष्ट सहेलियाँ चन्दा और स्नेहलता के देखते-देखते दो मकड़ियों ने एक अत्यन्त कलात्मक जाल बुन दिया था।

चन्दा अपनी गंभीर दृष्टि को लता पर गाड़ती हुई बोली 'प्रेम और संगठन का यही फल होता है। उसने लता के गाल पर अपनी तर्जनी से हल्की चोट की और मुस्कुराई 'देखि तुम्हारा असीम स्नेह मुझ पर नहीं होता तो इस बचपन में मरी कौन देख भाल करता? तुम्हारे प्यार ने मुझे नया जीवन दिया है। मैं तुम्हारा किस मुँह से शुक्रिया

मदद करूँ ?"

"छिः पगली इसमें शुक्रिया अदा करने की क्या बात है ? तुम तो मेरी छोटी बहिन-सी हो ।

तभी चन्दा की दृष्टि उस जाले की ओर गई । जाले पर कोई तीसरी मकड़ी नाच रही थी। चन्दा ने उसे संकेत करके पूछा "यह तीसरी मकड़ी कौन है ?

लता कृत्रिम गुस्से से बोली "मैं इन मकड़ियों के खानदान को नहीं जानती ।

चन्दा तीसरी मोटी मकड़ी को देखती रही । पहले की बड़ी मकड़ी ने मोटी मकड़ी का स्वागत किया । चन्दा ने उछलकर कहा "यह तीसरी सी मकड़ी ही है और ये पहले वाले जरूर मियाँ-बीबी होंगे ।"

लता चौंक पड़ी । 'मियाँ-बीबी ?

और देखते-देखते बड़ी ने सारा जाला तोड़ दिया क्योंकि आगन्तुक मकड़ी से उसका पति प्यार करने लगा । बड़ी मकड़ी अपनी उपेक्षा सह नहीं सकी । दोनों में द्वन्द्व-युद्ध प्रारम्भ हो गया । जाल टूट गया । खेल खत्म हो गया ।

लता बोली "प्यार में स्वतन्त्रता होनी चाहिये ।

चंदा उसे अर्थ भरी दृष्टि से देखती रही ।

मकड़ा कर्नल और मूँछें—

इंगलैंड रिटर्न्ड कर्नल चाचा अपनी मूँछों पर ताव देते हुए लता के कमरे में घुसे । लता अपने "मास्क" आँखों में कॉपी कर रही थी। अपने स्लीव डॉमस्टमस-से चेहरे पर पाउडर लगाकर उसने एक बार अपने रूप को स्वयं निहारा । उसके अधरों पर मन्द स्मित रेखाएँ नाचीं

"हलो लता !" कर्नल चाचा उसके समीप आये । उन्होंने अपने हाथ की अंगुलियों को उसके बालों में उलझा कर बोले, "बेबी यह देखो तुमने आखिर इसे मार ही दिया ।"

शीशे में मरी मकड़ी का प्रतिबिम्ब देखकर लता एक बार सिहर

पड़ी। हठात चाचा की ओर उन्मुख होकर बोली "आप बड़े अजीब हैं अंकल। इस प्रकार किसी को नहीं मारना चाहिये।"

"क्यों, तुम नहीं जानती लता यह कम्बख्त मेरी मूँछों पर नाच रहा था। मूँछों पर कर्नल की मूँछों पर और वह भी तुम्हारी 'आंटी' के सामने। उसने हमारा बड़ा मजाक बनाया। कहने लगी देखा यह छोटा-सा मकड़ा भी आपकी मूँछों पर नाचता है ? मैं उसके व्यग्य को समझ गया और क्रोध में आकर इसे मकड़े-लोक भेज दिया। लता ! यह एक कर्नल की मूँछ है। मेरी मूँछों से खेलने वालों को मैं गोली नहीं मार दूँगा ? शूट नहीं कर दूँगा ? एक नहीं पूरी पाँच गोली मारता। मेरी मूँछें डार्लिंग ! यह मेरी मूँछें हैं कर्नल्स रिस्पेक्ट।

कर्नल बहुत उत्तेजित हो गये।

लता भयभीत-सी अपने अंकल को देखने लगी। अंकल ने जोर से अट्टहास करके कहा "डर रही हो डार्लिंग ! मत डरो यह तो मकड़ा है, मकड़ा भी इस फेंक आता हूँ।"

कर्नल ने मकोड़े को दरवाजे से बाहर फेंक दिया।

वापस आकर वे बोले, "पाँच बज रहा है लता चन्दा आज वापस राजस्थान जा रही है। क्या वह अपने पति से नहीं मिलेगी।"

"नहीं उसकी छुट्टियाँ समाप्त हो गई ?"

"ओह अच्छा !" कर्नल चाचा चले गये।

लता के मस्तिष्क में ये शब्द गूँजते रहे—कर्नल मूँछें, मकड़ा गोली और पाँच गोली।

वह पसीने से तरबतर हो गई। उसका 'मेकअप' खराब हो गया। तरबूज चाकू और प्लैटोनिक लव —

चन्दा के जाने के बाद लता अपने को कुछ दुर्बल समझने लगी। स्वरूप के पत्र बराबर आ रहे थे। वे प्रेम-पत्र उसे व्यग्र व अधीर कर रहे थे। आज भी एक पत्र आया था। स्वरूप ने लिखा था—लता मुझे

मिलकर मेरी आत्मा अलौकिक आनन्द का अनुभव करेगी। तुमना बताओ यहाँ कब और कैसे मिला जाये ?

अपने आधुनिक कमरे की आरामदेह मखमली शय्या पर पड़ी-पड़ी लता करवटें बदल रही थी। बार-बार वह अपना मुँह तकिये में छिपा लेती थी। उसके समीप एक मासिक-पत्र पड़ा था। उसमें लता की एक कहानी धारावाही छपी थी। यह कहानी स्वरूप ने संशोधित करके प्रकाशित कराई थी। कहानी में एक विधवा का चित्रण था। प्रेम का विवेचन था। प्रेम ही लता भी स्वरूप से प्रेम करने लगी है। वह एक बार उस पुरुष को अवश्य देखेगी जो इतने प्यारे पत्र लिखा करता है।

"मिस साहिबा-यह तरबूज !" नौकर ने उसका ध्यान भंग किया।

'रख दो।' लता ने कहा और नौकर चला गया।

लता भारी मन लिए उठी। देखा कि नौकर तरबूज की फाँकों के साथ चाकू भी रख गया है। क्षण भर के लिए उसका पारा गर्म हो गया कि यह कैसा गधा है कि जरा भी तमीज नहीं। मैं चाचा से कहकर इसे 'डिसमिस' करवा दूँगी। अचानक वह शान्त हो गई। उसे स्वरूप के शब्द याद हो आए— "कोमल-हृदय नवनीत-सा कोमल और करुणा का अवतार होता है। वह सागर-सा गम्भीर और हिमाचल-सा शीतल होता है। उसे बहकने मत दो लिये।" वह निश्चल हो गई। संभवत् वह चाकू से काटी हुई बड़ी फाँकों को छोटे टुकड़ों में परिवर्तन करने लगी। काट कर वह उन्हें एक-एक करके खाने लगी। विचारों की तन्मयता के कारण उसके हाथ का तरबूज गिरकर चाकू पर आ गिरा। टुकड़ा फिर कट गया।

वह बड़बड़ा उठी—"चाकू तरबूज पर गिरे तो तरबूज कटे" तरबूज चाकू पर गिरे तो तरबूज कटे" । पर बीज" बीज अब भी कायम है। बीज कभी नहीं कटता।" लता चुप और गम्भीर। कुछ देर बाद वह उदास कर बोली "बीज कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होता, आत्मा कभी नहीं मरती। आत्मा आत्मिक प्रेम" ? मैं स्वरूप

वे आत्मिक प्रेम करेंगी। आत्मिक प्यार ···महान् प्रेम! आश्चर्यमय! लता के मन में आत्मिक प्रेम की किरणें विकीर्ण होकर प्रकाश-पुंज में परिणत हो गईं।

उसने स्वरूप को तुरन्त पत्र लिखा—"तुम अमुक दिन, अमुक गाड़ी से आ जाओ।

प्रथम ग्रासे मक्षिका पात —

स्वरूप दिल्ली रवाना हुआ। दिल्ली स्टेशन पर लता आकुलता से स्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थी। बार-बार वह अपने हैंड-बैग से स्वरूप का चित्र निकाल कर देख रही थी।

गाड़ी आई।

लता ने देखा एक अत्यन्त खूबसूरत नौजवान की गहरे-नीले चश्मे के शीशों में झांकती आँखें किसी को खोज रही हैं। वह धीरे-धीरे उत्कण्ठित दृष्टि से चारों ओर देखती उसके समीप गई। पीछे से अनजान बन कर अपने मृदुल स्वर में पुकारा—"स्वरूप!"

स्वरूप तुरन्त लता की ओर घूमा। उसके मुँह से चलचित्र के हीरो की भाँति टूटते शब्द निकले "हि अरे 'लता'! वह उसे देखता रहा—अपलक और निरन्तर।

"चलिए" चलिए!

कुली ने सामान उठाया। वे दोनों साथ-साथ चले।

"हलो लता! तुम कहाँ?" 'चंचल' कहीं से कबाब में हड्डी की तरह आ टपके।

वह घबरा गई। बोली "ओह! साहिल जी तो मजे में हैं। आप चिट्ठी लिखें तो मेरा भी नमस्ते कह दीजिएगा।"

स्वरूप हैरान परेशान और विमूढ़।

"चलिए चाचा जी।" लता चली गई। स्वरूप तुरन्त सब समझ गया। नाटक विशेष के प्रयोग पर हीरोइन का सफल अभिनय। लता चाचा कौशिक की तिथी दिखा कर लौट आई। घबराई हुई आकर

मिलकर मेरी आत्मा अलौकिक आनन्द का अनुभव करेगी। तुम्हीं बताओ कहाँ चल और कैसे मिला जाये ?

अपने आधुनिक कमरे की आरामदेह मखमली शय्या पर पड़ी-पड़ी लता करवटें बदल रही थी। बार-बार वह अपना मुँह तकिये में छिपा लेती थी। उसके समीप एक मासिक-पत्र पड़ा था। उसमें लता की एक कहानी 'अंगारे' छपी थी। वह कहानी स्वरूप ने संशोधित करके प्रकाशित कराई थी। कहानी में एक विधवा का चित्रण था। प्रेम का विवेचन था। प्रेम ही लता भी स्वरूप से प्रेम करने लगी है। वह एक बार उस पुरुष को ममता देवी को इतने प्यारे पत्र लिखा करता है।

"मिस साहिबा-यह तरबूज !" नौकर ने उसका ध्यान भंग किया।

"रख दो।" लता ने कहा और नौकर चला गया।

लता भारी मन लिए उठी। देखा कि नौकर तरबूज की फाँकों के साथ चाकू भी रख गया है। क्षण भर के लिए उसका पारा गर्म हो गया कि यह कैसा पागल है कि जरा भी तमीज नहीं। मैं ज्ञाता से कहकर इसे 'डिसमिस' करवा दूँगी। अचानक वह शान्त हो गई। उसे स्वरूप के शब्द याद हो आए— लेखक-हृदय नवनीत-सा कोमल और करुणा का अवतार होता है। वह सागर-सा गम्भीर और हिमाचल-सा शीतल होता है। उसे बहकने मत दो लिये।" वह निश्चल हो गई। यंत्रवत् वह चाकू से काटी हुई बड़ी फाँकों को छोटे टुकड़ों में परिवर्तित करने लगी। काट कर वह उन्हें एक-एक करके खाने लगी। विचारों की तन्मयता के कारण उसके हाथ का तरबूज फिसलकर चाकू पर आ गिरा। टुकड़ा फिर कट गया।

वह बड़बड़ा उठी—"चाकू तरबूज पर गिरे तो तरबूज कटे तरबूज चाकू पर गिरे तो तरबूज कटे" ...। पर बीज ... "बीज अब भी कायम है। बीज कभी नहीं कटता। लता चुप और गम्भीर। कुछ देर बाद वह उठ कर बोली "बीज कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होता आत्मा कभी नहीं मरती। आत्मा आत्मिक प्रेम" ? मैं स्वरूप

से आत्मिक प्रेम करेगी। आत्मिक प्यार ···महान् प्रेम! आदर्शमय! लता के मन में आत्मिक प्रेम की किरणें विकीर्ण होकर प्रकाश-पुंज में परिणत हो गईं।

उसने स्वरूप को तुरन्त पत्र लिखा—"तुम अमुक दिन अमुक गाड़ी से आ जाओ।"

प्रथम ग्रासे मक्षिका पात —

स्वरूप दिल्ली रवाना हुआ। दिल्ली स्टेशन पर लता आकुलता से स्वरूप की प्रतीक्षा कर रही थी। बार-बार वह अपने हैंड-बैग से स्वरूप का चित्र निकाल कर देख रही थी।

गाड़ी आई।

लता ने देखा, एक अत्यन्त खूबसूरत नौजवान की गहरे-नील चश्मे के शीशों में झाँकती आँखें किसी को खोज रही हैं। वह धीरे-धीरे सशंकित दृष्टि से चारों ओर देखती उसके समीप गई। पीछे से अनजान बन कर अपने मृदुल स्वर में पुकारा—"स्वरूप!"

स्वरूप तुरन्त लता की ओर घूमा। उसके मुँह से चलचित्र के हीरो की भाँति टूटते शब्द निकले "डि यर लता!" वह उसे देखता रहा—अपलक और निरन्तर।

"चलिए चलिए!"

कुली ने सामान उठाया। वे दोनों साथ-साथ चले।

'हलो लता! तुम कहाँ?" 'मंजुल' कहीं से कबाब में हड्डी की तरह आ टपके।

वह घबरा गई। बोली "ओह बहिन जी तो मजे में हैं। आप चिट्ठी लिखें तो मेरा भी नमस्ते कह दीजिएगा।"

स्वरूप हैरान परेशान और विमूढ़।

"चलिए चाचा जी।" लता चली गई। स्वरूप तुरन्त सब समझ गया। नाटक विलेन के प्रवेश पर हीरोइन का सफल अभिनय। लता चाचा कौशिक की तिल्ली' दिखा कर लौट आई। घबराई हुई आकर

बोली 'गजब हो जाता स्वरूप यदि बाबा तुम्हें पहचान लेते तो बड़ा अनर्थ हो जाता । बड़े ओर्थोडॉक्स हैं । विलायत से क्या लौट आए अब उन्हें कुत्ता भी विलायती ही पसन्द है । चलो अब जल्दी करो ।

टैक्सी में बैठे । टैक्सी चली ।

स्वरूप लता के अद्भुत सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया ।

अजीब लड़की से भेंट —

'ऐसा हमें कोई नहीं मिला जिससे हम प्रेम कर सकें ।"

"बुजुर्ग कहते हैं, खोजने पर तो प्रभु भी मिल सकते हैं ।"

"मुझे तो नहीं मिला ।"

'ऐसा न कहिए, इस शस्य-श्यामला भूमि पर एक-एक-से विशाल दिल लिये बैठे हैं ।"

"मुझे कोई पसन्द नहीं आया । जो पसन्द आए, वे पहले से ही 'एंगेज्ड' हैं । वे अपने प्यार में फेल नहीं सकते ।"

प्रभात का समय ।

स्वरूप लता की एक नेपालिन सहेली से वार्तालाप कर रहा था । वह नेपाल के एक उच्च घराने से सम्बन्धित थी । सलोनी थी मजेदार थी जुड़े सिखलाती थी । स्वरूप से खूब घुलमिल गई थी । लता ने भी स्वरूप को कहा था कि यह नेपालिन ही हमारे सभी व्यापारों को जानती है ।

यहाँ लता सवेरे नौ बजे आती और शाम को छः बजे तक लौटती थी । इस बीच वे रोमांस को लेकर मधुर कल्पनाओं के विमान उड़ा करते थे । धरती पर खड़े होकर चाँद-सितारों और प्रकृति के नजारों में अपने आत्मिक प्यार की पवित्रता के दर्शन करते थे ।

सात दिन बीत गये ।

इन सात दिनों में अतृप्ति का मारा स्वरूप क्षण-भर भी सो नहीं सका । वह बेचैन हो उठा । वह इस शर्त पर लता के साथ कदापि नहीं रह सकता ।

आठवें दिन नेपालिन लड़की ने उसकी मानसिक स्थिति को देख कर कहा, "स्वरूप जी ! आप व्यर्थ सिर का दर्द खरीद रहे हैं। रेगिस्तान में गुलाब की उम्मीद करना निरी मूर्खता है।

स्वरूप विस्मित हो गया।

मगरमच्छ की तस्वीर —

कर्नल के कमरे में एक बड़ी मगरमच्छ की तस्वीर थी। यह तस्वीर कर्नल अपनी अंग्रेज पत्नी 'ग्रेटीएल' के कहने पर उसे विलायत से खरीद कर लाया था। आज कर्नल की बीवी को न मालूम क्यों क्रोध आ गया कि उसने मगरमच्छ की तस्वीर को गोली मार दी।

गोली की आवाज सुनकर लता दौड़ी-दौड़ी आई "क्या हुआ आंटी?"

वह आवेश में बोली— "गोली मार दी तुम्हारे अंकल नहीं-नहीं इस मगरमच्छ को।"

"क्यों ?" लता समझ गई—आंटी के मस्तक की घृणा को।

"बड़ा खतरनाक है। यह मुझे खा गया। मेरी जवानी को खा गया। गालों की लाली और आँखों की चमक को खा गया। अब दूसरे पर ताक लगाये बैठा है। जालिम धूर्त, धोखेबाज !" आंटी का सारा बदन कांप रहा था।

"डार्लिंग मुझे मत रोको मैं इसे एक गोली और मारूंगी।" आंटी ने विनीत स्वर में कहा।

"पागल हो गई हो आंटी ! यह तस्वीर है, मगरमच्छ की एक खूबसूरत तस्वीर !" लता ने समझाया।

"खूबसूरत !" आंटी व्यथा से अभिभूत होकर बड़बड़ाई "यह मगर खूबसूरती को इस प्रकार बरबाद करता है, जिस प्रकार दीमक लकड़ी को। इसने मेरे साथ धोखा किया। मैं इसे मारूँगी जरूर मारूँगी कह कर वह कमरे से बाहर चली गई।

लता ने मन-ही-मन कहा, "बेवकूफ औरत !"

प्लेटोनिक लव की हत्या —

स्वरूप !

मधुर प्रेम के आत्मिक अलौकिक आनन्द की तड़पती सिहरन में यदि तुम्हें जीवन भर जलना स्वीकार नहीं है तो मैं उस आत्मिक प्रेम की हत्या करने को तैयार हूँ। स्वरूप तुम मेरे भावी सुहाग स्वप्न हो अभिन्न हो सर्वस्व हो। आज मैं बहुत बेचैन हूँ, इतनी बेचैन जितनी 'रोमियो' के लिए 'जूलियट'। लेकिन मेरे पापा बड़े ऑर्थोडाक्स हैं अतः हमारा *मिलन संसार से दूर एकान्त में !* पत्र पढ़ते ही तुरन्त आ जाओ। —लता

स्वरूप और लता का महामिलन हुआ। इधर-उधर, प्रकृति की सुरम्य गोद में पर्वत की शीतल छाया में, यहाँ-वहाँ और कहाँ-कहाँ।

इस दिन के बाद फिर वियोग हो गया। अत्यन्त पीड़ा-जनक और असह्य।

अन्त समय लता ने कहा था "पत्र बराबर लिखना, 'प्रिय लता' करके सम्बोधित करना और 'तुम्हारी अपनी अम्मा' कहकर समाप्त करना। 'मंकस समझेंगे' उस अम्मा का है।"

महिवाल की दशा में —

'सोनी' के प्रेम में अपना अस्तित्व विलीन करने वाला महिवाल 'चिनाब' के किनारे अपनी प्रेमिका की याद में इतना तन्मय और बेसुध हो गया था कि उसे यह भी पता नहीं चला कि वह कहाँ और किस हाल में है ? सुनते हैं कि एक बार सोनी ने आने में देर करदी तो उसने अपने हाथ के चाकू से अपनी जाँघ को चीर डाला। प्रेम की इस चरम सीमा पर किस पत्थर-दिल इन्सान का दिल नहीं पिघलेगा ?

स्वरूप पर भी यही तन्मयता व्याप्त थी। वह दफ्तर का कार्य करते करते 'लता-लता' लिखने लग गया था। लता के साथ कविताएँ भी प्रारम्भ हुईं। परिणाम यह निकला कि प्रेम रस-हीन मालिक ने उसे डाँट दिया।

फिर क्या था ?

उसने तुरन्त इस्तीफा लिख कर दे दिया—"मैं किसी का ऐसा गुलाम नहीं हूँ जो फिड़कियाँ सुनूँ। आप अपनी नौकरी सँभालिए।"

उसी दिन उसने लता को अपनी स्थिति से अवगत कर दिया।

चौथे दिन लता द्वारा भेजा गया दो सौ रुपए का मनिऑर्डर आया। नीचे लिखा था—'तुम हो तो सब कुछ है तुम नहीं तो कुछ नहीं।

स्वरूप अहम् से बहक उठा 'ऐसी नौकरियाँ लता कितनी ही खरीद सकती है। इसलेक्ड रिटायर्ड कर्नल जमींदार मि० भट्टाचार्य की भतीजी है वह! इकलौती भतीजी!

कुछ खबरी :—

लता की चिट्ठी आई थी। उसने लिखा था—'स्वरूप! हमारे तुम्हारे मिलन पर जो नया बीज पनपा उसे मैंने डॉक्टर चन्दानी की सहायता से बड़ी आसानी से नष्ट कर दिया है। यह तुम्हारे लिए कुछ खबरी है क्योंकि यदि 'अंकल' को इस भेद का पता चल जाता तो वे तुम्हें गोली से मार देते क्योंकि आजकल वे बूढ़ा भी विलायती ही पसन्द करते हैं।

तुमने लिखा कि हम विवाह कर लें? यह सम्भव नहीं है? फिर विवाह कोई जरूरी नहीं। चन्द्रा बुरी लड़की नहीं इस पर वह मेरी सखी है। फिर कर्नल चाचा और गोली।

दो सौ रुपए भेज रही हूँ। जरूरत हो तो फिर मँगा लेना लेकिन अभी दिल्ली मत आना।

तुम्हारी—लता

केशों की महक जीवन का सौन्दर्य —

स्वरूप का पारा गर्म हो गया। इस प्रकार वह उसे विवाह से क्यों टाल रही है? याद में चन्द्रा आज आएगी। भारतीय स्त्रियों की भाँति उसे अन्त में समझौते का ही सहारा लेना पड़ेगा। वह आज दिल्ली जरूर

जायेगा। लता से कहेगा कि यदि वह उसे सच्चा प्यार करती है तो क्यों नहीं इन झूठे बन्धनों को तोड़कर मुक्त हो जाती।

"मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकता। मेरे दिल की हर धड़कन में तुम बस गई हो। तुम्हारे सिलवाए काले नाग केशों की महक ही मेरे जीवन का माधुर्य और सौन्दर्य है।" वह बेचैनी में अपने आप से कह रहा था—"मैं किसी भी अवरोध को सहन नहीं कर सकता। मजनू की भाँति 'लैला' को किसी भी सूरत में हासिल करूँगा—मर कर भी या जीकर भी।"

वह दिल्ली रवाना हो गया।

अंत चिड़िया उड़ गई—

बेचारा 'क' हजारों उम्मीदें लेकर दिल्ली पहुँचा। उसे उस नेपालिन लड़की से पता चला कि 'ग' तो आज विलायत जा रही है। 'क' भागता-सा एरोड्रम पहुँचा। उसका रोम रोम पुकार रहा था। लेकिन सबसे पहले वहाँ उसे 'ख' दिखलाई पड़ी। वह सुन्न हो गया। 'क' ने कहा, "यहाँ कैसे आ गई?" 'ख' ने अपने पति को प्रसन्नता से अपने आलिंगन में ले लिया।

तभी 'ग' वहाँ आ पहुँची। मुस्करा कर बोली, 'जरा जल्द करो भाई, इंगलैण्ड तो मैं जा रही हूँ।

'ख' के नेत्र झुक गए।

'ग' स्नेहसिक्त स्वर में बोली "डियर ख' इस महान् लेखक श्रीमान् 'क' को प्यार से रखना और मिस्टर 'क' आप भी हमारी 'ख' को पलकों की पुतली बना कर रखियेगा। यह हमारी सबसे प्रिय सहेली है। अब लौटने पर ही भेंट होगी। अच्छा फेयर-वेल, टा-टा।"

प्लेन उड़ा।

'ख' ने बाद में कहा—'ग' कितनी अच्छी सहेली है। मुझे अपनी विदाई पर तार देकर बुलवाया भगवान उसे जीवन में सफल करे।

'क' 'ख' के शब्दों को नहीं सुन सका। वह क्रोध, प्रतिहिंसा विष

घृणा और वेदना से तिलमिला रहा था। व्योम आकाश में पंख फैलाए पंछी की तरह उड़ रहा था।

गुरु ने पूछा—"बताइए महाराज यह कहानी आपको कैसी लगी?

बीच में ही अप्सराएँ बोल उठीं— 'बहुत सुन्दर ! बिल्कुल नई ! क्या इस प्रकार पुरुषों को उल्लू बनाकर औरतें मस्त रह सकती हैं। तब तो पु बीवारी युग में हमें भी जाना चाहिए।

राजा अधिकार-पूर्ण स्वर में बोला—"लेकिन मैं तुम सब को वहां जाने की आज्ञा नहीं दे सकता। क्यों गुरु इसका अंत तो बुरा ही हुआ होगा ?"

गुरु ने कहा—"सत्य को जानने के लिए जिज्ञासु बन जाइए, देखिये, 'प' का परिणाम क्या होता है ?

कह कर गुरु उदास हो गया।



घूमता-घूमता फिर आया और अपने कानों को ओवरकोट से ढँकता हुआ बोला "तेरे घर नहीं है ?"

"घर !" उसने भूखी आँखों से सिपाही को घूरा, "यदि घर होता तो अपने बच्चे को इस तरह रोने देती। देखो न आवारा पिल्ले की तरह बिलबिला रहा है बेचारा।"

बीड़ी का जोर का कश खींचते हुए सिपाही बोला "तू खँडहर में क्यों नहीं चली जाती वहाँ सर्दी से बचने के लिए ओट तो है। उसने बीड़ी को झाड़ा "चल मैं तुम्हें खँडहर बता देता हूँ।" सिपाही थोड़ा आगे बढ़ा कि तारा कर्कश स्वर में चिल्लायी, "ओ नासपीटे, तेरी घर वाली नहीं है जो हर हँडिया में मुँह डालने की कोशिश कर रहा है। गड़बड़ करेगा तो बस देख ही लेना।"

सिपाही की बीड़ी समाप्त हो गयी थी। उसने अपने दोनों हाथ अपनी जेब में डाल लिये। खिसियानी हँसी हँस कर बोला "तेरा खसम कहाँ है ?"

वह बोले इसके पहले ही हवेली से मधुर स्वर सुनाई पड़ा—"आ जा रे-आ बालमवा—।"

"मेरा खसम किसी बामन के घर नशे में धुत हुआ पड़ा होगा और तेरी बीबी ?" उसने अपने उत्तर के साथ ही सवाल किया।

जलते अंगारे-सा प्रश्न सिपाही के कलेजे पर लगा। सिपाही अवाक् हो रहा। उसके न चाहते हुए भी अचानक ये शब्द निकल ही गये, "मेरी घर वाली ।" हठात् वह रुका और तमतमा कर बोला, "बदजात कहीं की, छाती को मार-मार कर—बस कोतवाली ।"

"अरे बाह, इतना जल्दी गर्म कैसे हो गया ? कोतवाली में जा कर क्या करेगा मेरा ?" तारा ने निडर हो कर कहा।

"छाती के ।"

सहसा हवेली में से एक-एक करके लोग निकलने लगे। सिपाही को चुप होना पड़ा। सभी लोग ऊँचे तबके के थे। कुछ औरतें भी थीं,

बीसवीं सदी की। बॉब हेयर और रंगबिरंगी, नयी तरह की पोशाक पहने। सारा उन्हें विस्मय-भरी दृष्टि से देख रही थी।

'सेठ!' एक पतली आवाज सारा के कानों में पड़ी।

सिपाही अपनी बीट पर अत्यन्त मुस्तैदी से चक्कर निकालने लगा। सारा की निगाहें उस ओर उठ गयीं नगर की प्रसिद्ध नर्तकी सेठ से कश्मीरी शाल माँग रही थी और सेठ उसे एक भक्त की तरह दोनों हाथ आगे बढ़ा कर दे रहा था।

नालदार बूटों की ओर की ठक।

सारा ने देखा सिपाही सेठ को सलाम कर रहा है और सेठ इतनी लापरवाही से एक रुपया उसकी ओर फेंक रहा है जैसे कोई गरीब शराबी चूसी हुई हड्डी को किसी कुत्ते को फेंकता है।

'बेशर्म कहीं के!' सारा ने मन-ही-मन कहा और उसी जगह में सिकुड़-सिमट कर सोने का प्रयास करने लगी।

चाँद कुहरे के कारण ढँक गया। बर्फीली हवा तेज हो गयी और थोड़ी-थोड़ी बरफ भी गिरने लगी। सिपाही ठंड से लड़ रहा था। बूट बीड़ी ओवरकोट वह बच्चा और सारा।

हवा रुक नहीं रही थी। उसका ढीठापन बढ़ता ही जा रहा था। सारा का दुबला-पतला जिस्म अपने बच्चे को जितनी गर्मी दे सकता था दे रहा था पर उसका शरीर स्वयं ठंडा हो रहा था वह उस ठंड की बरसात में स्वयं डूब गयी थी।

बच्चा चीखा—एक लम्बी चीख, एक टूटती सिकुड़ती छटपटाती चीख जो शायद जिन्दगी से दूर-दूर जा रही थी।

सन् सन् सन् सन्—हवा की आवाज।

ठक-ठक-ठक! नालदार बूटों की भयानक ध्वनि। बीड़ी का जहरीला धुआँ। मंत्रचालित-सी सारा उठी मंत्रचालित-सी मुड़ी और सिपाही के पास आ कर खड़ी हो गयी। सिपाही चौंक गया, शायद वह किसी और विचार में खोया हुआ था। बीड़ी की राख उसके हाथ से

छूट कर अन्धकार में लोटपोट होने लगी। सिपाही को सुनाई दिया "सिपाही जी, मेरे बच्चे को ओवरकोट से ढँक दीजिए, नहीं तो ठंड से अकड़ कर मर जाएगा बच्चा यह मेरे दिल का राजा है। सब कुछ है।

सनसनाती हवा रोने के स्वर में गूंज रही थी। रोती हुई हवा झनझना कर तारा के शब्दों को सिपाही के कान से दूर ले जाने की चेष्टा कर रही थी। सिपाही एक क्षण ठिठका फिर उसका सिपाहीपन जागा। कड़क कर बोला 'अच्छा अब मैं मालपीटे से 'सिपाही जी' हो गया चल साली यहाँ ओवर-वोवर कोट नहीं है।"

तारा तब भी नहीं हटी। उसका बच्चा और जोर से रोने लगा। ठंड बढ़ती ही जा रही थी।

"अरे दे दे न क्यों माल-पीटा हो रहा है मैं तो पगली हूँ, यूँ ही बक दिया करती हूँ। अच्छा, माफ कर। देख मेरा बच्चा ठंड से ।"
[illegible] कर तारा सिपाही के नजदीक आ गयी। अपने सूखे स्तन को असह्य पीड़ा को भूल कर, उसने एक बार फिर उसे अपने बच्चे के मुँह में डाल दिया। बच्चा जोंक की तरह इन्सान के जिस्म के लहू को चूसने लगा।

इन्सान की नसें पीड़ा से फटी जा रही थीं।

सिपाही की आँखों में वासना चहक उठी "इसका बाप कौन है?"

"इसका बाप !" तारा चौंकी।

"हाँ इसका बाप ?"—सिपाही जोर से बोला।

"कहीं पड़ा होगा नशे में चूर। बहुत आवारा है सिपाही जी!"

"सब एक शर्त पर मैं अपना ओवरकोट तुझे दे सकता हूँ।'

"शर्त कौन सी शर्त ?" वह उतावली हो कर बोली।

"मुझ से सट कर बैठना होगा।

"क्या कहा नामुरीदे, सट कर बैठना होगा।" वह अपने जिस्म की सारी पीड़ाएँ जैसे भूल गयी थी।

'जिससे ओवरकोट तेरे बच्चे को ठंड से बचा लेगा और तू मुझे।'

जानती नहीं, औरत का जिस्म आग की भट्ठी होता है।"

"बदमाश!"

"तू मेरी बात नहीं मानेगी तो तेरा बच्चा मर जाएगा।

बच्चा बच्चा बच्चा! सारा पराजित हो गयी। उसके सामने बच्चे का तड़प-तड़प कर मरना साकार हो उठा। वह भावुक हो उठी। वह बलवती हो कर सोचने लगी "यह मरदुआ सिपाही ठहरा उजड्ड और हैवान कहीं, क्या कर लेगा यह?" उसकी विचारधारा बदली, अपनी नीयत को खोटी करेगा तो मैं इसे कच्चा ही चबा जाऊँगी। मैं जब अपने खसम से नहीं डरती फिर भला इससे क्यों डरूँ? और वह बहादुरी के साथ बोली "आ नासपीटे बैठ जा मेरे पास।

सिपाही उससे सट कर बैठ गया "आज की रात कितनी अच्छी है!"

कलेजा गर्म हो गया?" सारा ने सिपाही का हाथ पकड़ कर कहा "देखो मैं माँ हूँ तू कहे तो तुझे अपने सीने से लगा लूँ मुझे कोई शर्म नहीं आती है। अरे, नासपीटे माँ को शर्म कैसी? और वह सिपाही को अपनी बाहों में कसने लगी।

सिपाही चुप रहा—अचल और निस्पंद।

पूस की रात बर्फीली ठंड सनसनाती हवा सिपाही को लगा जैसे उसके बाजू में शोले दहक रहे हैं और उसके समीप बैठी एक माँ की मजबूत होती बाहें तपी सलाखों-सी लग रही हैं। वह गर्म हो रहा है। आग असल आग। वह जैसे इस पवित्र आग से जल जाएगा।

वह हड़बड़ा कर उठा और बीड़ियाँ टटोलने लगा लेकिन बीड़ियाँ ओवरकोट में थीं जिसमें एक माँ का बच्चा लिपटा पड़ा था। वह पुनः गतिहीन-सा बैठ गया पर सारा के जिस्म की आग लपटें ।

जिस पावन विद्रोह की आग में बस कर सारा सिपाही से सट कर बैठी थी उससे सिपाही की देह क्या आत्मा ही झुलस गयी। वह सारा के समीप अधिक नहीं बैठ सका।

वह पुन: उठा और पीठ पर चमककर सिकासने लगा। भानसार फूलों की ठक ठक ठक पुन: गूँज उठी। और तारा कह रही थी, "मा, नासपीटे तुझे ठंड लग जाएगी मा मुझसे सटकर बैठ जा! अरे, देख, ठंड बढ़ रही है मा मा न! उसके स्वर में वात्सल्य था, अपूर्व वात्सल्य। पवित्र और अटूट स्नेह धारा! मुख पर तेज और निर्भयता।

पर्दा, मन और उड़ानें

सिनेमा हाल में अँधेरा हुआ।

पर्दे पर लांग शाट में किसी सुन्दरी का चेहरा दिखलाई पड़ा। मैं उसे गौर से देखने लगा। धीरे-धीरे लांग-शाट मिडियम-शाट में बदला और मिडियम क्लोज़ में बदल गया। मुख क्या था मानो चाँद का टुकड़ा। मन को बहुत रोकना चाहा पर वह रुका नहीं। सहमते-सहमते मौन भाषा में कह ही उठा "काश यह अभिनेत्री मेरी प्रेमिका होती। कितना मादक और आकर्षक सौंदर्य है इसका! पेरिस-संग्रहालय की स्फटिक की प्राचीन प्रतिमा "वीनस दे मिलो" की भाँति इसका बदन सुगठित और मांसल है। कालीदास वर्णित सौंदर्य की प्रतीक शकुन्तला सदृश। ओह कितना अच्छा होता यह मेरी होती और मैं इसका।

मन की पहली उड़ान के पंख कट गए। वह तितली-सी धरती के कठोर शिला-खंड पर आ गिरी। पर्दा जो अभी-अभी षोड़षी के यौवन के प्रकाश से प्रकाशित था, अब एक अत्यन्त भद्दी मोटी और कुरूप युवती की हँसी से गूँज रहा है। मज़े की बात यह है कि वह बेडौल शरीर वाली युवती अब अपने दुबले-पतले प्रेमी के समक्ष अपनी तुतली-वाणी में प्रेम प्रदर्शन कर रही है। वह दुबला-पतला प्रेमी इस डर से सशंक हुआ जा रहा है कि कहीं यह मेरी प्रेयसी मुझपर गिर गई तो मेरा कचूमर निकल जाएगा। वह मोटी युवती उस पर झुकती हुई फिल्मी-जगत के रटे रटाए शब्द बोल रही है—"मैं तुम पर जान देती हूँ मैं तेरी लता हूँ, मैं तेरे प्यार में कितनी दुबली हो गई हूँ।"—चूँकि वह तुतलाती थी इसलिए सारे दर्शक ठहाका लगा कर हँस रहे थे।

पर्दा और उस पर अंकित पात्रों का दृश्य।

लाँग शाट।

हीरो हीरोइन को बिछुड़ाने के लिए एक नए पात्र की सर्जना। इसलिए उस पगडण्डी पर बसंत की भाँति सम्भावित युवती एक गीत— "यह घूमती जवानी " गाती हुई मचलती आ रही है।

कैमरा आगे बढ़ता है।

क्लोज-अप शाट।

मुग्ध सुषमा से दीप्त मुख।

मन को उस मुख-दर्शन से शांति मिली। कल्पना के नए पंख आ गए। याद आया यह तो यमुना से बिल्कुल मिलती-जुलती है। जब मैं अठारह वर्ष का था और वह नदी पर नित्य सिर पर घड़ा लिए पानी भरने आती थी। मैं उसे देखता था और वह मुझे देखती थी। कितना अच्छा होता कि इस हीरोइन को रेशमी पोशाक पहना दी जाती और वह भी राजस्थानी। इस पर जयपुर की चूनरी। फिर यह, यह मेरी यमुना

उड़ान अतीत की विस्मृति-पलट पर मंडराने लगी—मेरा गाँव। वह उमड़ती हुई सरिता। किसी कली के समान यमुना अपने यौवन से भाराक्रान्त धीरे-धीरे कदम उठाती नदी की ओर आ रही है। उसके स्वर में गहरी मिठास और लोच है। वसुन्धरा का गीत अपनी बेटी के स्वर में घुल कर दिग्दिगंत को अपनी शाश्वत मधुरिमा से गुंजित कर रहा है।

"सावन आवड़ी मैने जावें सा भवर लग जाए,
म्हारी ओढ़णी लाली रे ढोला रंग चढ़ जाए।"

गीत मधुर और उत्कृष्ट गीत।

"ओ मजनू के बाप।" वही मोटी कामेडियन हीरोइन जोर से चीखी। मैंने सिटपिटा कर देखा। मिडियम शाट। पर्दे पर वही भद्दी हीरोइन।

इस बार उस मोटी हीरोइन ने अंग्रेजी पोशाक पहन रखी है। उस पोशाक में उसका स्थूल शरीर 'शंकर का कार्टून' सा लग रहा है। इस

पर जब वह अपने जूड़े झटका कर चलती है, बाप रे बाप ! मन भिन्ना उठा। विचारों में तूफान। मन अपने आप से कह उठा कि सेंसरवाले ऐसी क्यों पास कर देते हैं ? जरा भी स्वाभाविकता नहीं ऐसी घटनाओं में।

उदास से मन का बोझ लिया—"अपनी जमुना का बाप भी इतना ही मोटा था पर उसकी बुद्धि इस कामेडियन हीरोइन की तरह मोटी नहीं थी। वह हर अच्छी चीज का विरोध करता था। कहता था कि ऐसा करने से उसे बहुत सुख मिलता है।"

'चटाक' जोर की आवाज।

हीरो ने गाँव की लड़की बीनू का घड़ा फोड़ दिया है। बीनू गुस्से में भर उठी।

क्लोज-अप शाट।

"तूने मेरा घड़ा क्यों फोड़ा ?" बीनू कहती है।

"तूने मेरा दिल क्यों फोड़ा।"—हीरो उत्तर देता है।

दर्शकों में जोर की हँसी।

'जरूर इस कहानी का लेखक कोई सुखी होगा।"—मेरा मन झुँझला कर कह उठा— मैंने अपने जीवन के बीस वर्ष गाँव में गुजारे हैं पर इस प्रकार घड़ा फोड़ते मैंने आज तक नहीं देखा। ये फिल्म वाले भी विचित्र जीव हैं।

उदास मधुर हो गई।

मैं यदि फिल्म का लेखक होता तो घटना को इस तरह रखता कि गाँव की पगडण्डी पर एक साँप पड़ा है। हीरोइन घड़ा लिए आती है। वह आती में गुनगुना रही है। अचानक वह साँप को देखकर चौंक पड़ती है और घड़ा फूट जाता है। वह भयभीत हिरणी-सी भागती हुई चिल्ला रही है— 'साँप साँप साँप !

हीरो खिलखिलाकर हँस पड़ता है। हीरोइन उसे हँसते हुए देखकर बिल्कुल गुस्से में आ जाती है। क्रोध से उसका सौंदर्य और निखर आता है। एक कामी-सी लट उसके सुडौल कपोल पर आ जाती है। वह चीख ~

पटक कर कहती है—मुझे बचाता नहीं, दाँत निकाल रहा है। देख, साँप। हीरो निधड़क उस ओर बढ़ता है। चूँकि हीरोइन उससे सच्चा प्यार करती है, इसलिए वह उसे रोकती है। पर हीरो ऐसी बमारता हुआ साँप को हाथ में उठा लेता है। हीरोइन बेहोश हो जाती है। जब आँखें खोलती है तब वह साँप के टुकड़े-टुकड़े पाती है। ओह तूने साँप के टुकड़े कर दिये बड़े बहादुर हो। और वह जाकर साँप को देखती है। साँप कागज का है। वह गुस्से में ऐंठती हुई कहती है कि ला मेरे पड़े के पैसे। और हीरो मुस्कराकर कहता है कि इन पैसों के बदले तू मुझे क्यों नहीं ले लेती ? और विकेट

संगीत का प्रारम्भ। अंग्रेजी की कोई कच्च व सीधी धुन।

मैंने पर्दे पर देखा। उड़ान संगीत के आरोहण में अपना तारतम्य तोड़ उठी।

होटल का दृश्य।
घाट क्षण-क्षण में बदलते जा रहे हैं।
कोई नर्तकी अर्धनग्न-सी गा रही है।
"ओ मिस्टर जादी
कलकत्ता तुमसे पाँव लड़ा,
और बाम्बे होगा जारी।"

कुछ देर तक मन इस ऊटपटांग गीत पर विचारता रहा फिर उड़ान बढ़ी "यह गीत है या शब्दों की खिचड़ी! मैं होता तो कम से कम नीरज और वीरेन्द्र मिश्र का कविसम्मेलन में प्रसिद्ध हुआ गीत दे देता। वाह हिन्दी के ये कवि भी क्या खूब हैं? जब गाने लगते हैं तब श्रोता मस्त हो जाते हैं।

अचानक संगीत और तेज हुआ।

मैंने सुना है कि किसी कवि महाराज प्रयोगवादियों से सीधी टक्कर ले रहे हैं—

"मेरी मेरी छोरी का मजबूत है प्यार,

मैं तो हूँ इतवार, तू है सोमवार।"

मेरे समीप बैठे हुए एक महाशय ने अपने मित्र से पुलक कर कहा कि भाई क्या जोरदार गीत लिखा है और यह इसको भी गजब की गा रही है। यार अपने भी माने तो इसी गीत पर फिदा हो गए।

समीप का दर्शक दूसरे ही क्षण फुसफुसा उठा—"देख न यार।"

मेरा ध्यान भङ्ग हो गया।

हीरो हीरोइन को अपने आलिङ्गन में आबद्ध किए प्यार भरे स्वर में कह रहा है—"सितमगर, अधिक मत तड़पाओ मैं तुम्हारा हूँ और तुम्हारा ही रहूँगा '

अचानक अतीत की ओर पुनः सिंह-सी उठी—मैं और यमुना। खेतों की दोपहरी। बालों को चूमती हुई सौंधी-सौंधी हवाएँ।

यमुना और मेरा प्यार अपने चर्मोत्कर्ष पर था। तब वह एक दिन घबराकर बोली थी—"रामू, मेरे और तेरे प्यार का निबाह कैसे होगा? तू ठहरा ब्राह्मण और मैं ठहरी चौधराइन। और फिर बाप?"

मेरे पास कोई उचित उत्तर नहीं था। बचपन में नानी और दादी से कुछ प्रेम की कहानियाँ सुनी थीं। एक राजकुमार का एक राजकुमारी से प्यार हो गया। राजकुमार का बाप राजकुमारी को नहीं चाहता था इसलिए एक रात वे दोनों भाग गए।

मैंने भी उसे यही कहा— 'आओ यमुना हम दोनों भाग चलें।"

तभी पर्दे पर हीरो का मुँह हीरोइन के धीरे-से दूसरे की ओर बढ़ा।

मादक प्रेम-मय।

"हो-हो, हुर्रे-हुर्रे, सी-सी और सीटियाँ।"

हाल में हुल्लड़बाजी मच गई।

मैं मन मसोसकर रह गया क्योंकि गुस्सा मुझे इतना आया था कि मैं शिष्टाचार पर एक भाषण दे देता। पर ।

चुप्पी और बीर चुप्पी।

हीरो और हीरोइन अपना व्यापार कर रहे हैं।

पठान ने फिर करवट बदली।

मैं और यमुना।

यह ठीक उसी हीरोइन की तरह मेरे बाहुपाश में है। मैं भावातिरेक में कहता हूँ। कहता हूँ—"सितमगर इस तरह न तड़पाओ।" वह मुझ से विलग हो जाती है। कुछ नाराजगी से पूछती है— 'राजू यह सितमगर क्या होता है? अब तेरे की सारा मजा पुरजोर कर दिया। सीन का टेम्पो ही खत्म कर दिया। जब यह गाँव की छोरी सितमगर का मतलब समझ सकती है तब मेरी यमुना क्यों नहीं समझती।"

अचानक मुझे मेरी मूर्खता पर गुस्सा आया। अरे इन फिल्मों में तो सीता और राम भी निठुर बन बोलते हैं।

तभी एक पास बैठे बूढ़े ने उत्तेजित होकर कहा "अरे कमीन देख तो सही यह हूर तो हीरो को कह रही है कि बस अब मुझे अपने में समा ले, क्या गजब का पोज है? कमाल लाजवाब

बम्बई का कोलाहल पूर्ण जीवन। मनुष्यों का उमड़ता हुआ सैलाब। सर्किल के समूह से एक विराट का रूप। मुझे महसूस हुआ—

मैं सेंसर बोर्ड का अध्यक्ष हूँ। कल मैंने एक चित्र का शो देखा था। चित्र ऐतिहासिक था। किस इतिहास से लिया गया था पता ही नहीं लगता था। हाँ उस चित्र के दोनों निर्माताओं ने चित्र के शुरू और अंत में इतना बढ़कर लिख दिया था कि इस चित्र की कहानी किसी देश के इतिहास से सम्बन्धित नहीं है।

यह क्या बकवास है। उन्हें क्रोधित भरे स्वर में कहता हूँ। आप आपने इतिहास को ऐसे तोड़ा है और कल आप औरंगजेब को अकबर का बाप बता देंगे या प्रताप के बेटे से अकबर की बेटी का 'लव' करा देंगे और लिख देंगे कि यह कहानी काल्पनिक या ख्याली है। साहब, ऐसा करने से आप जनता का कल्याण थोड़े ही कर सकते हैं।

तभी भरभराकर कुर्सी टूट गई।

हाल में जोर की हँसी और एक दो बार सीटियाँ भी बजीं।

समीपवासों ने गीत गाया— "हो गई आधी रात अब घर जाने दे।"

मिडियम शाट चल रहा है।

हीरोइन हीरो से कल रात वापस आने का वायदा कर रही है।

मिड-शाट।

विलेन कह रहा है "तुम मेरे रास्ते से हट जाओ वरना अभी कागज के फूलों की तरह उड़ा दिए जाओगे।"

हीरो उसी तरह झपट कर कहता है— 'अरे जा! कहीं ऐसा न हो जाए कि लेने के देने पड़ जायें तू देश का दुश्मन है सरकार का अपराधी है डाके डलवाता है तूने बीनू को गायब कर दिया है। मैं तुझे यमलोक पहुंचा कर दम लूंगा।

"अच्छा!" विलेन आगे बढ़ता है।

फिर किंगकोंग और दारासिंह की सी कुश्ती।

मिडियम-शाट।

विलेन और हीरो की जबाजोरकशी अब भी चल रही है। कहाँ हट्टा-कट्टा विलेन और कहाँ साधारण हीरो! पर वाह रे हीरो। खूब ही हाथ बता रहा है। क्यों न बताता?

उबाल सवेरे की ओर बढ़ी।

चाय के समय बीबी ने मुझसे कहा था कि आज मैंने एक स्वप्न देखा कि आप भीमकाय देव से लड़ रहे हैं। मैं एक बार तो उसे देखकर डर गई पर बाद में आपने वह पैंतरा दिखाया कि वह चारों खाने चित।

"मारो मारा वाह भला मुक्का। दर्शक लोग जोश के मारे उछलने लगे। इस दशाभिमान पर है और देखते-देखते विलेन अपनी पावरर्दन पूजा करता कर चल पड़ता है।

अब मुझसे नहीं रहा गया। मैंने अपने पास पड़ोसी से धीमे से पूछा—"क्यों भाई क्या यह मजमून है?"

उसने सरसरी मेरी ओर देखकर कहा— "भाई साहब मैं केवल एंटरटेनमेंट के लिए पिक्चर देखता हूं। अच्छे-बुरे पर आप विचार कीजिए।

उसने पुनः मुँह फेर लिया ।

मेरे हृदय में उसकी इस बेरुखी का बड़ा आघात पहुँचा । यह एक तरह से मेरा डायरेक्ट अपमान था । और मैं पर्दे से हट कर फिर उड़ान भरने लगा कभी यह घोंघाबसन्त मेरे समीप बैठा व्यक्ति मेरे दफ्तर में आ गया तो मैं उसे धक्के मार कर निकाल दूँगा । बदतमीज शिष्टता से उत्तर ही नहीं दे सकता । और मैं पर्दे की रोशनी में उसे देखने लगा काला कलूटा मोटा भद्दा और गंजा । छिः छिः, कभी आने दो इसे दफ्तर में इस अपमान का गिन-गिनकर बदला लूँगा ।

मैं मन ही मन कुढ़ता रहा ।

दृश्य बदले जा रहे हैं ।

मैं काफी देर तक अपने आप में निमग्न रहा । अचानक हाल में पुनः हलचल मची । मैंने देखा विलेन लड़ रहे हैं । और जंगल का मल्ल । धूम-धड़ाक । फटाक-फटाक । ओ मारा अरे ! यह दुबला-पतला काले विलन भी क्या हाथ दिखा रहा है । कुछ चींटी-सा और हाथी से लड़ रहा है । आग लगे इन घनचक्कर निर्माताओं को ।

और अब हीरो की मदद को पुलिस आती है । और हीरो अपनी भोली भाली प्रेयसी रीनू को सीने से लगा लेता है ।

मेरे पीछे बैठी किसी औरत ने अपने पति से पूछा—"मुन्ने के बापू अब उस मेम साहब का क्या होगा जो उसे प्यार करती है ।"

'इसे ही तो फिल्मी कहानी कहते हैं कि अन्त तक यह पता न चले कि आगे क्या होने वाला है?

और फिल्मी हीरो रीनू को लिए प्रयाण गीत गाता हुआ शहर की ओर जा रहा है ।

शहरी प्रेयसी के बाप का बंगला ।

मेम साहब हीरोइन से भर्राए स्वर में कहती है—"रीनू तेरी कुरबानी भरी मुहब्बत ने बेदन (हीरो) को मुझसे छीन लिया ।"

"फिर भी तुम मेरे साथ सदा रहोगी—और अपनी बनकर रहोगी ।"

हीरो दृढ़ता से कहता है।

सस्पेंस। क्लोज अप शाट।

"कैसे ?"—मेम साहब अवाक रह जाती है।

पब्लिक स्तब्ध।

"बहिन हो कर।" —हीरो का हाथ अपने हाथ में ले लेता है। खेल खतम।

"सत्यानाश कर दिया सारी कहानी का। मन मेरा तड़प उठा कमाल है या चूं चूं का मुरब्बा और कुछ नहीं तो बहिन ही बना दी। वाह रे हिन्दुस्तान! कैसी-कैसी सूझें मिलती हैं तेरी धरती पर। और यह फिल्म का हीरो कैसे इतने आदमियों से लड़ पाया? मुझे ही देखो न एक जमींदार से न लड़ सका और मेरी यमुना मुझसे सदा के लिए छीन ली गई। और यह हीरो बकवास झूठ और बेहूदगी।

मैं झल्लाता हुआ बाहर आया। मुझे मेरे दफ्तर का साथी रमेश मिल गया। मुझे देखते ही उल्लसित होकर बोला—"क्यों रामू तुम भी पिक्चर देखने आये हो। लगता है कि तुमने सन् १० से २२ तक की बैलेंस शीटें निकाल ली हैं।

"मैं तो यार भूल ही गया। एक धक्का-सा मेरे हृदय पर लगा।

"कल पेश करनी है, साहब के सामने। उसने चेतावनी के स्वर में कहा। मुझे पसीना आ गया। थोड़ी देर पहले की विद्रोहात्मक विचार व मधुर स्वप्न थे वे सभी हवा हो गए।

और मैंने महसूस किया कि मेरी उड़ानों और मेरे विचारों पर महाशून्य का जाला परता जाता जा रहा है और मुझे केवल फ़ाइलों का ढेर, केवल एक-दो पाँच-पच्चीस सफ़्हों फ़ीगर्स दिखने लगे। परन्तु मन यमुना हीरो सुधार, आकांक्षाएँ कहाँ हैं? सत्य की भाँति वास्तव थे फ़ाइलें और वे फ़ीगर्स —

मन का पाप

मुमताज और शाहजहाँ के अमर प्यार के प्रतीक ताजमहल के सम्मुख खड़ा-खड़ा मैं विचार रहा था कि क्या मैं भी अपनी प्रेयसी की मधुर स्मृति में प्रीत का यह अनुपम महल बना पाऊँगा ? अन्तर क्या उत्तर देता जब आदमी अपनी औकात से आगे उड़ने लगता है तब उसका ज्ञान उसे रोकता है समझाता है कहता है—"पगले ! कल्पना के पंख आकाश को जरूर छूते हैं लेकिन धरती को नहीं।' फिर भी आदमी उड़ता है, उड़ता ही जाता है। मैं भी उड़ रहा हूँ। कल्पना के स्वर्णिम जाल में ममत्व मधुर वितान बुनता हुआ।

ताजमहल की बाहरी चाहरदीवार पर घूमती हुई किसी युवती की मधुर आवाज ने मेरा ध्यान भंग किया। वह युवती संगमरमर पर अंकित एक फूल को स्पर्श कर बता रही थी, "मुन्ना ! ये पत्तियाँ जीवित दिखलाती हैं न ?

"हाँ राधा ! इसका रंग हरा है।"

"बहुत कलात्मक है।

"जी।"

मैं उस युवती को देख रहा था। वह बहुत सुन्दर थी, बहुत रूपवती। कदाचित मेरे जीवन में ऐसा रूप पहली बार आया था। मैं उसे देखता रहा। मन कुलाँचें मारने लगा। कहाँ ताजमहल की कला और कहाँ उस वातावरण में उत्पन्न होनेवाली काल्पनिक प्रेयसी ? केवल वह युवती उसका रूप और इस उच्छृंखलता मन का पाप। आदमी की दुर्बलता और उसकी निर्बन्ध उड़ानें।

मैं सोच रहा था। मानस मेरे साथ बिना पूछे ही हो लिया। वह

कह रहा था "जब औरंगजेब ने शाहजहाँ को कैद कर लिया, तब शाहजहाँ आगरे के किले से दर्दभरी आँखों से हर रोज ताजमहल को देखा करता था। उसे दुख था कि पाक अल्लाह की औलाद इतनी नापाक क्यों ? आगे चलिए बाबूजी।"

गाइड चला। मैं दूसरे विचार में निमग्न उसके पीछे चलने लगा। मैं सोच रहा था "यह युवती कितनी सुन्दर है ? काश ! मैं ऐसी पत्नी पाता तब तब क्या मुमताज बेगम पर शाहजहाँ ने अपना प्रेम लुटाया ? मैं ताजमहल से भी अच्छी इसकी स्मृति में एक महल बनवाता।'

गाइड ने विनती स्वर में कहा "ये शाहजहाँ और मुमताज बेगम की नकली कब्रें हैं और असली ठीक इसके नीचे। चलिए, मैं आपको वहाँ ले चलूं।"

पर मेरी दृष्टि उस युवती पर जमी हुई थी जो मेरी ओर पीठ किए अपनी सहेली या बहिन सुधा से कह रही थी अब सुधा सम्राट औरंगजेब ने मुमताज के नामपर कलंक लगा दिया। वह कितनी कोमल और कितनी सरल थी ? युग बीत जाएँगे पर मुमताज हमेशा हमारे दिलों में ताजा रहेगी।"

"राधा ! शाहजहाँ भी उससे आत्मिक प्रेम करता था। उसने भी अपनी मुमताज की आत्मा की शांति के लिए दुबारा शादी नहीं की। वह वचन का पक्का था। तभी अन्तिम दिनों में वह केवल मुमताज को याद कर रोया करता था।

मैं एक बार उस अनुपम सुन्दरी को देखने के लिए उसके आगे से गुजरा लेकिन भाग्य की बात है कि वह तुरन्त दूसरी ओर मुड़ गई। मैं सिर्फ उसकी गर्दन का एक भाग ही देख पाया। मेरी दमित इच्छाएं कसक मसलने लगीं "प्रभु, यदि इस युवती ने मेरा ब्याह करा दे तो मैं जीवन भर उसे अपना आराध्य मान कर पूजता रहूँगा। पति और पत्नी के मधुर प्रेम का उदाहरण पेश कर सकूंगा।" इस राधा के इन्हें कारण मेरे मानस पर पवित्रता के चिन्ह छोड़ते हुए शाहजहाँ और मुमताज की असली कब्रों

की ओर बढ़ रहे थे। गाइड कहता जा रहा था "इन असली कब्रों के पास खड़े होने पर आदमी का दिल दर्द से भीग जाता है।"

अन्धकारपूर्ण रास्ता। जमादार हाथ में लालटेन लिए हमारे साथ चल रहा था। राजा ने सुधा का हाथ पकड़ रखा था। वह सुधा से पूछ रही थी "मैंने सुना था कि बरसात के दिनों में कुछ बूंदें इन कब्रों पर आकर पड़ती हैं? तुम जरा उन सुराखों को देखना।"

तभी गाइड बीच में ही बोल पड़ा "बाबूजी! यह बात हवाई है, कब्र पर बूंदें कहां से आती? पर यहां के आदमी बहुत भोले होते हैं। महान व्यक्तियों के बारे में विचित्र बातें गढ़ लेते हैं ताकि उनकी महानता कायम रहे।"

मैंने स्वप्न विष्ट आदमी की तरह 'हूँ' कहा और एक लम्बी सांस लेकर मन ही मन सोचा 'राजा से ब्याह हो जाने के बाद मैं अपनी सारी करुणा प्यार और अपनत्व उसपर उड़ेल दूंगा। कृष्ण की भांति उसे अपनी मुरली का शास्वत संगीत सुनाऊंगा। जीवन फूल की भांति खूबसूरत और धर्म की भांति अटूट व चिर-जगमगमय हो जाएगा। कितना मादक कितना रंगीन और कितना श्रेष्ठ?

तभी बीच में ही गाइड बोल उठा। उस समय मुझे उसका स्वर बड़ा अरुचिकर और कर्कश लगा। वह बोल रहा था "देखिए बाबूजी यह जो आप शीशे का टुकड़ा देख रहे हैं न, इसमें हीरा था उस हीरे के तेज प्रकाश से यहां सूरज-सा उजाला रहता था पर इन लुटेरे अंगरेजों ने उस हीरे को भी यहां से निकाल लिया और विलायत ले गए।"

सुधा बीच में ही बोल पड़ी, "बड़ा कीमती हीरा होगा, गाईडसाहब?"

"हां बहिन जी?" गाइड उत्साह से बोला "सुनते हैं कि वह लाखों का था। तब यहां दिन की तरह उजाला रहता था।" उसकी आखों में हल्का गर्व चमक उठा। अब मैंने भी अपना ध्यान वास्तु प्रसंग की ओर लगाया। केवल इस स्वार्थ से शायद यह प्रसंग हमें आपसी बातचीत करने का अवसर दे दे। मैं गम्भीरतापूर्वक बोला, "यह कब की बात है?

गाइड मेरे इस प्रश्न पर हिचकिचाया। बगलें झाँकता हुआ रुकते रुकते बोला, "सन् तो मुझे याद नहीं है अनुमान है यही बीस ।"

मैं उसकी अनभिज्ञता पर नहीं झल्लाया। मुझे रोष तो इसी बात पर होना चाहिए था कि मार्गदर्शक इतने अनपढ़ क्यों हैं लेकिन मेरे रोष का उद्गम मुमताज का यहाँ से लापरवाही से हट जाना था। मैंने गाइड को तनिक ताड़ना भरे स्वर में कहा "तुम कैसे गाइड हो? जब तक तुम्हारी भाषण कला प्रभावशाली नहीं होगी तब तक तुम्हारा व्यापार नहीं चलेगा।" तब मैंने उसे संक्षिप्त उपदेश दे दिया।

"यहाँ बहुत अन्धकार है राधा चलो जल्दी से बाहर चलें।"

राधा ने गम्भीरता से कहा "सचमुच मुझे औरंगजेब ने मुमताज की कोख को लजा दिया। पुरुष जाति बहुत स्वार्थी होती है?"

मेरे मनमें आया कि जाकर राधा की कलाई पकड़ लूं और पूछूं कि तुमने सारी पुरुष जाति पर लांछन क्यों लगाया? कह दिया कि सारी पुरुष जाति स्वार्थी होती है और तुम औरतें? झूठी धोखेबाज और कायर! मैं एक क्षण क्रोध में विमूढ़ रहा और अन्त में चलचित्र के उस हीरों की तरह व्यथित मुद्रा बना कर दर्द भरे स्वर में अपने आप से बोला, "राधा! एक बार तुम मेरा हृदय चीर कर देखती तो पता चलता कि इस पुरुष के अन्तर में किसकी तस्वीर है? क्षणभर में अपना सर्वस्व अर्पण करनेवाला यह पुजारी तुम्हारे लिए आकाश के तारे तोड़ कर न ले आए तो कहना? मैं जीवन-भर आत्मा के पुनीत प्रदीप के आलोक में प्रीत की पावनता को अक्षुण्ण रखूंगा। तुम्हारे हर कदम के आगे मेरे पलक-पावड़े बिछे रहेंगे और ।"

गुम्बद का अन्धकार गहरा हो गया था। जमादार लालटेन लेकर गुम्बद से दूर चला गया था। गाइड का चेहरा उतर गया था। उसकी उदास आँखों में प्रश्न तैर रहे थे जैसे उसे यह डर हो गया हो कि बाबू पैसा नहीं देगा। फिर भी वह मेरे पीछे-पीछे गोकुल के पंडे की भाँति आज्ञाकारी होकर चल रहा था।

सुधा और राधा काफी दूर निकल चुकी थीं। मेरा मन सच कहूँ, क्षणिक भावावेश वशित पाप भी काफी दूर स्वच्छन्द कुलाचें भर रहा था। सोच रहा था, "शाहजहाँ की उदारता और करुणा ने अपने बेटों को अबद साँचे में ढाल दिया। यदि वह तनिक क्रूरता से काम लेता तो संभव है उसे इस पीड़ित परिणाम से नहीं टकराना पड़ता। स्नेह की अजस्र धारा की स्वाद का निम्न स्पर्श पाकर सूख जाती है और तब आदमी सभी सम्बन्धों को विस्मृत करके व्यक्ति की स्थापना में लग जाता है। पर मैं हूँ मैं राधा से सभी पुत्रों को ऐसे साँचे में ढालूँगा कि वे किंचित भी मानवता से विमुख नहीं होंगे। वे औरंगजेब की भाँति अपने पिता के उन्माद और हिंसक नहीं बनेंगे। वे उन्हें राधा के पावन-चरणों में अपना मस्तक रखकर अपने आपको गौरवान्वित समझेंगे।"

सुरंग समाप्त हो गई थी।

राधा और सुधा सुरंग के बाहर खड़ी थीं। इस बार मैं राधा का अमूल्य सौन्दर्य-सम्पन्न मुख देख पाया। पनघट की पद्मिनी ट्राय की हेलन इन्द्र की रंभा और मेनका सभी तो उसकी सुन्दरता के सम्मुख पानी भरती थीं। मैं शरीफ भी महमान, महल यह सोच कर ताजमहल के गुम्बद देखने लगा। राधा और सुधा दोनों सीढ़ियाँ उतर रही थीं। मैं उन्हें देख रहा था पीछे से।

अचानक सुधा का पाँव फिसलते फिसलते बचा। मैं जल्दी से कदम बढ़ा कर उसके सन्निकट पहुँचा। सुनता हूँ राधा कह रही है "सुधा! मुझे तो भगवान ने अन्धी बनाया है पर तू आँखें होते हुए अन्धी क्यों हुई जा रही है?"

आवेश दुख और क्षोभ के मारे मैं राधा के सम्मुख जा खड़ा हुआ। दो आँखें सुन्दर काली-काली पर अचल। पत्थर, बिलकुल बनावटी। मैं देखता रहा। सुधा को यह अच्छा नहीं लगा वह बोले इसके पहले ही मैं वहाँ से खिसक पड़ा।

एक आवाज आ रही थी शायद अयन ताजमहल में टकराए जो

हृदयों के अमर प्यार को स्पर्श कर मेरे कान में कह रहा था 'राधा के कृष्ण, उसके आराधक, उसके पुजारी कहाँ जा रहे हो ? जरा रुको न, तेरी सर्वस्व तेरी राधा निःसहाय है, उसे सम्भाल लो उसे सहारा दो।"

और मेरे मन में एक ही वाक्य गूँज रहा था। "राधा अंधी है, अंधी ? ईश्वर बहुत निर्दयी है, कठोर है दुष्ट है। ऐसे रूपको इतना बड़ा अभिशाप

और मैं ताजमहल के बाहर भागता ही जा रहा था।

दुर्वासा का पहला वरदान

स्टेशन रोड पर स्थित छोटू-मोटू चौबी की दुकान पर गेरुआ वस्त्र पहने हुए एक साधु महाराज ने अपनी भोंपू जैसी आवाज में कहा "क्यों भक्त ! बारह बज गए ?

सरदार जी बारह का नाम सुनते ही इस तरह भड़के जैसे लाल कपड़े से बैल भड़कता है। भुनक कर बोले, 'ऐ साधु महाराज ! तू अपनी जबान के लगाम लगायेगा या ।"

साधु महाराज अपनी छोटी-छोटी आँखों को विचित्र ढंग से मिच मिचाते हुए लम्बे स्वर में बोले "वत्स ! लाल-पीला क्यों हो रहा है ? हमने कौन सा अपराध किया ? अरे भाई बस, इतना ही पूछा कि बारह बज ।

"अबे मैं कहता हूँ अपनी जबान के लगाम लगा नहीं तो रब जी की मेहरबानी से एक थप्पड़ में मुँह तोड़ दूँगा।"

सरदार जी विकराल-से हो उठे। गुस्सा तन गया। दुकानदार ने बिगड़ कर साधु बाबा को डांटा—"ऐ कमबख्त का बेटा, भाग यहाँ से नहीं तो भक्ति का सारा नशा उतार दूँगा ।" फिर वह सरदार जी की ओर मुखातिब होकर बोला "क्या करें साहब, ये साधु तो कुत्तों से भी गए गुजरे हो गए हैं। काटते रहते हैं सब को।

और बाबा कमण्डल हिलाते हुए कहते जा रहे थे, "ऐसा जीव इस भूमंडल में नहीं देखा। जी चाहता है कि शाप देकर इसे पत्थर बना दूँ, पर ।" क्रोध के मारे उनकी मूँछें कत्थक नृत्य कर रही थीं। आँखें लाल हो उठी थीं लेकिन क्या रहस्य था कि वे अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाए ?

दोपहर, चिलचिलाती धूप। आग-सी लू और हमारे महाराज भेंस लिए शिवजी के बैल की भाँति उन्मत्त घूम रहे थे शहर की गलियों में। बाँग लगा रहे थे, 'है कोई भक्त जो इस भूखी-प्यासी आत्मा के दो सवाल पूरा कर दे।"

तभी बाबा ने सुना कि एक लड़का धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाता जा रहा है—ना जाने किस भेष में बाबा मिल जायें भगवान रे

बाबा ने सुना, विचारा—आदमी भक्त-हृदय का जान पड़ता है। बाबा ने पास जाकर पुकारा "बच्चा ए बच्चा।

बच्चा जी रुक गए। हाथ जोड़ कर विनम्र स्वर में सिर झुकाते हुए बोले "कहिए बाबा जी इस बच्चे को क्या आज्ञा है।"

"साधु दो रोज से भूखा है।

"तो किसी होटल में जाइए। वहाँ बहुत खाना पड़ा है। चावल से लेकर कबाब तक।"

पर पैसा?"

"पैसा! पैसा बैंक में कहाँ तो पंजाब बैंक का चैक काट दूँ?" इतना कह लड़का इतने जोर से हँसा कि बाबा झेंप गए और वहीं से टरक गए। बार-बार कह रहे थे, कलियुग घोर कलियुग...।"

वह गली सड़ांध से भरी हुई थी। भूख और प्यास के मारे बाबा जी के पेट में चूहे एक एक हाथ ऊँची छलांगें मार रहे थे। अकस्मात् फिल्म संसार की प्रसिद्ध प्लेबैक गायिका लता मंगेशकर की धुन की तरह किसी युवती का स्वर उन्हें सुनाई पड़ा,—"साधु महाराज साधु महाराज।"

साधु महाराज ने पीछे की ओर देखा तो दंग। मन में तूफान उठा और खोपड़ी में एक वाक्य गूँज उठा—शकुन्तला साक्षात् शकुन्तला वही रूप वही आँखें वही तोते सी नाक वही चाँद सा गोरा चेहरा। दुर्वासा यह तेरी शकुन्तला है!

और बाबा अर्थात् दुर्वासा जी चकरा गए। भारी कदम उठाते हुए

दुर्वासा का पहला वरदान

स्टेशन रोड पर स्थित छोटू-मोटू चौधरी की दुकान पर गेरुआ वस्त्र पहने हुए एक साधु महाराज ने अपनी भोंपू जैसी आवाज में कहा "क्यों भक्त ! बारह बज गए ?"

सरदार जी बारह का नाम सुनते ही इस तरह चौंके जैसे लाल कपड़े से बैल चौंकता है। तुनक कर बोले, "ऐ साधु महाराज ! तू अपनी जबान के लगाम लगायेगा या   ।"

साधु महाराज अपनी छोटी-छोटी आँखों को विचित्र ढंग से मिच-मिचाते हुए लम्बे स्वर में बोले "वत्स ! लाल-पीला क्यों हो रहा है ? हमने कौन सा अपराध किया ? अरे भाई बस इतना ही पूछा कि बारह बज   ।

"अबे मैं कहता हूँ अपनी जबान के लगाम लगा नहीं तो रब जी की मेहरबानी से एक झापड़ में मुँह तोड़ दूंगा।"

सरदार जी विकराल-से हो उठे। गुस्सा तन गया। दुकानदार ने बिगड़ कर साधु बाबा को डाँटा—"ऐ फक्कड़ का बेटा भाग यहाँ से नहीं तो भक्ति का सारा नशा उतार दूंगा ।" फिर वह सरदार जी की ओर मुखातिब होकर बोला, "क्या करें साहब ये साधु तो कुत्तों से भी गए गुजरे हो गए हैं। काटते रहते हैं सब को।

और बाबा कमण्डल हिलाते हुए कहते जा रहे थे, 'ऐसा जीव इस भूमंडल में नहीं देखा। जी चाहता है कि शाप देकर इसे पत्थर बना दूं पर । क्रोध के मारे उनकी मूंछें कत्थक नृत्य कर रही थीं। आँखें लाल हो उठी थीं लेकिन क्या रहस्य था कि वे अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाए ?

दोपहर, चिलचिलाती धूप। आग-सी लू और हमारे महाराज मैंम पिए शिवजी के बैल की भाँति उन्मत्त घूम रहे थे शहर की गलियों में। धाँस लगा रहे थे "है कोई भक्त जो इस भूखी-प्यासी आत्मा के दो ग्रास पूरा कर दे।"

तभी बाबा ने सुना कि एक लड़का धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाता जा रहा है—ना जाने किस भेष में बाबा मिल जाये भगवान रे

बाबा ने सुना विचारा—आदमी भक्त-हृदय का जान पड़ता है। बाबा ने पास जाकर पुकारा "बच्चा ए बच्चा।"

बच्चा जी रुक गए। हाथ जोड़ कर विनम्र स्वर में सिर झुकाते हुए बोले "कहिए बाबा जी इस बच्चे को क्या आज्ञा है।"

'साधु दो रोज से भूखा है।

'तो किसी होटल में जाइये। वहाँ बहुत खाना पड़ा है। चावल से लेकर कबाब तक।

पर पैसा ?"

'पैसा! पैसा बैंक में कहो तो कंगाल बैंक का चैक काट दूँ ?"

इतना कह लड़का इतने जोर से हँसा कि बाबा झेंप गए और वहाँ से टरक गए। बार-बार कह रहे थे कलियुग घोर कलियुग ...।"

तन मन्नी सशंय में भरी हुई थी। भूख और प्यास के मारे बाबा जी के पेट में चूहे एक एक हाथ ऊँची छलांगें मार रहे थे। अचानक फिल्म संसार की प्रसिद्ध प्लेबैक गायिका लतामंगेशकर की धुन की तरह किसी युवती का स्वर उन्हें सुनाई पड़ा,—"साधु महाराज साधु महाराज ।"

साधु महाराज ने पीछे की ओर देखा तो सन्न। मन में तूफान उठा और खोपड़ी में एक शब्द गूँज उठा—शकुन्तला साक्षात शकुन्तला वही रूप, वही आँखें वही तोते सी नाक वही चाँद सा गोरा चेहरा। दुर्भाग्य यह तेरी शकुन्तला है! ।

और बाबा अर्थात् दुर्वासा जी चकरा गए। भारी कदम उठाते हुए

उसके समीप गये। ऊँचे स्वर में बोले, "कहो बेटी।

"महाराज आटा...।"

"क्या कहा आटा?" आँखों को एकदम बदलते हुए दुर्वासा बोले "हम क्या ऐरे गैरे सत्तू खोर साधु हैं, मँगते हैं या भिखारी? बेटी यह तुम हमारा अपमान कर रही हो। हम ब्रह्माण्ड को जानने वाले परम ज्ञानी योगी, महर्षि दुर्वासा हैं। कल्याण चाहती हो तो भोजन कराओ। खाली आटा तो स्त्रियों के लिए है। हम पूजापाठ को छोड़ कर, मन को मन से जोड़ते हैं।

"क्षमा कर दीजिए महाराज...।"

"क्षमा तो ले देख ।"

दुर्वासा ने अपनी झोली में से सोने का ढेर निकाल कर रख दिया और कहा, "यह सतयुगी सोना है। संदूक में बन्द कर रख देगी और तीन दिन के बाद खोलेगी तो यह संदूक कभी भी खाली नहीं होगी। कुबेर का खजाना हो जायेगा। ले ले बेटी ले फिर पछताना न पड़े।"

दुर्वासा ने नेत्र बन्द कर लिए। उनके सूखे होठ फड़क रहे थे जैसे किसी मंत्र का जप कर रहे हों।

स्त्री ने अपनी आँखों के सामने स्वर्ण के चमकते ढेर को देखा तो चकाचौंध-सी रह गई। उसने अपनी आँखों को बार-बार मला कि यह स्वप्न है या सत्य और तब उसके अधरों पर लालच की हँसी नाच उठी और उसके दोनों हाथ सोने की ढेरी की ओर बढ़ गये।

"इतना सोना!" स्त्री लालायित हो उठी।

"इतना क्या! देख इस झोली में क्या है?

उन्होंने अपनी झोली का मुँह आगे बढ़ाया। स्त्री ने देखा तो दंग रह गई। झोली सोने की भरी हुई थी। वह भाव विह्वल हो गई। झटपट उसने दुर्वासा महाराज के पाँव पकड़ लिए। दुर्वासा रोदन भरे स्वर में धीरे-धीरे बोले— बेटी हम ठहरे सन्यासी त्यागी योगी, हमें लक्ष्मी से क्या काम? हम यदि अन्न भक्त हैं, तो यह साधु की भीख,

और हम यदि परवाल हैं, तो यह पतन। इसलिए बेटी हम तुम्हें यह स्वस्थ-ज्ञान कर रहे हैं। तुम सोचोगी कि हम अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं? नहीं-नहीं, हम तो जगत का कल्याण कर अपने पिछले जन्म का प्रायश्चित कर रहे हैं। उठ बेटी और ध्यान से देख मेरी ओर।
स्त्री ने अपनी दृष्टि दुर्वासा पर टिका दी। उसने ध्यान से देखा कि दुर्वासा की दाढ़ी तो सफेद है और बाल काले-काले। वह उन्हें बड़े ध्यान से देखने लगी।

"अपने जन्म में मैं अत्यन्त क्रोधी था। ब्रह्मा विष्णु और महेश ने अब मुझे इस पृथ्वी पर इसलिए भेजा है कि मैं यहाँ दुखियों की सेवा कर उनका आशीर्वाद लूं। इतना कह दुर्वासा महाराज ने आज्ञा दी— 'जा बेटी! यह सारा सोना ले जा और इसके बदले हमें सिर्फ दो रोटी और एक छोटा-मोटा जेवर ला दे। क्योंकि परम ब्रह्म परमात्मा का कहना है कि वह जेवर जैसे ही इस झोली में पड़ेगा वैसे ही तेरा सोना दुगुना हो जायेगा। तू मालामाल हो जायेगी।"

"मैं अभी लाई। स्त्री उत्साह से चली गई पर उसके मस्तिष्क में दुर्वासा की सफेद दाढ़ी और काले बाल कुतूहल बनकर घूमने लगे। ऐसी विचित्रता उसने बहुत ही कम देखी थी कि बाल काले और दाढ़ी सफेद। मत' आते ही वह उत्सुकता से हाथ जोड़ कर बोली—'महाराज अप राध क्षमा हो आपके बाल काले और दाढ़ी सफेद क्यों?" स्त्री डर गई।

"दाढ़ी दाढ़ी।" दुर्वासा जी विस्मित हो उठे। उनके दोनों हाथ यंत्र की भाँति बार-बार दाढ़ी पर जाने लगे। खिसियाते हुए बोले— "यह दाढ़ी? यह दाढ़ी भी तो देवताओं का अभिशाप है। विष्णु भग वान ने मुझे श्राप दिया था—जा क्रोधी तेरी दाढ़ी सफेद रहेगी। बस सफेद हो गई। पर मैं बाल प्रकृति का विरोध नहीं कर सके। मैं अपने बालों को सफेद कर सकता हूँ पर देवताओं का श्राप भी तो बरदाश्त होता है। इसलिए चुप हूँ।"

स्त्री के विश्वास को इससे आस्था नहीं मिली। तब दुर्वासा ऋषि ने

मुस्करा कर जीवन वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया।

—आज से तेईस साल पहले गाँव कोसावर में मेरा जन्म हुआ माने महर्षि दुर्वासा का अवतार हुआ था बेटी।

दुर्वासा के जन्म पर गाँव में सनसनी फैल गई। क्योंकि अवतारों के जन्म पर सनसनी पैदा होती ही है। पतञ्जलि का जन्म एक ब्राह्मण की अंजली से हुआ, तो हल्ला। महामुनि अगस्त्य का घोड़े से महाराज इक्ष्वाकु का जन्म मनुजी के पेट से अर्थात आदमी के पेट से। मतलब यह है कि मनु जी ने छींका और इक्ष्वाकु जी टपके। तो बेटी उनके जन्म से सारे गाँव में हलचल मच गई तो आश्चर्य ही क्या ? फिर मैं भी तो अवतार ही था लोग काम-धंधा छोड़-छोड़ कर उनके घर की ओर भागे चले आ रहे थे। भीड़ में एक ही शब्द गूंज रहा था—विचित्र विचित्र....विचित्र महाविचित्र।

उनके घर के आगे अपार जन-समूह था। आपस में कानाफूसी का बाजार गर्म था। औरतें आपस में बातचीत कर रही थीं।

ऐसा बच्चा आज तक पैदा नहीं हुआ ?"

"मुई भी दाढ़ी है।"

"दाँत तो नहीं है।"

भीड़ का अट्टहास गूँज उठा।

"अच्छा ही हुआ चमेली, कि दाँत नहीं है वर्ना और बात के राक्षस पैदा हो जाता।"

भीड़ के इस अनर्गल प्रलाप से दुर्वासा ऋषि के पिताजी परेशान हो उठे। वह किस किस की जुबान पकड़ते ? लाचार, उन्होंने गाँव के ठाकुर को खबर दी। ठाकुर साहब दो कारिन्दों के साथ पधारे। उनके आते ही भीड़ छिन्न-भिन्न हो गई। ठाकुर ने गंभीरता से कहा—"मेरे ख्याल से बच्चा अधिक देर तक नहीं जियेगा।"

"क्यों ठाकुर साहब मेरे तो बुढ़ौती में लड़का हुआ है।"

"भगीरथ ! तू अपनी तपस्या को निष्फल ही समझ। एक बार

मैं शहर गया था वहां डाक्टरों ने ऐसे बच्चों को शीशे के बर्तनों में सजाकर रखा है।"

"हे ईश्वर ! तू मेरे लाल की रक्षा करना। छोटी-सी दाढ़ी मूंछ तो बच्चे के मुख पर बहुत अच्छी लगती है।"

वास्तव में भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली। दुर्वासा मरे नहीं। मरते भी कैसे ? भगवान के शाप से ही तो पैदा हुए थे। दाढ़ी मूंछ की जो गई बात थी, वह भी दिन दूनी और बहुत अधिक उसे याद किया तैरह दिन। जब न तो सींग ही निकले और दाढ़ी ही बढ़ी। तब बात आई गई हो गई।

महापंडित पोपड़ानन्द जी नामकरण के दिन कीचड़ में फंसे पहिये की तरह अड़ गए कि वे नामकरण का पूरा सवा रुपया ही लेंगे सवा पाँच आने नहीं।

"लेकिन हमारे पुरखों की रीति सवा पाँच आने की ही है।" उनके पिता भगीरथ जी ने दलील पेश की।

"लेकिन आपके पूर्वजों के पैदा होते ही दाढ़ी-मूंछ नहीं निकली थी।" पोपड़ानन्द जी अपने चश्मे को नाक पर लाते हुए बोले यह चौदह आने तीन पैसे इसकी दाढ़ी मूंछ का टैक्स है।"

भगीरथ क्रोध में बड़बड़ा उठे—"भाड़ में जाय इसकी दाढ़ी मूंछ, जब से पैदा हुआ है तब से खर्चा ही खर्चा।"

अन्त में पोपड़ानन्द जी को सवा रुपया देना ही पड़ा। पोपड़ानन्द जी ने दो चार मंत्र का जाप करके कहा— 'नाम 'द' अक्षर से प्रारम्भ होना चाहिए।"

भगीरथ ने तुरन्त कहा—"देवदास।"

"नहीं दमड़ी प्रसाद।"

"छि छि यह कोई नाम है ? देवदास, दमड़ी प्रसाद, दरोगा-लाल। नाम तो होना चाहिए दुर्वासा। देख नहीं रहे हैं आप कि श्रीमान जी गर्भ में से ही दाढ़ी-मूंछ लेकर आये हैं।" यह प्रवचन भगवती

की माँ बंगाली का था।

गोपड़ानन्द जी ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

तभी एक नटखट छोकरा कह उठा—'नाम 'द' अक्षर पर होना चाहिये। हाँ तब यह नाम बहुत ही ठीक रहेगा—दाढ़ी वाला मुन्ना।'

और आस पास खड़े सभी बच्चे चिल्ला उठे—दाढ़ी वाला मुन्ना दाढ़ी वाला मुन्ना। उनकी तालियों से सारा घर गूंज उठा।

कथा सुनाते-सुनाते दुर्वासा जी ने सिगरेट की मांग की। सिगरेट का धुआँ आसमान की ओर उड़ाते हुए उन्होंने धैर्य से पुनः कहना शुरू किया— 'दुर्वासा कहने लगे। स्कूल से जब वे विद्याध्ययन करके लौटते तब बच्चे जगह-जगह पर उन्हें दाढ़ी वाला मुन्ना कहकर चिढ़ाते। कहने वालों के स्वर में इतना तीखा व्यंग होता था कि कभी-कभी दुर्वासा क्रोध में तिलमिला उठते थे और बच्चों को पत्थर बन जाने का शाप देने को तैयार हो जाते थे लेकिन फिर वे विष्णु भगवान के भय से अपना इरादा बदल लेते थे। हाँ कभी-कभी वे मारपीट कर देते थे जिससे रात को स्वप्न में उन्हें ब्रह्मा विष्णु और महेश डाँटते थे। कहते थे—अरे, अब तो क्रोध को त्याग दो नहीं तो तुम्हें मृत्यु-लोक के कुंभी-पाक में सड़ना पड़ेगा और वे शान्त हो जाते थे। वे दाढ़ी मूँछ को काट देना चाहते थे लेकिन डर यह था कि शाप के कारण उत्पन्न हुई यह मक्खन-सी मुलायम दाढ़ी कहीं उस्तरे के स्पर्श से घास की तरह बढ़ने लगी तो … नहीं-नहीं, यह प्रभु प्रदत्त वरदान ही श्रेयस्कर है।

पर एक दिन अचानक दुर्वासा के कानों में सुनाई पड़ा कि बच्चों ने एक कविता भी उनकी दाढ़ी पर बना ली है। बच्चे देख-देख कर तालियाँ बजाने लगे और गाने लगे—

मुन्ना दाढ़ी वाला प्यारा
लगता है वह सबसे न्यारा
कौन करेगी शादी इससे
रहेगा यह आजन्म कुँवारा

उस धीरज को हँसते हुए देख कर दुर्वासा महर्षि बोले—तुम हँस रही हो बेटी ? तुम भी सोचती होगी कि अब महर्षि शाप तो नहीं दे सकते इसलिए मुझे भी हँसना चाहिए । हँसो खूब ज़ोर से हँसो बेटी ! घर में दूध है ?" दुर्वासा जी वृत्तांत का अन्त किये बिना ही बोले ।

'हाँ है लाऊँ एक गिलास ? पर ...।

"पर !" चौंक पड़े दुर्वासा जी

"बात यह है कि वह मिल्क पाउडर है । आप पीना चाहें तो मैं लाऊँ ?

"जैसी भक्त की मर्जी । जो पिलाओगी, पी लेंगे हम संतोषी हैं ।"

दूध को हलक से घूँट-घूँट उतारते हुए दुर्वासा जी पुन बोले—'पर दादी वाला मुन्ना बुद्धि का बड़ा कुशाग्र था । कितने ही श्लोक उसने हीरामन तोते की तरह रट लिए थे । फिर क्या था उसकी इज्जत सारे गाँव में होने लगी ?

एक रोज़ उन्हें स्वप्न में भगवान ने आज्ञा दी—"ऋषिराज ठकुराइन की जो मुन्ना बेटी है न, वह कद में ताड़-वृक्ष सी लम्बी है, इसलिए जाकर आप उसके लिए उचित वर ढूँढ लाइए ।

दुर्वासा जी तड़के ही ठाकुर के घर की ओर चले । उस समय उनकी उम्र अठारह साल की थी ।

ठाकुर की सुकन्या वास्तव में बहुत ही लम्बी थी । इतनी लम्बी जितना ताड़ का वृक्ष और उसकी बाली इतनी मोटी जितनी ढोल । दुर्वासा जी सीधे अमराई बाग में पहुँचे । उद्यान सौरभ से भरा हुआ था । पराग के कण पवन में उच्छ्वास भर रहे थे । उन्हें देखते ही सुकन्या अति शील से नत मस्तक होकर बोली— 'नमस्कार !" ऐसा मालूम पड़ा कि भगवान ने उसे भी स्वप्न में कह दिया हो कि कल तुम्हारे यहाँ मुनियों के मुनि, स्वामियों के स्वामी दुर्वासा जी पधार रहे हैं ।

दुर्वासा जी ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया— 'कल्याण हो देवी कल्याण हो, मन की आशा पूरी हो ।

थी भी बेचैनी का था।

गोपदानन्द जी ने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

तभी एक नटखट छोकरा कह उठा—'नाम 'द' अक्षर पर होना चाहिये। हाँ अब यह नाम बहुत ही ठीक रहेगा—दाढ़ी वाला मुन्ना।

और आस पास खड़े सभी बच्चे चिल्ला उठे—दाढ़ी वाला मुन्ना दाढ़ी वाला मुन्ना। उनकी तालियों से सारा घर गूंज उठा।

कथा सुनाते-सुनाते दुर्वासा जी ने सिगरेट की तलब की। सिगरेट का धुआँ आसमान की ओर उड़ाते हुए उन्होंने धैर्य से पुनः कहना शुरू किया—"दुर्वासा कहने लगे। स्कूल से जब वे विद्याध्ययन करके लौटते तब बच्चे जगह-जगह पर उन्हें दाढ़ी वाला मुन्ना कहकर चिढ़ाते। कहने वालों के स्वर में इतना तीखा व्यंग होता था कि कभी-कभी दुर्वासा क्रोध में तिलमिला उठते थे और बच्चों को पत्थर बन जाने का शाप देने को तैयार हो जाते थे लेकिन फिर वे विष्णु भगवान के भय से अपना इरादा बदल लेते थे। हाँ कभी-कभी वे मारपीट कर देते थे जिससे रात को स्वप्न में उन्हें ब्रह्मा विष्णु और महेश डाँटते थे। कहते थे—अरे, अब तो क्रोध को त्याग दो नहीं तो तुम्हें मृत्यु-लोक के कुंभी-पाक में पड़ना पड़ेगा और वे शान्त हो जाते थे। वे दाढ़ी मूँछ को काट देना चाहते थे, लेकिन डर यह था कि शाप के कारण उत्पन्न हुई यह मखमल-सी मुलायम दाढ़ी कहीं उतारने के समय ही बाल की तरह बढ़ने लगी तो नहीं-नहीं यह प्रभु प्रदत्त वरदान ही श्रेयस्कर है।

पर एक दिन अचानक दुर्वासा के कानों में सुनाई पड़ा कि बच्चों ने एक कविता भी उनकी दाढ़ी पर बना ली है। बच्चे देख-देख कर तालियाँ बजाने लगे और गाने लगे—

मुन्ना दाढ़ी वाला प्यारा
लगता है वह सबसे न्यारा
कौन करेगी शादी इससे
रहेगा यह आजन्म कुँवारा

उस गौरव को हँसते हुए देख कर दुर्वासा महर्षि बोले—तुम हँस रही हो बेटी ? तुम भी सोचती होगी कि अब महर्षि शाप तो नहीं दे सकते इसलिए मुझे भी हँसना चाहिए। हँसो खूब जोर से हँसो बेटी। घर में दूध है ?" दुर्वासा जी वृत्तांत का अन्त किये बिना ही बोले।

"हाँ है, लाऊँ एक गिलास ? पर…।"

"पर !" चौंक पड़े दुर्वासा जी

"बात यह है कि वह मिल्क पाउडर है। आप पीना चाहें तो ले आऊँ ?

"जैसी भक्त की मर्जी। जो पिलाओगी पी लेंगे हम संतोषी हैं।"

दूध को हलक से घूँट-घूँट उतारते हुए दुर्वासा जी पुनः बोले— "पर दाढ़ी वाला मुन्ना बुद्धि का बड़ा कुशाग्र था। कितने ही श्लोक उसने हीरामन तोते की तरह रट लिए थे। फिर क्या था उसकी इज्जत सारे गाँव में होने लगी ?

एक रोज उन्हें स्वप्न में भगवान ने आज्ञा दी—"कविराज ठाकुर-दल की जो मुन्ना बेटी है न, वह कद से ताड़-वृक्ष सी लम्बी है, इसलिए जाकर आप उसके लिए उचित वर ढूँढ लाइए।

दुर्वासा जी तड़के ही ठाकुर के घर की ओर चले। उस समय उनकी उम्र पचपन साल की थी।

ठाकुर की मुन्नी वास्तव में बहुत ही लम्बी था। [illegible] जितना ताड़ का वृक्ष और उसकी कमर इतनी मोटी [illegible] दुर्वासा जी सीधे जनाना वास में पहुँचे। [illegible] परम के पश्च जीवन में सन्यास पर रहे थे। उन्हें [illegible] अति दीन है मन मस्तक होकर बोली—"[illegible]" [illegible] कि भगवान ने उस भी स्वप्न में कह दिया है कि [illegible] मुनियों के मुनि, त्यागियों के त्यागी दुर्वासा जी आ रहे हैं ?

दुर्वासा जी ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया—"[illegible] मनमाने हो मन की आशा पूर्ण हो।

'आप हैं कौन ?" उसने चुनक कर पूछा। दुर्वासा जी को अपनी भूल का ज्ञान हुआ कि इसे प्रभु ने स्वप्न में कुछ नहीं कहा है।

"मैं दुर्वासा ऋषि हूँ सुकन्या। तू इतनी लम्बी है कि तुझे वर मिलना अत्यन्त दुष्कर है।

"आप हैं कौन ?" उसने पुनः कड़े स्वर में कहा।

मेरा वर तो बंगाल का नारियल का पेड़ होना चाहिए अथवा हमारे जैसा महर्षि बाबा साधक। अन्यथा तुम्हारा उद्धार असम्भव है।'

"आप पागल हैं।" उसने रोष में गुर्रा कर कहा। उसकी ग्रीवा में नाचती हुई पुतलियों में स्फुलिंग से भड़क उठे।

पागल ! सुकन्या ! सौन्दर्य सम्पत्ति का सम्बन्ध पाकर दंभी हो जाता है पर प्रभु ने आज्ञा दी है कि हम आप को वरें। दुर्वासा जी ने आगे बढ़ उसका कोमल कर पकड़ लिया।

पर देवी ! यह संसार भ्रम-जाल में अटका हुआ है। माया डोर में बंधा हुआ है। अच्छे-बुरे की पहचान नहीं है—उस सुकन्या ने ऋषिराज के हाथ से अपने हाथ को मुक्त कराने के लिए चिल्लाने का आश्रय लिया। दुर्वासा जी ने देखा कि चार लठैत आ रहे हैं अतः वे भी उन्हें पत्थर बनाने को उद्यत हुये कि विष्णु जी का शाप उन्हें स्मरण हो उठा। तत्पश्चात वे प्राण रक्षा हेतु भागे। बाद में उन्हें मालूम हुआ कि उनके गाँव में कदम रखते ही ठाकुर उसे कारागृह में डाल देगा इसलिए वे कभी गाँव नहीं लौटे।

तब दुर्वासा ऋषि मैं नगर-नगर, डगर-डगर घूमता रहा हूँ। कोई भक्त हमें पुकारता है तो हम अच्छी तरह कल्याण कर देते हैं। हाँ बेटी ! तू लाई यह क्या ?"

"हाँ महाराज, यह मेरा पन्द्रह सौ रुपयों का हार है।" स्त्री ने हार

महात्मा जी को दे दिया। महात्मा जी उसे झोली में डालते हुए कहने लगे— 'अब हम भोजन नहीं करेंगे। ठीक तीसरे दिन सम्भूक खोलना, ओ३म शिव हरे शिव हरे!"

और दुर्वासा जी अपनी सफेद किन्तु कोमल दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए शिवजी के सांड की तरह मस्ती की चाल में चल पड़े ऋषि-मुनियों की अध्यात्म भूमि पर और वह भारतीय ममता श्रद्धा से अभिभूत होकर पीछे से हाथ जोड़ रही थी।



आदि-अन्त

कहानी की समस्या मछली जाल

मेरी कहानी की नायिका एक जाल में फँसी मछली है, मछली भी ऐसी जो अपनी चतुराई के कारण स्वयं जाल में फँस गई और वह जाल एक अत्यन्त दुष्ट प्रकृति के मछेरे द्वारा फेंका गया था। और वह मछेरा ? इन्सान के रूप में पूरा शैतान, नारी को अपने पाँव की जूती समझने वाला। वही मछेरा नारी के कोमल मांस को कुत्ते की तरह नोच कर कुरूप बना देता है। प्रकृति का दुष्ट और स्वभाव का निष्ठुर है मछेरा। वह मछली को पानी से निकाल निकाल कर तड़पाता है।

फिर कहानी बड़ी विचित्र बन जाती है। मछली जब रोती है तो मछेरा हँसता है। मछली जब आँसुओं से अपने आँचल को भिगोती है तो मछेरा अपने मन को सुख से तृप्त किया करता है। जीवन से त्रस्त होकर मछली जब वेदना की असीम सीमा पर पहुँचकर करुण चीत्कार करती है तब मछेरा लापरवाही का अट्टहास कर उसे आत्महत्या करने के लिए प्रेरित करता है।

मछली, तड़प और भला-बुरा पति

कौशल ने संध्या के गहरे होते अन्धेरे पर नजर फेंक कर लम्बी निःश्वास भरी। उसकी आँखें सूजी हुई थीं जिससे साफ जाहिर हो रहा था कि वह कुछ देर पहले भी भर कर रोई थी। उसने अपने कमरे पर सरसरी दृष्टि फेंकी और उसकी दृष्टि एक पुराने चित्र पर जाकर रुक गई। वह चित्र सरोज का था जो कभी अन्धेरे में साफ दिखाई नहीं पड़ रहा था। हठात् उसने रोशनी की। रोशनी तबीयत के बजाय हरी हो गई जिससे वह अपने आप पर झुंझला उठी "आज सबेरे से मेरा चित्त

ठिकाने नहीं है। मन उखड़ा-उखड़ा सा है। कोई भी काम ढंग से नहीं होता।"

इतना सोचते-सोचते उसने हरी बत्ती बुझाकर सफेद रोशनी की। कमरा जगमगा उठा। तस्वीर साफ दिखाई पड़ गई। वह कुछ क्षण तक उस तस्वीर को मर्मभरी दृष्टि से देखती रही और फिर सोफे पर बैठ कर स्वेटर बुनने लगी।

दीवार पर घड़ी की टिक-टिक कमरे की निस्तब्धता में साफ सुनाई पड़ रही थी। कौशल जो आह भी छोड़ती थी वह भी कमरे में महसूस हो जाती थी।

घड़ी ने दस बजाये।

वह चौंक उठी—"दस।

फिर ध्यान से उस घड़ी को देखा वास्तव में दस ही बजे हैं। उसके हाथ अब भी स्वेटर बुनने में व्यस्त थे। उसने बैठे-बैठे ही पुकारा—' काका।

एक पचास साल का बूढ़ा जिसके सिर पर सफेद बाल घास की तरह खड़े और रूखे थे जिसने बिना बाँह की कमीज पर काला मट-मैला कोट पहन रखा जिसकी धोती पर दाल-सब्जी के रंग बिरंगे दाग लगे हुए थे आया और अपनी कठोर आवाज में बोला—"क्या है बेटा।"

"खाना क्या बना रहे हो?

'जो तुम कह दो।"

"अभी मेरे कहने का ही इन्तजार कर रहे हो? अरे काका!"

'दस बज गये हैं। कब खाना पकेगा? कब खाऊँगी।

तभी दरवाजा खटखटाने की आवाज आई।

"देखो काका कौन है?

काका जाने को तैयार हुआ कि कौशल ने उसे रोका—"कोई ऐरा-गैरा हो तो उसे वहीं टाल देना कह देना मेम साहब बाहर गई हुई हैं दो रोज बाद आयेंगी। कौशल धीरे से उठकर गुसलखाने में

छिप गई।

काका ने आवाज दी— "मेम साहब, गोपाल बाबू हैं!"

"आइये!" मुसकराते हुए आवाज देती हुई कोमल निकली। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कान थी। गोपाल के बिलकुल समीप आती हुई वह बोली— आपके बिना मैं खाना भी नहीं पकवा सकती।"

"क्यों? गोपाल ने कोमल के चेहरे पर निगाहें जमाते हुए कहा। उसके स्वर और दृष्टि से विस्मय तैर उठा।

"भाई, आप क्या खायेंगे आपको क्या पसन्द होगा इसका मुझे क्या पता? कोमल पुनः सोफे पर बैठ गई। गोपाल भी कोट उतार कर सामने के सोफे पर बैठ गया।

"मेरे स्वभाव की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसे जो भी खाना मिल जाय वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेता है। सच तो यह है कि मुझे हर किस्म का खाना पसन्द है।"

फिर भी सब्जी?"

"कह दिया न, जो भी मिल जाय वही अच्छा!"

"तो काका दाल बना लो" गोपाल की ओर उन्मुख होकर कोमल ने, फिर पूछा—"दाल आपको अरहर की अच्छी लगती है या मूंग की?"

"कह दिया न किसी की भी हो। साधुओं को स्वाद कैसा?"

कोमल मुस्कराती और बोली "दाल मूंग की बना लेना और हाँ पापड़ भी भूनना। गोपालजी, पापड़ बिना खाना नहीं खायेंगे।

"नहीं होगा तो खाना ही पड़ेगा।" गोपाल ने हल्का व्यंग किया।

"अरे, मैं अभी ले आता हूँ गोपाल बाबू! बुड्ढा थोड़े ही हो गया हूँ।" जवान काका ने अपने दोनों बाजुओं को देखा।

काका हँसता हुआ बाहर चला गया। कोमल और गोपाल के चेहरे पर हल्की-हल्की विनोदपूर्ण मुस्कान थिरक उठी।

उसके चले जाने के बाद गोपाल कोमल को काफी देर तक देखता रहा। कोमल का चेहरा गोरा था और आँखें बड़ी थीं। होंठ भी उसके

जुरे नहीं थे पर भौंहें जरूर धनुषाकार नहीं थीं।

"मैं चला।" गोपाल ने निस्तब्धता में अपनी आवाज से झंकार उत्पन्न कर दी।

"कहाँ ?' कौशल चौंक पड़ी।

"कलकत्ते !' उसने उसकी ओर बिना देखे ही कहा।

'क्यों ?'

"भला, यह कहाँ की सभ्यता है कि मैं उल्लू की तरह चुपचुप बैठा रहूँ और तुम स्वेटर बुनने में व्यस्त रहो।"

कौशल का स्वेटर बुनना जारी रहा। उसने तनिक निगाहें उठाकर गोपाल की ओर देखा— मैं बात के तारतम्य को नहीं तोड़ती हूँ। जो तुम पूछते हो उसका बराबर उत्तर देती जाती हूँ।"

मैं इस तरह बात करने का आदी नहीं हूँ। मैं बातें करते वक्त इस बात को भी अनिवार्य समझता हूँ कि बातें करने वालों की आँखें आपस में चार होती रहें।" गोपाल के स्वर में निर्भीकता थी।

"आँखें चार होती रहें। कौशल का स्वर बिल्कुल गंभीर हो गया। स्वेटर पर चलने वाली अँगुलियाँ पल भर के लिए रुक गईं। अँगुलियों के रुकने से गोपाल के चेहरे पर लालिमा की हल्की रेखायें दौड़ गईं।

"और आँखें चार न हो तो ?" कौशल के स्वर में एक ऐसा प्रश्न था जो गोपाल की नैतिकता को झकझोर रहा था। इससे गोपाल की चेतना और उठी। झेंप मिटाता हुआ बोला "हाँ भाई चार हमसे आँखें चार थोड़े ही करोगी। उसके स्वर में व्यंग की जगह उपहास अधिक था ताकि विषय अन्तर्मुख न हो।

तभी बीच में काका ने आकर कौशल से कहा—"मेम साहब ! पापड़ नहीं मिले सभी दुकानें बन्द हो गईं। इतना कह काका ने अपनी गर्दन अपराधी की तरह झुका दी। कौशल ने जरा तेज स्वर से डांटा— "तुम्हें तीस साल हो गए हैं मेरे यहाँ काम करते लेकिन तमीज अब भी तुमसे कोसों दूर है। जाओ जैसा हो पका लो।" "गोपाल भी

घोर घुमकर वह पूर्ववत स्वर में कटु और लम्बाई का सम्मिश्रण करके बोली—"मेरे ये नौकर बिल्कुल नमकहराम हैं। मैं हूँ तो जरा स्वामी भक्ति का पार्ट अदा करते हैं वर्ना यह सारा घर लुटा दें। यह तो जब-जब मैं नृत्य या नाटक के आयोजन में बाहर जाती हूँ तो अपने सामान के ताला लगा कर जाती हूँ सच कहती हूँ इन नौकरों से मैं तंग हूँ।"

वे दोनों चुप हो गये।

कमरे में घड़ी की टिक-टिक फिर सुनाई पड़ने लगी।

काका ने अँगीठी जला ली थी जिससे धुआं उठकर उस कमरे में भरा जा रहा था जहाँ ये दोनों बैठे हुए थे। गोपाल का दम घुटने लगा। उसने अपरिचित की भाँति पूछा—"यह धुआं कहाँ से आता है?"

कौशल्या झल्ला पड़ी—"अरे काका! जरा तमीज रखा करो। देख नहीं रहे हो कि दो भले आदमी बैठे हैं।"

"तो क्या हुआ?" काका ने आश्चर्य से पूछा।

"ओह! सच गोपाल! मैं तो इससे परेशान हो गई हूँ। आँख के अन्धे तो नहीं हो। यह धुआं तुम्हें दिखलाई नहीं दे रहा है।"

"धुआं! हाँ!!" जैसे नींद में सोते-सोते जगा हो, उस तरह काका चौंका और कमरे से बाहर निकल कर उसने वह दरवाजा बन्द कर दिया जिससे धुआं आ रहा था।

"अब तुम बताओ कि आदमी कहाँ तक चुप बैठे रहे? आखिर झुंझलाहट आ ही जाती है। इस कम्बख्त को जरा भी अक्ल नहीं है। दिमाग चाट जाते हैं।" कौशल्या के चेहरे पर क्रोध की हल्की रेखायें नाच गईं।

"तुम्हारी तकदीर ही कुछ ऐसी है कि जो मिलता है वह पूरा परमेश्वर।" उसके स्वर में सहानुभूतिपूर्ण व्यंग था।

"हाँ वास्तव में मेरी तकदीर इतनी खराब है कि मुझे कभी भी एक पल के लिए चैन नहीं मिलता। जीवन घीसटता चरम-मूक आशायें प्यासी कुछ तकदीर ही ऐसी है।"

"अब मैं तुम्हें छोड़ दूँगा तभी तो कलकत्ता से भाग कर आया हूँ।" उसके स्वर में वही उपहास था जो नव-परिचित प्रेयसि को अपने हृदय का प्रेम प्रकट करते समय होता है जिससे वह उसके नाराज होने पर, वह कह सके कि वह मजाक कर रहा था।

'अरे जा रे जा आये हैं मुझे धन देने वाले।

'क्यों, क्या तुम्हें मेरा भरोसा नहीं? —कुछ गम्भीर होकर गोपाल बोला।

'भरोसा मुझे किसी का भी भरोसा नहीं। शीतल के होंठों पर अजीब-सी मुस्कान थी।

'क्यों? गोपाल की आँखें विस्मय से फट गईं।

'सारे मर्द एक दूसरे के चट्टे-बट्टे होते हैं।

"सारे मर्द।

हाँ-हाँ! सारे मर्द!

"आप जरा होश में आकर कीचड़ उछाला कीजिए। —गोपाल बिल्कुल गम्भीर हो गया।

'मैं बहुत होश में हूँ। मर्द का दूसरा नाम ही छल है झूठ है।

मेम साहब! हाथ की पाँचों अंगुलियाँ एक-सी होती हैं?"

'नहीं।

"फिर सारे मर्द भी एक से नहीं होते। अच्छे और बुरे सभी आप को मिलेंगे। आप में कौन से अवगुण नहीं हैं।"

'मेरी बात तो जाने दीजिए, लेकिन मैं सच कहती हूँ सरोज बाबू ने मेरे जीवन का नाश कर दिया।" उसके स्वर का आवेग शान्त हो गया। हल्की गहरी काली आँखों में वेदना-सी चमकी। अपनी दृष्टि को गोपाल पर जमाती हुई वह बोली—"आप नहीं जानते कि सरोज बाबू ने मेरे साथ कितना बर्बर सलूक किया है। उस दिन को उसने बनाकर रख दिया। एक इन्सान इतना कमीना हो सकता है इसका मुझे स्वप्न भी में भी ख्याल न था। आप विश्वास नहीं करेंगे कि मैं कितनी दुखी

है। व्यथा मेरी नस-नस में समा गई है। सच कहती हूँ—इस जिन्दगी से ऊब गई हूँ। खूबसूरत औरत की दर्द भरी तस्वीर मैं हूँ। स्वर में नहीं आवेश था और उस आवेश के साथ मुस्कराहट भी।

'फिर मेम साहब आप उस आदमी के साथ रहती ही क्यों हैं? दुख पीड़ा यातना असंतोष है फिर सम्बन्ध कैसा? वह पति और आप पत्नी कहीं?"

यह नाटक है। आखिर मैं कर भी क्या? मर्द के बिना नारी दो कौड़ी की होती है इसलिए मैं उसे साथ अपने खलनायक को रखती हूँ। लोग समझें कि इस औरत के भी अपना भला-बुरा एक पति है। बेचारी कुलटा नहीं बदजात नहीं है।

'तो आपने सरोज बाबू को ओट समझ रखा है?"

"और क्या।"

मतलब?'

"आदमी को कुत्ते के रूप में देखा है एक भयंकर कुत्ते के रूप में? यह सरोज वही भयंकर कुत्ता है जो सीधे सादे-भोले भाले मनुष्यों को अचानक काट खाता है और उसका जहर उसके रोम राम में पीड़ा एक ऐसी असह्य वेदना उत्पन्न कर देता है जिसे उसकी अनुभूति सहन नहीं कर सकती। यदि उस जहर के रोकने का सही उपचार न किया जाए, तो वह मनुष्य की मृत्यु का कारण बन सकता है अथवा उसका इतना खतरनाक असर होता है कि उस व्यक्ति के तमाम अंग पिसा हुई मशीन की तरह बेकाम हो जाते हैं। इसी तरह मेरे जीवन की मधुर भूलों का विष मेरे खून में पानी की तरह मिल चुका है और उसने मेरी खुशियों को इतना परवश बना दिया है कि मैं अपने को सरोज बाबू के बिना अपंग पाती हूँ। जैसे मुझे महसूस होता है कि उसके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। उसके साथ से दूर रहने से मुझे चारों ओर का वातावरण विषाक्त जान पड़ता है। समाज की प्रत्येक अच्छी हरकत मुझे अपने पर हुई विडम्बना सी प्रतीत होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि

मेरे जीवन के सुख के चन्द क्षण प्रतिक्षण के दुर्निवार आवर्तन के भय से सिहरने लगते हैं तब मेरा मन कमजोर पड़ जाता है, और सब लोग मुझे दुर्बल कहते हैं । मैं भी स्वीकार करती हूँ कि मैं दुर्बल हूँ यह भी समझती हूँ कि मेरे जीवन का अंत दुखों का पथ है । मेरी मृत्यु उस पानी की तड़पती हुई मृत्यु होगी जिसकी मधुर आकांक्षाएँ उसकी श्वास को आसानी से निकलने नहीं देतीं । लगातार बोलते रहने से उसका दम घुटने लगा । आँखों के कोयों पर अश्रुकण चमक उठे । जैसे उसके मधुर वेदना भरी धड़कन के हिलोरों में बरस जाना चाहते हों । अंत प्रसंग में हल्का हल्का कम्पन था । गोपाल नर्स की ओर अबोध बालक की भांति विस्मय भरी दृष्टि से देखता रहा । उसके चेहरे पर सघन करुणा गहरी रेखायें उभर अन्तर की वेदना को साकार कर रही थी ।

जब वह बिल्कुल आश्वस्त हो गई तो बोली — "अब मेरे सिर में दर्द होने लगा है । मुझे आराम चाहिए । अब आप जा सकते हैं ।"

गोपाल उठा । उसका मस्तिष्क भारी था । विचारों की उथल-पुथल उसके मस्तिष्क में मची हुई थी । वह वहाँ रुकना चाहता था पर रुक नहीं सका । लाचार हो चलना पड़ा—धीरे-धीरे बिना सोचे किए ही ।

जहर, नारी और लाचारी —

किसी दार्शनिक ने कहा है कि किसी को दुख मत दो । रह रह कर मन मनाओगी । कहने से अच्छा है कि किसी का गला घोंट कर मार दो । गोपाल यह सोच ही रहा था कि कौशल ने पुकारा — 'गोपाल !"

जी" पलंग पर लेटे-लेटे ही कहा । कमरे का धुआं खिड़कियों में भर कर आ रही थी । मुझे मालूम नहीं इस आशा में जहर क्या मिला है । कौशल की करुणा भरी आँखें उसके चेहरे पर दम भर के लिए जम गई । फिर वह सीधा खड़ा करती हुई बोली आदमी आदमी को इस तरह क्यों मार लेता है ।"

विश्वनाथन — कौशल ! परिस्थितियों से लड़ते मानव का

परिणाम यही होता है। इसलिए मनुष्य को अपनी जवानी की जिन्दगी को देखना चाहिए। जवानी जिन्दगी का उपहास करती है और जिन्दगी भविष्य की सुन्दर परिधि का निर्माण करती है। सुनीता को यह विश्वास था कि मेरे जितने भी अपने हैं, वे जीवन भर अपने ही बने रहेंगे पर वह यह नहीं जानती कि पूंजी के युग में इन्सान इतना पतित हो चुका है कि यदि उसका बस चले तो वह मनुष्य की चमड़ी से निर्मित एक नई वस्तु का आविष्कार कर दे। उसके खून से किसी पेय पदार्थ की नवीन गवेषणा करदे लेकिन बेचारा विवश है। कौशल ! क्या मैं झूठ बोलता हूँ ? सुनीता जहर नहीं खाती तो उसकी लाश में कीड़े पड़ जाते कीड़ों से उत्पन्न दुर्गन्ध उसकी लाश को इन्सानी-हाथ का स्पर्श नहीं होने देती। मर गई तो उसका कल्याण हो गया।"—गोपाल की आँखों में कटु-यथार्थ बोध बन कर चमक उठा।

"कल्याण क्या बकते हो गोपाल ? किसी की जान जाय और तुम्हें बेपरवाही सूझे। तुम इन्सानियत से गिरते जा रहे हो ?" कौशल की आँखों में गुस्से के साथ थोड़ा पानी भी दीख पड़ा।

"मैं इन्सानियत से गिरता हूँ या नहीं पर सुनीता ने जो भी किया अच्छा ही किया। उसने जहर कितने मौके से खाया है ! वह अपनी इस लम्बी बीमारी में जान गई थी कि किसी ने आकर उसके दर्द में हाथ नहीं बटाया। किसी ने उसकी दवा के लिए एक पैसा भी उधार नहीं दिया। वह जान गई, सब स्वार्थ के पुतले हैं। मजे के साथी हैं लेकिन दुःख का संगी विरला ही मिलता है। इसलिए उसने अपनी बीमारी की भयानकता के बारे में सोचकर दुखान्त से बचने के लिए यह निर्णय किया होगा—अभी तो मुझे कमाये तक के जेवर मेरे पास हैं मेरी मिट्टी खराब हो इससे पहले मुझे मर जाना चाहिए। इसलिए वह मर गई।"

अब कौशल भी चुप हो गई। वह गोपाल की ओर विस्मित दृष्टि से देख रही थी जैसे उसकी स्थिर दृष्टि में उसके अठारहपन की गहरी

शिकायत हो। उसने निरुद्देश्य हो अपने रूखे-सूखे बाल-बालों में अंगुलियाँ उलझाई। शीशे में चेहरे को देखा और सहमती हुई भावुकता से धीरे से कह उठी—"सुनीता का गोरा बदन नीला हो गया था न ?"

"हाँ जहर के कारण।" गोपाल नीरस वैज्ञानिक की तरह उत्तर दे रहा था।

"होठों पर पपड़ी-सी भी जम गई थी न ?   गोपाल! तुमने तो देखे थे कि उसके होंठ कितने प्यारे थे।" कौशल की आवाज में भावुकता की वेदना की तड़प थी। वह उसके चेहरे पर पुन: आँखें जमाती हुई बोली— "और हाँ वह हँसती थी तो कितनी अच्छी लगती थी   दाँत भी उसके मोतियों जैसे सफेद और चमकदार थे न ?   गोपाल! जब वह बोलती तो जी चाहता था कि वह बोलती ही रहे। वह सुनीता मर गई उसने जहर खा लिया आत्महत्या कर ली   वह मर गई   ।" कौशल ने इस प्रकार चीत्कार किया जैसे उसके हृदय में दुःख का बाँध रुका पड़ा था और समय के साथ अपनी पूरी शक्ति से फूट पड़ा हो।

"संसार की यह परम्परा है कि मनुष्य मरने वाले के प्रति इतना सहृदयी बन जाता है कि उसकी समस्त बुराइयाँ अच्छाइयाँ दीखने लग जाती हैं।" गोपाल गम्भीरता से बोला।

"नहीं गोपाल नहीं वह वास्तव में बहुत अच्छी लड़की थी उसने कभी किसी का दिल नहीं दुखाया।" कौशल ने अपने आँसुओं को पोंछा। गोपाल ने बात का रुख बदलते हुए कहा—"अच्छा कौशल मैं अब चला मुझे बिस्तर बाँध कर आज ही दिल्ली छोड़ देना है। वह उठ खड़ा हुआ और खूँटी पर टँगे कपड़े ठीक करने लगा। कौशल उसके पास आकर अनुनय से बोली—"यदि तुम आज नहीं जाओ तो   ?"

"मुझे जाना ही पड़ेगा नौकर हूँ तो मेरी प्रत्येक इच्छा स्वामी के आधीन है मुझे जाना ही पड़ेगा।"

गोपाल अपने काम में व्यस्त रहा।

आज उसे दिल्ली आये एक हफ्ता हो रहा था। इस हफ्ते में उसने

नाटक की अभिनेत्री व नायिका कौशल के जीवन के क्या-क्या रहस्य जाने कि वह उसे रहस्यमयी समझने लगा। वह उसके अभिनय से इतना ही जान पाया कि वह नारी है जिसके सत्य के तथ्य से परिचित होने के लिए स्वयं जिज्ञासु को पतनशील बनना पड़ता है। वह कौशल उसके मित्र सरोज की नाम-मात्र की पत्नी है, या कहूँ पामर जानवर तो अनुचित नहीं होगा। जानवर इसलिए कि दो रोटी के टुकड़ों पर अपने महत्वपूर्ण जीवन को मिटा रहा है उस जीवन को जिस जीवन का प्रत्येक पल सांस की तरह अमूल्य है। गोपाल उसी रात दिल्ली से रवाना हो गया। गाड़ी छूटने के पांच मिनट पूर्व उसने कौशल की आंखों में एक भय देखा था। तड़प रही थी।

सुन्दर युवती, भयानक मौत —

सुनीता

“उसका चांद-सा मुखड़ा”

‘उसके प्यारे होंठ

“वह मर गई” ”

कौशल उचक कर अपने बिस्तरे पर बैठ गई। उसके गोरे ललाट पर स्वेद-कण उभर आये। सारा शरीर पसीना पसीना हो गया। अपने आंचल से अपना पसीना पोंछते हुए उसने सोचा— ‘इतनी सुन्दर युवती की इतनी भयानक मौत ऐसा क्यों ? एक सप्ताह में इतना परिवर्तन ! लेकिन क्यों ? इसलिए कि सुनीता का अपना कोई नहीं है ! है तो सही यमुना तो है उसका अपना सगा भाई। पर भाई ने राखी का मान नहीं रखी। निर्मम हृदयहीन होकर उसने सुनीता को उत्तर दिया था कि मैं ऐसी कुलटा के शव को छूऊँगा तक नहीं जिसका चरित्र पाप की सच्ची तसवीर है। वह भले मरती भाड़ मरे। और सुनीता ने जहर खा लिया। जहर ! जहर !! जहर !!!

कौशल के मस्तिष्क में यह शब्द ध्वनित-प्रतिध्वनित होने लगा। स्वेद कण पुनः उसके ललाट पर उभर आये। वह चीख पड़ी—सुनीता !”

आया ने आकर पूछा—"क्या बात है मेम साहिब ?"

"पानी ।"

आया ने दौड़कर पानी पिलाया । कौशल कुछ आश्वस्त हुई । रेशमी तकिये में अपनी गर्दन छिपाकर कौशल ने ज़रा अपने आप पर विचारा । उसका भी तो इस संसार में सब कुछ होते हुए कोई भी नहीं है । यदि उसका भी अन्त ? वह सरोज को कोसने लगी । भद्दी-भद्दी गंदी गंदी गालियाँ निकालने लगी । अपने हृदय का आक्रोश निकालकर उसने अपने आपको स्वस्थ किया ।

पूर्णमासी रस्सी और फन

पूर्णमासी की उज्ज्वल रात थी । जैसे-जैसे चन्द्र नील गगन में बढ़ रहा था वैसे-वैसे कौशल का आवेश कम होता जा रहा था । कभी-कभी वह पूर्णमासी की फैली हुई चाँदनी को देख कर अतीत की मधुर स्मृतियों में खो जाती थी । अचानक उसकी निगाह झूलती हुई रस्सी पर पड़ी । सांप था नहीं । वह उठी और उसके मस्तिष्क में सुनीता सहर सौन्दर्य और अवास्तविक आदि-शब्द गूँज रहे थे । वह उठी और उसने दुख की कल्पना में भावातिरेक एवं उन्मादित होकर रस्सी को फणि का रूप दे दिया ।

मृत निर्जीव मछली

मेरी कहानी की नायिका "मछली" बराबर एक जलहीन मछली के जो तड़प-तड़प कर निर्जीव बन जाती है । एक दूसरी सुन्दर नारी की भयानक मौत होती है । "मधुरा" इन दिनों किसी नाटक कम्पनी की नई हीरोइन के प्रेम में मग्न रहता है । मधुरे का कमीनापन नारी की मौत पर आँसू नहीं बहाता । आदमी कुत्ता हो जाता है । मधुरा बुद्धिहीन जानवर हो गया । यूँ आगे चालित यंत्र ! युग का हीन दृष्टान्त ! युग—नारी और अभिशाप ! आज का जलता जीवन ! कहानी और कहानीकार । हीरो और हीरोइन । इसके परे कुछ नहीं । यही कथानक यहीं खत्म हो गया !

कथा परिकथा

" "

सम्बोधन क्या करूँ ? एक अपरिचिता को सम्बोधन भी आसी से नहीं किया जा सकता है। लेकिन तीन पत्रों को भेजकर मैं कुछ-कुछ ऐसा समझने लगा हूँ कि तुम मुझसे और मेरी हरकतों से नाराज नहीं हो। तुम मेरी बातों का समर्थन करती हो।

सच, जबसे तुम इस मकान में आयीं हो मैं निरन्तर इस खिड़की की राह तुम्हारे भीने सौंदर्य के माधुर्य का दृष्टि द्वारा रसास्वादन करता रहा हूँ और मुझे लगता है कि वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मैं जिस 'मीनस' की खोज करता रहा हूँ, वह स्वतः ही मेरे पास आ गयी है। तुम ही मेरी कविता की सजीव प्रेरणा हो मेरी आराध्य और चन्द्र की पादेय हो। तुम्हें एक बार फिर याद दिला रहा हूँ कि मैंने तुम्हें तीन पत्र दिये हैं। तुमने वे तीनों पत्र पाकर अपने और मेरे घरवालों से किसी तरह की शिकायत नहीं की किसी तरह का विरोध-अवरोध नहीं किया तब मैंने समझा कि तुम भी मुझे उतना ही चाहती हो जितना मैं तुम्हें चाहता हूँ क्योंकि तुम्हारा मौन ही मेरे प्यार की स्वीकृति है।

तुम्हारा नाम क्या है मैं नहीं जानता। किन्तु मेरा ऐसा विश्वास है मेरी कल्पना का कहना है कि तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारा नाम गुलाब से कम क्या रखा होगा ? तुम्हें पाकर हर युवक अपने को धन्य समझेगा ? तुम मुझे अपनी ओर से स्वीकृति लिख दो। मैं समाज और संसार से टक्कर लेकर भी तुम्हें प्राप्त करूँगा।

एक बात और पूछना चाहता हूँ—तुम मुझे सदा खामोश और घुमी-घुमी नजर से क्यों देखती हो ? तुम्हारे रसीले अधरों पर मूकी

मुस्कान क्यों रहती है ? कभी-कभी मैं इन सब बातों को लेकर बड़ा परेशान हो जाता हूँ । लेकिन इस पत्र का उत्तर नहीं आया तो याद रखना मैं जहर खाकर आत्महत्या कर लूँगा । सोच लूँगा कि मैं किसी के लायक नहीं हूँ । मैं अभागा हूँ । मैं तुम्हारे पत्र का पूरे चौबीस घण्टे इन्तजार करूँगा । इस पर भी उत्तर नहीं आया और तुमने कोई गड़बड़ी की तो मेरी लाश तुम्हारी इस खिड़की के नीचे मिलेगी । मेरी मौत का सारा पाप सारी जिम्मेवारी तुम्हारी होगी । बस

तुम्हारे पत्र का प्यासा
नरोत्तम उर्फ 'कवि कमल'

कवि कमल को इस उत्तेजना व धमकी से भरे पत्र के उत्तर की आशा नहीं थी । वह सुबह सुबह ही अपने बरामदे में एक कापी और एक पेंसिल लेकर बैठ गया ।

जैसे ही बारह बजे वैसे ही उसकी नयी पड़ोसिन उसके सम्मुख उदास-उदास आकर बैठ गयी । आज उसने उसकी ओर देखा भी नहीं । कवि महाराज का दिल धक से रह गया । उसने सोचा कि आज इसने अवश्य उसके पत्रों को अपने बाप को दिया है । इस विचार-मात्र से उस के ललाट पर पसीना छूट गया । वह उद्विग्न हो गया । उसने झट से नीचे आँगन में जाकर देखा—उसका बाप बहियों में उलझा हुआ था । वह चुपचाप आकर बैठ गया । उसने सोचा कि अगर वह उसके पिता से कह भी देगी तो उसका क्या अहित होगा ? वह अपने पिता से साफ साफ कह देगा कि वह उससे ही विवाह करेगा, वह उसके बिना नहीं रह सकता अगर उसकी शादी नहीं हुई तो वह सचमुच आत्महत्या कर लेगा । उसके चेहरे पर फिल्मी प्रेमी की तरह कृत्रिम दृढ़ता छायी और वह अकड़ कर गुलाब को देखने लगा ।

तभी एक कागज गोलाकार में आकर उसके बरामदे में पड़ा । उसने लपककर उसे उठाया । उसकी बाछें खिल गयीं । शरीर में जान आ गयी । उसने पढ़ा—

कमल जी,

मैं आपकी धमकी से डर गयी हूँ। मुझे लगा कि आप सचमुच आत्म हत्या कर लेंगे और आप की लाश मेरी खिड़की के नीचे पड़ी मिलेगी। इस दुष्कल्पना मात्र से मेरा खून बरफ़ की तरह जमने लगा और मैंने आप के पत्रों का उत्तर देने का निश्चय किया है।

मेरा यह पत्र आप को मेरे बारे में सही जानकारी देगा और मैं समझती हूँ कि आप इसके बाद अपना इरादा बदल लेंगे। मैं बहुत अभागी हूँ इसलिए मेरे बाप ने मेरा नाम 'बिम्बा' रखा है। बचपन में मैं अपनी माँ को खा गयी ऐसा सभी कहते हैं। मेरी बातूनी मौसी का कहना है कि मेरे चरण जहाँ भी पड़ते हैं वहाँ अनिष्ट अवश्य होता है। कहीं आपका यह 'पारिजात' सुमन की जगह अंगारों की चमन न फैला दे यह विचारणीय प्रश्न है। अस्तु।

मैं आप को कुछ बातें बताना चाहती हूँ। पहली बात यह कि हमारे कस्बे में मेरे लिए उचित वर नहीं मिला तब मेरे पिताजी मुझे यहाँ ले आये। यहाँ मेरे लायक कोई न कोई लड़का मिल ही जायेगा। पर आप के पत्रों ने एक नयी समस्या खड़ा कर दी है। मैंने आपके पहले पत्र को एक कवि का प्रलाप ही समझा था पर आपकी मरने की धमकी ने मुझे विचलित कर दिया और मुझे आपको पत्रोत्तर देने के लिए बाध्य होना पड़ा क्योंकि ऐसी जल्दी से घटने वाली घटनाएँ या तो फिल्मों में ही होती हैं या सस्ते उपन्यासों में ही। पर आपको देखकर मुझे कुछ नयी अनुभूति हुई है कि ऐसी घटनाओं में सत्य अंश होता है। जब कभी मैं आपको पा जाऊँ तो अपने आपको धन्य समझूँगी। मैं कल से बहुत खुश हूँ। मुझे भी आप पसन्द हैं। दोनों की पसन्द का परिणाम क्या होगा यह हमें पहले ही जान लेना चाहिये क्योंकि समाज बड़ा निर्दयी है। समाज हमारी ओर आँखें उठाये, उँगली उठाये इसके पहले ही आप जरा साहस करके अपने पिताजी से हमारे विवाह के बारे में बातचीत पक्की कर लेनी चाहिए। मैं आपको एक बात और बताती

हूँ कि मेरा बाप इस रिश्ते के लिए कभी ना नहीं करेगा ।

अब मैं आपसे अपने बारे में कुछ कहना चाहती हूँ । मैं तेज बुद्धि की एक साधारण पढ़ी लिखी लड़की हूँ । अंग्रेजी में केवल सी एच आई एन टी ए' ही लिखना जानती हूँ । हाँ घर के प्रत्येक काम में आप मुझे बी० ए० और एम० ए० तक की उपाधियाँ बिना किसी हिचकिचाहट के दे सकते हैं । मुझमें एक और विशेषता है जो आप को लड़कियों में नहीं मिलेगी वह है आय के अनुसार घर का बजट बनाना । उस बजट में अल्प बचत योजना भी शामिल है । आप कवि हैं और मैंने सुना है कि कवियों को 'बकबक' करने की बहुत आदत होती है । वे बात-बात में अपनी शायराना उक्तियाँ कहते रहते हैं जो मुझे कतई पसन्द नहीं हैं । मुझे गम्भीर आदमी अच्छे लगते हैं बकवादी और बातूनी नहीं । मैं बोलना चाहती ही नहीं । क्या आप ऐसी गूँगी लड़की को अपने सपनों की रानी बनायेंगे ?

देखिये, पत्र मुझे दोपहर तक मिल ही जाना चाहिए ।

—बिन्दा

कमल ने उसी पत्र का उत्तर लिखा था

मेरी प्यारी बिन्दा

तुम्हारा पत्र पाकर मेरे मन मन्दिर में बुझे हुए सहस्र दीप जल उठे । मुझे ऐसा लगा कि मेरा मन उन प्रसन्न लहरों पर अठखेलियाँ कर रहा है जो तुम से प्रणय-स्पर्श करने के लिए आकुल रहती हैं । मैं आत्महत्या का विचार भी अब अपने मन में नहीं लाऊँगा । कौन ऐसा बदनसीब इन्सान होगा जो तुम्हारा प्रणय पाकर मरना चाहेगा ? बिन्दा मैंने तुम्हारा नाम गलती से गुलाब रख दिया है अब अपनी भूल सुधार करता हूँ । तुम तो बहार हो वीराने की बहार क्योंकि तुमने मेरे नीरस जीवन में बहार ला दी है । मेरे अरमानों में उस आग को जन्म दिया है जिस आग से दिल के फूल खिलते हैं ।

मैं अपने बाप से आज ही अपने विवाह के बारे में कहूँगा । तुम्हें

मेरा कहना मानना ही पड़ेगा। तुम्हें नहीं मालूम कि मैं अपने बाप का इकलौता बेटा हूं और मेरी मां का भी देहांत हो चुका है ऐसी स्थिति में वे मेरी बात नहीं टाल सकते।

मुझे पढ़ी लिखी लड़की की जरूरत ही नहीं है। प्रायः मेरे जैसे भावुक हृदय के युवक के लिए बहुत पढ़ी-लिखी लड़की एक समस्या और सिरदर्द बनकर रह जाती है क्योंकि आज की शिक्षित लड़कियों में श्रद्धा और भक्ति की जगह तर्क और विवाद की शक्ति अधिक होती है तथा वे पतियों के कामों म खामियां निकाल कर यह बताना चाहती हैं कि हम विद्वान हैं हम प्राण से हार नहीं मान सकतीं वगैरह वगैरह।

और तुम्हारा निरन्तर मौन मेरे लिए महान वरदान ही समझो। तुमसे यह कहते हुए मुझे संकोच हो रहा है (संकोच का कारण अपने मुंह अपनी तारीफ) कि मैं एक विशिष्ट गीतकार हूं बालेजों में मेरा ऊंचा स्थान रहता है। गीतों की मेयता और मौलिकता पर विशेष ध्यान देता हूं। और यह सब तभी संभव है जब मैं घटों ही चिन्तन-मनन के सागर में गोते लगाता रहूं। एक गृहस्थ के लिए यह तभी संभव हो सकता है जब उसकी पत्नी वाचूनी न हो। सच मेरी बहार, तुम मेरे मनोनुकूल निकलती जा रही हो। अगर सारी दुनिया भी हमारा विरोध करेगी तो भी मैं तुम्हें प्राप्त करूंगा। —कमल

कवि जी

आपका पत्र मिला। आपने जिस आत्मीयता और दृढ़ता का परिचय दिया है उससे मुझे बल और सम्बल दोनों मिल रहे हैं। मुझे पहले ऐसा महसूस होता था कि मुझे कभी भी अपने लिए एक अच्छा पति नहीं मिलेगा पर अब मेरे मन के विश्वास बदल रहे हैं। मैं अभागी से सुभागी बन जाऊंगी। मुझे एक अच्छा वर, सुन्दर पति मिल जायेगा।

अब मैं आपसे एक आखिरी सवाल पूछना चाहती हूं। क्या आप शरीर के सौन्दर्य को अधिक चाहते हैं या आत्मा के ? मान लीजिये, कल मुझे अचानक चेचक निकल आये और मैं बदसूरत हो जाऊं। मेरा यह

गोरा रंग सुडौल कपोल गहरे दागों से भर जायें या मुझे कोई ऐसी बीमारी लग जाये जिससे मेरा उफनाता हुआ यौवन वर्षों से रुग्ण और बुढ़िया की तरह शांत व निर्जीव हो जाये तो भी क्या आप मुझे इतना ही उत्तमतापूर्ण प्यार करेंगे ? मुझे इस सवाल का जवाब तुरन्त दीजिये।

—बिन्दा

प्रिय बहार,

तुम्हारा सवाल काफी विचारपूर्ण है। आदमी के प्रेम के असली नकली रूप को प्रकट करने वाला है। आत्मिक और शारीरिक प्रेम में मैं तो आत्मिक प्यार को ही सर्वोपरि मानता हूँ। इस प्रेम में स्वाधीनता और त्याग की भावना रहती है। मैं तुम्हें चाहता हूँ पर इससे भी अधिक चाहूँगा तुम्हारी आत्मा को। अब मेरी अधिक परीक्षा न लो। मैं अब यह मान चुका हूँ—प्यार किया नहीं जाता हो जाता है। बस अब मैं अधिक देर तक इस गमी का फासला नहीं सह सकता। तुम बोलती क्यों नहीं, एक बार तो पुकारो मेरे 'कमल'।

—कमल कवि

कमल जी

पत्र मिला, उत्तर दो दिन के बाद दे रही हूँ। यह रिश्ता हो इसके पहले मैं आपको एक कटु सत्य से परिचित कराना चाहती हूँ। गलत-फहमी छल कपट और छिपा रहस्य या झूठा प्यार भी उम्र का अन्त कर देता है और शेष जीवन में जहर और घृणा भर देता है। मैं आपसे ऐसी आशा रखती हूँ कि यह कटु सत्य आपके हृदय के प्यार में कमी नहीं आने देगा और न आप अपने आदर्शों से ही हटेंगे।

यह सही है कि मेरा मौन आपके चिन्तन मन में उमड़ा चिर-सहयोग देगा कि आपकी कविताएं एक दिन विश्व-व्यापी ख्याति अर्जित कर लेंगी। मैं आप से जीवन भर नहीं बोलूँगी। आप यह अच्छी तरह जानते हैं कि मैं इसी बरामदे में मौन बैठी रहती हूँ। क्यों ? इसलिए आप अपने

हुए स्वर में बोला "आप मुझे क्षमा कर दीजिये।"

विश्वनाथ ने खिलखिला कर कहा "यह शुरू से ही ऐसी नटखट और शैतान रही है। आजकल के मजनुओं फरहादों, रोमियों को यह खूब सबक देती है। मेरी तो इसने अग्नि परीक्षाएं ।"

बीच में सरिता ने कहा "मैं चाय लेकर अभी आयी।"

'क्या यह सरिता वही लेखिका है,' कमल ने मन ही मन कहा, जिसकी कहानियाँ आजकल बड़ी लोकप्रिय हो रही हैं? और उसके भाल पर पसीना आ गया।

दार्शनिक

अपार भावुकता भरी दृष्टि से सागर और उसमें उठती लहरों को देखकर कह रहा था "शील ! देखो न सागर के सौम्य कूल पर टकराने वाली इन चंचल लहरों को कितनी भावुकता से आकर चूमने को स्पर्श करती है और पुनः चली जाती है। लेकिन इस मौन प्रेमी किनारे को देखो जो दिन प्रतिदिन अपना अस्तित्व मिटा कर भी इनसे दूर रहना चाहता है। कैसा विचित्र प्रेम है ? —और वह एक गम्भीर हँसी हँस कर उसी स्वर में बोला— इसलिये मेरा अपना मत है कि मानव को हमेशा शारीरिक भूख लिप्सा से दूर रहना चाहिये ताकि वह अपना अस्तित्व न खोने में समर्थ हो सके और इसीलिये मैं आध्यात्मिक प्यार में विश्वास रखता हूँ।"

शील देखना भरी मुस्कुराहट के उपरान्त दोषारोपण करती हुई बोली— "फिर आपने मेरे जीवन से खेलने का साहस क्यों किया ? किसी भी पत्थर की निष्प्राण मूर्ति से यदि आप प्यार कर सकते थे किसी भी चित्र को अपनी आध्यात्मिक प्रेमिका बना कर अपने हृदय की भावनाओं-कामनाओं को तृप्त कर सकते थे अथवा वृक्ष नदी लहरें आदि वस्तुओं को अपनी मानसिक प्रवृत्तियों का प्रतीक मान कर अपने मन की व्यथा भुला सकते थे ? फिर मेरे जीवन को विनाश की आग में ही क्यों ढकेला ?

"मैंने ... ? मैंने तुम से विवाह जरूर किया था मेरी आत्मा इसकी साक्षी है कि तुम मेरी पत्नी हो। —मैं तुम से प्यार अब भी करता हूँ लेकिन तुम्हारे शरीर से नहीं। जाओ सो जाओ और हाँ भीतर से दरवाजा अच्छी तरह बन्द कर लेना।"

"क्यों ?"—प्रश्न भरी दृष्टि से शील ने पूछा।

' ~ हाँ बस कह दिया न, बन्द कर लेना" फिर कुछ रुककर बोला, तुम हार गुथा रख सकती हो गुथा रख सकती हो।"

वह चली गई।

विवाह के उपरान्त शेखर की मानसिक स्थिति विचित्र हो गई। सुहाग रात को सुमनों से महकती सजी शैया पर बैठी दुल्हन शील को आलिंगन में आबद्ध करते-करते न जाने क्यों वह एकाएक छोड़कर चला गया यह शील आज तक नहीं जान सकी। फिर एकाएक अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर दूर बहुत दूर चला गया। शील को बराबर कलकत्ते से रुपये भेजता रहा। शील आग्रह करती रही कि मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ पर शेखर ने उसे पास फटकने ही नहीं दिया, पता नहीं क्यों? फिर एक दिन उसने दफ्तर की स्टेनो-टाइपिस्ट मिस रोजमबरी के गाल पर उसके घर में तमाचा मार दिया।

रोजमबरी उसे अपने घर ले गई थी। उसे प्यार भी करती थी। पर एकाएक शेखर का यह बदला रूप पाकर वह डर गई और उसने सारे दफ्तर में इस बात की चर्चा कर दी कि शेखर बाबू का माथा खराब है। वह किसी से प्यार नहीं कर सकता। चर्चा जोर पर चली और शेखर की नारियों के प्रति अपनी सूक्तियाँ जब उसके मालिक ने सुनी तब उसने शील को पत्र लिख दिया, 'शेखर बाबू एम० ए० इन डिप्लोमेसी का मस्तक आज कल ठीक काम नहीं कर रहा है। आप इन्हें यहाँ से शीघ्र ले जाइये।'

शील गई और शेखर को वापिस घर ले आई।

शेखर विक्षिप्त-सा होगया। कुछ देर तक मौनावस्था में निस्तब्ध बैठा रहा। फिर मेज की दराज से शतरंज निकाल कर अकेला ही खेलने लगा। एकाएक उसकी दृष्टि सामने वाली दीवार पर अंकित एक सर्पासिनी के चित्र पर पड़ी जो वैसे वसन पर पहने हुए भी नग्न थी

और जिसकी आँखों में लालिमा छाई हुई थी। उस चित्र में एक झोंपड़ी का दृश्य था जिसके द्वार के समक्ष एक योगी बैठे हुए थे। यौवना नत मस्तक मार्ग तय कर रही थी। एकाएक डेगर चिल्ला उठा "सच! तुम वास्तव में पूजनीय हो। पुरुष की ओर दृष्टि भी नहीं उठाती। इस वर्ष की आयु में यह वीतराग धन्य-धन्य और जरा डीम को देखो, मुझ से सम्भोग के लिये प्रतिक्षण आतुर रहती है, लेकिन मुझे इस पापमय हृदय से घृणा है।"

तभी उसे किसी की पदध्वनि सुनाई पड़ी। उसने भागकर दरवाजा बन्द कर लिया। डीम ने बाहर से पुकारा—"तुम असमय किससे बात कर रहे हो?"

डेगर गर्व से बोला— चुप! मैं अपनी सच्ची संगिनी से वार्ता कर रहा हूँ। तुम अभी जाओ जाओ।

डीम उसके इस व्यवहार से तड़प उठी। वह जानती थी कि भावुकता अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच चुकी है शायद उसका पति पागल है या हो जायेगा। लेकिन डेगर कहता ही जा रहा था। 'हमारे देश का आध्यात्मवाद अमर है। विश्व प्रसिद्ध है। कितने ही महान् योगीराज इसकी अमर साधना करते करते निर्वाण पा गये और वे भौतिकवादी इसे निरा ढकोसला समझते हैं। बुद्धू कहीं के मूर्ख पामर।

'इसी भारत के बादशाह को देखा न, वह भी व्यापारियों से दूर रहता है और सर्वप्रथम उन्हें ही धंधे लगाता है क्योंकि वह जानता है कि ये व्यापारिणी स्त्रियाँ हैं इनमें भौतिक प्रेम की बू आती है और बादशाह? हाँ! गाँधी भी तो राष्ट्रपिता था बादशाह था, वह अपने आश्रम में युवतियों को रखता था?— वह आध्यात्मवादी था"—और डेगर दोनों हाथों से अपना सर पकड़ कर बैठ गया। बैठा ही रहा रात के दो बजे तक। डीम बड़ी परेशानी से सुराख में से डेगर की हरकत को देखकर बाहर चक्कर लगा रही थी।

"समझा" —डेगर हठात् उठा—"समझा बापू युवतियों में आध्या

त्मिक भावना भरना चाहता था। वह उनका और अपना आत्म-निरीक्षण करता था। उन्हें भी जीवन के सत्य-दर्शन से मिला कराना चाहता था। और मुझे भी ऐसा कल्याणकारी मार्ग ग्रहण करना चाहिए। मुझे भी आज की इन चपल छात्राओं को भारत के प्राचीन आध्यात्म वाद से परिचित कराना चाहिए। कल मैं भी एक सभा का आयोजन करूँगा। । उसमें हजारों युवतियाँ होंगी। मुझे लोग पुष्पमालायें पहनायेंगे। मेरी जयजयकार से गगन को गुंजा देंगे और तब मैं कहूँगा—' ऐसा कहकर टेबल पर खड़ा होगया और एक बार इस तरह कमरे को देखा जैसे उसमें हजारों युवतियाँ खड़ी हों। तब बोला "भाइयो और बहनों! इस भौतिक विज्ञान ने भारत के संस्कृति सूर्य को ग्रहण लगा दिया है। हमारी इस चमत्कारपूर्ण आध्यात्मिक शक्ति का ह्रास कर डाला है, हमें गहनगर्त में ढकेल दिया है। आज हमें फिर अपने उस युग की ओर चलना होगा जिस युग में हम गुफाओं में रहते थे, वल्कल पहनते थे मोह से दूर रहकर एक वीतरागी का जीवन बिताते थे।"

तभी एक पागल जो उसके कमरे के नीचे खड़ा था ज़ोर से हँस पड़ा और बोला—"पागल मैं पागल हूँ मैं अनर्गल बक रहा हूँ।"—और वह फिर ज़ोर से हँस पड़ा।

"खामोश! मैं बक नहीं रहा हूँ। और ऐसा कहकर एक ज़ोर का घूँसा मेज पर मारा जिसे सुनकर शीला घबरा गई और किवाड़ खटखटा कर पुकारने लगी—"भैया! आप आधी रात गये क्या कर रहे हैं? किवाड़ खोलिये सुनिये सुनिये।"

"मैं कहता हूँ तू खामोश रह। तू मेरे धर्म, मेरी सार्वजनिकता पर सन्देह कर रही है। सुनो भाइयो! आध्यात्म वह शक्ति है जिससे हम बड़े-से-बड़ा हृदय विजय कर सकते हैं। महात्मा गाँधी को ही लीजिये ।"

"तभी तो गोली से मरे।' जैसे लगा, ऐसा कोई कह रहा है।

"गोली से मूर्खो! अपने सिद्धान्तों के लिए मरना भी एक महानता एवं महत्व शक्ति का परिचय देना है। तुम नास्तिक हो, तुम्हारा सर्वनाश

हो जायेगा। तुम कुछ नहीं जानते ?

तभी शराबी जोर से हँसा—'हा हा हा हा।

'हँसो खूब जोर से हँसो पापियो! मुझे भी देखो कभी किसी नारी को स्पर्श तक नहीं करता हूँ। नारी नर का पतन है। शारीरिक भूख पाप है। मेरा दल आध्यात्मवाद का युग रहा है और मैं इसके पुरुषत्व की रक्षा करूँगा।

'यह एटम बम्ब पड़ा है बचो दुनियाँ के लोगो बचो नहीं तो मर जाओगे।' —शराबी फिर बोला।

'मैं नहीं मरूँगा। पीटर को लगा जैसे उसे कोई कह रहा है—'तुम मरोगे जरूर मरोगे।

मैं नहीं मरूँगा—मैं अमर हूँ।

क्षण भर के लिए शान्ति छा जाती है।

अचानक उसकी दृष्टि तपस्विनी पर जाकर पुनः रुकी। पीटर को लगा वह उसे देखकर हँस रही है। वह बड़े आर्द्र स्वर में कहने लगा—'तुम भी मुस्करा रही हो ? तुम तो मेरी हमदर्द हो। आध्यात्मवाद की पोषक हो ?

"मैं तुम्हारे आध्यात्मवाद को नहीं मानती।"—जीस बाहर से क्रोध भरे स्वर मे चिल्लाई।

पीटर भावुकता में लीन था। जोर से मुक्का मारता हुआ बोला तुम्हें मानना होगा तपस्विनी! तुम्हें मानना होगा। क्योंकि तुम हमारी समर्थक हो।"—उसने चित्र को वैसी दृष्टि से घूरा।

मैं तुम्हारे पागलपन की समर्थक नहीं हूँ।" जीस ने फिर कहा।

तुम नहीं मानती ? नीच पतित ... धोखेबाज!! और पीटर ने स्याही की दवात को दीवार पर दे मारा।

तोड़ दो सामान को, जला दो घर को लेकिन मैं अपने जीवन को तुम्हारी इस आध्यात्मिक आग में नहीं जलने दूँगी।—मैं तो अब हमेशा के लिए यहाँ से चली ... लो सम्हालो अपना घर-बार।"—

चीख बाहर से चिल्लाई।

"चली कहाँ ?—मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगा कभी भी नहीं जाने दूँगा। तपस्विनी ठहरो ठहरो तपस्विनी।'

'नाथ' 'नाथ' !!

"तपस्विनी" "तपस्विनी —शोर देकर खिड़की की राह कूद गया।

चीख चीख मार कर बेहोश हो गई।

खिड़की के नीचे उत्ताल तरंगों के साथ बहता हुआ समुद्र था जो गरज कर क्षण भर के लिए शान्त होगया था और उस नीरवता में किसी की सिसकियाँ सुनाई पड़ रही थीं।

विश्वामित्र की खोज

पन्द्रह अगस्त का दोपहर का समय था। लाल किले के तोरण द्वार पर दृष्टि एकटक ब्रह्मा, विष्णु और महेश व्याकुलता से प्रतीक्षारत नयनों से दूर सड़क पर देख रहे थे।

धूप तेज थी। महेश ने विष्णु भगवान के दुपट्टे का परदा कर लिया था पर धूप का ताप उस झीने दुपट्टे से नहीं रुक रहा था। सब परेशान थे सब चिंतित थे दुखित थे।

अन्त में झल्ला कर ब्रह्माजी ने कहा, "यह विश्वामित्र महान बहुरूपिया है। भगवान जाने बिना कहे-सुने कहाँ गायब हो जाता है! और उधर महात्माजी समस्त साधुओं का संगठन कर के स्वर्ग में मांग कर रहे हैं कि हमें हमारा विश्वामित्र चाहिए। अलौकिक है य परेशान करने वाले आधुनिक विरोध। यह न करें तो हड़ताल वह न करें तो सत्याग्रह। कमबख्तों ने नाकों-दम कर रखा है।"

तभी बैंड बजने की आवाज आई "जन गण मन अधिनायक जय है ..."

विष्णु ने तुरन्त एक डोरी में अंकुश बांध कर नीचे लटका दिया। उनका कहना था कि वह होली में बच्चों की तरह इस अंकुश से प्रधान मंत्री की टोपी ऊपर खींच लेंगे। जब वह यह चमत्कार देखेंगे तो तुरन्त ऊपर आएँगे। तब उनसे मांग की जाएगी कि हमें हमारा विश्वामित्र दो स्वर्ग से भाग कर मृत्यु लोक में छिपा बैठा है वरना आगामी चुनाव में आपकी पराजय निश्चित है।

तभी 'नारायण ! नारायण !' की ध्वनि अलापते नारदजी पधारे। आज उनका रंग ही बदला हुआ था। हवाई शर्ट रेशमी पैंट, मंद

मुँह और गले में इंगलैंड की बनी हुई टाई। हाथ में वीणा की जगह वायलिन। केवल उनका सिर मुण्ड ही पहले जैसा था वरना इस कलि काल में उन्हें पहचानना अत्यन्त कठिन हो जाता, क्योंकि एक चेहरे के कई आदमी देखने को जो मिलते हैं।

त्रिदेवों ने एक साथ शीघ्रता से पूछा: "क्यों नारद, विश्वामित्र का पता चला?"

"चल गया महाराज चल गया।"

"कहाँ पर?"

"बता रहा हूँ बता रहा हूँ जरा सुस्ताने तो दीजिए।" यह कह नारदजी लम्बी-लम्बी साँस लेने लग गए।

"अति आनन्द! अति आनन्द! नारद को कोटिशः धन्यवाद।" यह कह कर भगवान शंकर ने अपनी चिलम निकाल कर अभिमान से कहा, 'इस प्रसन्नता की बात पर दो दम गांजे के लग जाएं।'

नारदजी ने तुरन्त शंकर की ओर मुंह से देखा—"आप इस पुरानी चिलम के पीछे क्यों पड़े हुए हैं! लीजिए, यह सिगरेट पीजिए।" नारद जी अंग्रेजी में बोले।

"हरे! हरे! हरे! यह क्या कहा जाता है तू? यह तो म्लेच्छों की चीज है। इसे छूना भी महापाप है। रखो इसको दूर रख। और तू विदेशियों की भाषा बोलता है? तेरे जैसे व्यक्ति ही राष्ट्रभाषा के उत्थान में रोड़ा अटका रहे हैं।" भगवान शंकर ने अपना मुँह दूसरी ओर घुमा लिया।

नारदजी ने अपनी सफाई पेश की "वर्तमान युग में भारतीय मानने वाला दैहाती कहलाता है उसे लोग घृणा की दृष्टि से देखते हैं। और फिर आप तो समदृष्टि रखने वाले हैं।"

"सो तो है ही!" शंकरजी गुर्रा उठे। "पर सब पर नहीं, केवल अपनों पर। समझे? हमारी चिलम ही अच्छी हम तो गांजा ही पियेंगे।"

भगवान ने नारदजी को समझाया "व्यर्थ में समय नष्ट करना हम बड़े देवों के लिए श्रेयस्कर नहीं है, नारदजी। आप विश्वामित्र के बारे में अपनी विस्तृत विज्ञप्ति उपस्थित करें।"

नारदजी सिगरेट का कश नाक से खींचते हुए बोले "मेरे आदरणीय देवो, सर्वप्रथम मैं शपथ ग्रहण करता हूँ कि जो कहूँगा वह सत्य ही कहूँगा।"

"हमें तुम्हारा विश्वास है। ब्रह्माजी ने कहा।

"मैं विश्वामित्र को ब्रह्मांड में ढूंढता-ढूंढता बीकानेर शहर में पहुंचा" नारदजी ने कथा प्रारम्भ की। यह शहर रेगिस्तान के मध्य में स्थित है और बड़ा ही शुष्क है। भांति भांति के लोग यहां निवास करते हैं और भांति-भांति के धंधों में लोग मग्न हैं।

"मैं भी भ्रमण करता-करता कचौरीबाजार में पहुंचा। देखता हूँ कि शहर में एकाएक अद्भुत हलचल मच गई है। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कहीं से अत्यन्त शुभ समाचार मिला है।

शंकर ने अपने गले के सांप का मदहोशी की अवस्था में चुंबन ले कर कहा 'अरे नारद समाचार क्या होगा—किसी राजा के लड़का हुआ होगा।

'नहीं।'

"नहीं तो किसी रानी के हुआ होगा।"

"नहीं।"

'तो किसी राजकुमार के हुआ होगा।"

नहीं नहीं नहीं।" नारदजी झल्ला पड़े।

"फिर हमारी समझ में किसी दासी के हुआ होगा। क्यों ब्रह्माजी?"

'सत्य वचन है, शिवशंभु। ब्रह्माजी की आंखें सिगरेट पर जमी हुई थीं।

सत्य नहीं है जो मैं कह रहा हूँ" नारदजी ने अपने गले की टाई को कुछ ढीला कर के कहा "मैं इसका कारण बूझने लगा कि मेरी नासिका के रन्ध्रों में सेब की भीनी भीनी नमकीन सुगंध आई। सेब क्या थे—उसे मेवा ही जानिए। मेरे मुँह में तो पानी आ गया।"

भगवान शंकर खिलखिला कर हँस पड़े। 'पानी भर आया तो खरीद क्यों नहीं लिया ?

"बजट समाप्त हो चुका था। यह लक्ष्मी भी तो भगवान विष्णु के घर में ही तो है। हमारे मन की तो मन में ही रह गई। वह कमबख्त दुकानदार ने मेरा सूटबूट देख कर मेरे मन के भाव को तुरन्त ताड़ लिया कि इस साहब के पास लन्दन-ओपाल है और कुहक-कुहक कर मर्दन स्वर में अलापने लगा :

"बाबूजी की शान निराली
दिल भी खाली जेब भी खाली।
फिर भी अकड़ दिखाए
हो बाबूजी समझ न पाए।
सारे लप्पा सारे लप्पा सारे रप्पा "

नारदजी झूम झूम कर गा रहे थे। उन्होंने जैसे ही गाना बन्द किया वैसे ही त्रिदेव खिल्ला पड़े "वाह, वाह वाह! ऐसा मस्त सुन्दर गीत हम ने किसी युग में नहीं सुना। सरल शब्दावली, स्पष्ट भाव और छलकती हुई तान। वाह वाह!

"भाई नारद" ताण्डवकारी शिव झूमते हुए बोले "यह गीत तो हमें भी सिखा दो। पार्वती सुन कर मस्त हो जाएगी।"

शंकर की बनावटी आवाज पर ब्रह्मा, विष्णु और नारदजी मुस्करा पड़े। शंकर उन्हें देख कर झेंप गए।

"झेंपने की कोई आवश्यकता नहीं है" नारदजी ने कहा। "यह

गीत ही ऐसा है। इसमें जनता-जनार्दन के मनोभाव हैं। यहाँ के फिल्म निर्माताओं का कहना है कि इससे भारतवर्ष के बच्चों का नैतिक पतन कभी भी नहीं हो सकता। हाँ तो मैं उस दुकानदार की बात कह रहा था। उसी समय एक व्यक्ति ने आ कर उस दुकानदार से कहा 'सुना भोगिया, गोमे दरवाजे के बाहर एक महान योगी आया हुआ है। वह नौ दिन से समाधि लगाए है। उस के दोनों हाथों में कुमार उग आया है। चलो हम भी दर्शन कर आएँ।

जरूर, जरूर। ऐसे महात्माओं के दर्शन इस कलिकाल में कहाँ होते हैं! मैं अभी दुकान बन्द करके तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

नारदजी ने कहा "मेरी भी जिज्ञासा जाग्रत हुई। मैं भी उस ओर धीमता से चरण उठाता हुआ चल पड़ा।"

गोमे दरवाजे के बाहर एक बगीची थी जहाँ मुख्य रूप से लोग सुबह शाम शौचादि से निवृत होने आते हैं। वहाँ एक गुफा में महात्मा ने डेरा जमा रखा था। उसके हाथ में वास्तव में कुमार उग आया था। एक आले में दीया जल रहा था उसका प्रकाश सीधे महात्मा के भाल पर पड़ रहा था। चमकता हुआ भाल उसके तप की महिमा गा रहा था। उसकी समाधिस्थ काया के सम्मुख माया को एकत्रित करने के हेतु एक बड़ी थाली रखी हुई थी जिसमें माया चमक रही थी।

"उस गुफा में दो दो व्यक्ति घुसते थे और शीघ्र ही उन्हें वापस लौट आना पड़ता था। मैं उस महान आत्मा की लीला का अधिक काल तक पुण्य उठाना चाहता था। इसलिए मैं ने शिवजी की दी हुई अदृश्यकारी अंगूठी मुँह में रख ली। अब मैं किसी को नहीं दीख रहा था और मुझे सब दिखाई पड़ रहे थे।

"थोड़ी देर बाद मेरी दृष्टि एक अत्यन्त रूपवती गजगामिनी मन भावनी पर पड़ी उसने रेशमी पीत वस्त्र पहन रखे थे उन पीत वस्त्रों में उसका पीत रंग इस भांति मिल गया था जैसे नीर में नीर। उसके

पाँवों के नूपुरों से मधुर संगीत-लहरी उत्पन्न हो रही थी। खंजन-से नयनों में रति के भावों-सी मादकता, आभूषणों पर अरुणिमा का लेपन, क्या कहूँ महाराज देखकर अपना मन भी पाप में पड़ गया।

ब्रह्माजी ने व्यंग्य किया "इस बार लंगूर बनने की इच्छा थी क्या?

नारदजी झेंप गए पर यह सोच कर कि पुरानी बातें पुनः शुरू न हो जाएँ उन्होंने कहना जारी किया "वह युवती अत्यंत भावभक्ति से योगीराज के दर्शन करते-करते उसने ज्यों ही उसके पाँव छुए त्यों ही योगी ने अपनी आँखें खोल दीं।"

आश्चर्य! विष्णु नारदजी की ओर फटी हुई आँखों से देख कर आप बोले। "पाखंडी कहीं का!"

'यह आरोप उस पर मत लगाइए। यह तो उसके जन्मजात संस्कारों का प्रभाव है।"

'कैसे? विष्णु ने पूछा।

'पहले पूरी घटना तो सुनिए।" नारदजी आश्वस्त हो कर बोले। "उस समय गुफा में कोई अन्य प्राणी नहीं था। युवती उन अलौकिक आत्मा के चरणों को दबाती रही। तब साधु ने नाभुवाणी स्वर में कहा 'देवी! मैं ब्रह्मज्ञानी हूँ साक्षात् ईश्वर हूँ। अभी मेरा मन स्वर्ग में विचरण कर रहा था पर तुम्हारे हृदय की कामना ने हमारी समाधि को भंग कर दिया है तुम्हें क्या दुःख है?

'युवती का अंग प्रत्यंग पुलकित हो उठा। अधरों पर मंद मुस्कान लाती हुई वह धीरे से बोली 'प्रभु मैं एक लखपती की अत्यंत लाड़ली बहू हूँ। जीवन का हर सुख मुझे है पर न जाने किस पाप के कारण मैं बाँझ हूँ। भगवान मैं पुत्र का मुँह देखना चाहती हूँ। उसके बिना मेरा जीवन नरक के समान है।"

"आश्चर्य! योगी ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखें फाड़ कर फटे स्वर में कहा— तुम जैसी सती नारी के संतान न होना महान आश्चर्य की बात

है। देवी, मैं अपने ब्रह्म-तेज से पुराणारिणी के भी संतान उत्पन्न करा सकता हूँ।'

"महाराज यदि मेरे संतान हो गई तो मैं आपको मालामाल कर दूँगी। अपने पुत्र का नाम आपके नाम आपके नाम पर साधु ही रखूँगी।" यह कर युवती साधु के चरण और से दबाने लगी। साधु को रोमांच हो रहा था। उसे गुदगुदी भी हो रही थी।

'जरा और जोर से दबाओ तुम्हारा कल्याण होगा कल्याण होगा दबाती जाओ। उत्तेजना के मारे योगी की आवाज काँप रही थी युवती उस विचित्र दृष्टि से देख रही थी बड़ी मुश्किल से योगी ने अपने को सँभाला जरा हट जाओ हाँ अब ध्यान दे कर सुनो मैं वह प्रचंड तेज वाला ऋषि हूँ, जिसने एक अप्सरा को जिसे आजकल वेश्या कहते हैं एक ऐसी पुत्री का वरदान दिया जिसका बेटा चक्रवर्ती सम्राट बना।

'सारी पृथ्वी का राजा!' युवती की आँख आश्चर्य से स्थिर हो गईं।

हाँ।

'वह अप्सरा कौन थी महाराज ?

'योगी ने गर्व से कहा 'वह अप्सरा मेनका थी—इन्द्र की अप्सरा। उसी के लड़के के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा देवी

शंकर ने कहा "पहचान गए नारद पहचान गए उस निठल्ले को।"

ब्रह्मा ने तेज स्वर में कहा, "मैं तो पहले ही जानता था कि वह किसी सुन्दरी के चक्कर में होगा।"

नारदजी ने उन दोनों को चुप कर के कहा विश्वामित्र ने कहा 'हे सुन्दरी आज रात को जब समस्त भक्त यहाँ आना बंद कर दें तो तुम आना। हाँ एक बात का ध्यान रखना कि विश्वामित्र की कथा को गम्भीरतापूर्वक पढ़ कर आना।' इसके बाद विश्वामित्र ने उसे चेतावनी दी 'यदि तुमने किसी से भी यह कह दिया कि योगीराज ने मुझे य

धार्ती की है तो हम तुम्हें भयंकर शाप दे देंगे जिससे तुम्हारे कभी भी सन्तान नहीं होगी।

"युवती ने एक बार फिर उसके पैर दबाए और चली गई।'

इस कथा में सबको आनन्द आ रहा था अत: निदेव अपने मन के झंझा को रोके कथा सुन रहे थे, नारदजी सिगरेट खतम कर चुके थे उसे बुझाते हुए उन्होंने पुन: कहना आरंभ किया

मैं अपने हृदय के बवंडर को नहीं रोक सका। मैं ने उस अंगूठी को मुँह से बाहर निकाला और विश्वामित्र का कंधा पकड़ कर प्यार से पूछा 'महामुनि' इस सेवक को पहचाना?" चौंक कर विश्वामित्र बोले, "कौन—नारद भाई! तुम यहां कैसे?"

"भाई, तुम्हें खोजने। तुम कैसे यहां मौन हो गये थे?"

"ओर! मैं तो जहां सौन्दर्य देखता हूँ वहां सर्वस्व विस्मृत कर के नाम जपता हूँ तुम तो जानते हो बंधु—राजा हूँ न अपने संस्कारों को शीघ्र नहीं त्याग सकता।"

"पर, भैया, तुम यह कैसे जान जाते हो कि आने वाली युवती सुन्दर है या नहीं?" मैंने उत्सुकता से पूछा। "तुम्हारी तो आँखें बन्द थीं।

विश्वामित्र ने हँस कर कहा 'मेरी पद्मपलकों के नीचे एक रस्सी बंधी हुई है। उस रस्सी को बाहर मेरा चेला जब दो बार खींचता है तो मैं इस रहस्य को जान जाता हूँ।"

"वाह भाई वाह! क्या ठाठ हैं तुम्हारे!"

"तभी तीन युवकों ने गुफा में प्रवेश किया। मैंने तुरन्त अंगूठी अपने मुँह में रखी और लोप हो गया। विश्वामित्र ने तुरन्त समाधि लगाई। वे लड़के बड़े उद्दण्ड और आवारा जान पड़ते थे। पहले उन तीनों ने योगीराज को भारतीय पूर्ण नमस्कार ठोंकी की उपमाएँ प्रदान कीं और अन्त में उन्होंने तय किया कि इस की दाढ़ी में आग लगा देनी चाहिए।

"यह सुनकर मैं तो सिर से पाँव तक काँप गया — आज योगीराज की खैर नहीं।

'विश्वामित्र और जड़ बनकर बैठ गए। लड़के धर्म-विरुद्ध चर्चा कर रहे थे। एक लड़के ने बढ़ कर थाली में से दस-दस के पाँच नोट उठाकर अपनी जेब में रख लिए। फिर बोला 'आज तफरीह जरा ग म से करेंगे।

'तभी दूसरे ने इधर उधर ताक कर विश्वामित्र की दाढ़ी को माचिस दिखा दी बस फिर क्या था! धुआँर फूँक कर साधु बाबा भागे लोगों ने समझा कि यह कोई साधु बाबा का चमत्कार है, इसलिए वे आग बुझाने की चिन्ता छोड़ हाथ जोड़ कर उनकी विनती करने लगे पर थोड़ी देर तक जब योगीराज का रोना चीखना बन्द नहीं हुआ तो लोग सत्य के तथ्य से परिचित हुए।

नारद जी ने विवेक की दृष्टि बचाकर अपने गालों पर थूक लगाकर आँसुओं का प्रदर्शन किया। फिर बोले 'शास्त्रों ने कहा है कि अब साधुओं की दाढ़ी में बीच-बीच में मच्छर रहेंगे यह सुनकर विश्वामित्र बच्चे की तरह बिलख पड़े।"

"रोने दो रोने दो जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल पायेंगे।"

'यह कितनी हेय बात है कि जहाँ नारी देखो वहाँ जप-तप भूलकर व्यभिचार करने उतर पड़े! हे राम!" ब्रह्मा ने पश्चाताप प्रकट किया।

विष्णु ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि नीचे से जोर की आवाज़ आई। 'पन्द्रह अगस्त जिन्दाबाद!" 'महात्मा गांधी की जय!' "हमारे नेता जिन्दाबाद!"

विष्णु भगवान गांधी जी की जय सुनकर पाँव पटक कर बोले "हमारा अपमान! हमारे होते [illegible] पृथ्वी के प्राणी की जयजयकार! हम गांधीजी पर मानहानि का मामला स्वर्ग में चलायेंगे कि देवताओं के होते हुए उनकी जयकार क्यों?"

पार्वा की है तो हम तुम्हें भयंकर शाप दे देंगे जिससे तुम्हारे कभी भी संतान नहीं होगी।'

'युवती ने एक बार फिर उसके पैर दबाए और चली गई।'

इस कथा में सबको आनन्द आ रहा था अतः निर्देश अपने मन के झंझा को रोके कथा सुन रहे थे नारदजी सिगरेट खतम कर चुके थे उसे बुझाते हुए उन्होंने पुनः कहना प्रारंभ किया

मैं अपने हृदय के बवंडर को नहीं रोक सका। मैं ने उस अंगूठी को मुंह से बाहर निकाला और विश्वामित्र का कंधा पकड़ कर प्यार से पूछा 'महामुनि' इस सेवक को पहचाना ?" चौंक कर विश्वामित्र बोले 'कौन—नारद भाई ! तुम यहां कैसे ?"

"भाई, तुम्हें खोजने। तुम कैसे कहां लोप हो गये थे ?"

'लोप ! मैं तो जहां सौन्दर्य देखता हूँ वहीं सर्वस्व विस्मृत कर ध्यान करता हूँ तुम तो जानते हो मेनु—दयार हूँ न अपने संस्कारों को शीघ्र नहीं त्याग सकता।"

"पर, क्या तुम यह कैसे जान जाते हो कि आने वाली युवती सुन्दर है या नहीं ?" मैंने उत्सुकता से पूछा। "तुम्हारी तो आँखें बन्द थीं।

"विश्वामित्र ने विहंस कर कहा "मेरी पद्मासन के नीचे एक रस्सी बंधी हुई है। उस रस्सी को बाहर मेरा चेला जब दो बार खींचता है तो मैं इस रहस्य को जान जाता हूँ।"

"वाह भाई वाह ! क्या ठाठ हैं तुम्हारे !"

"तभी तीन युवकों ने गुफा में प्रवेश किया। मैंने तुरन्त अंगूठी अपने मुंह में रखी और लोप हो गया। विश्वामित्र ने तुरन्त समाधि लगाई। वे लड़के बड़े उद्दंड और आवारा जान पड़ते थे। पहले उन तीनों ने योगिराज को पाखंडी धूर्त बकवादी ढोंगी की उपमाएँ प्रदान की और अन्त में उन्होंने तय किया कि इस की दाढ़ी में आग लगा देनी चाहिए।

"यह सुनकर मैं तो सिर से पाँव तक काँप गया — बाबा योगीराज की ओर नहीं।

'विश्वामित्र और वह जमकर बैठ गए। लड़के भल-विरुद्ध चर्चा कर रहे थे। एक लड़के ने बढ़ कर थाली में से दस-दस के पाँच नोट उठाकर अपनी जेब में रख लिए। फिर बोला बाबा तकरीह जरा प्रेम से करेंगे।

"तभी दूसरे ने इधर-उधर ताक कर विश्वामित्र की दाढ़ी को माचिस दिखा दी बस फिर क्या था! धुआँर फेंक कर साधू बाबा भागे लोगों ने समझा कि यह कोई साधू बाबा का चमत्कार है इसलिए वे आग बुझाने की चिन्ता छोड़ हाथ जोड़ कर उनकी विनती करने लगे, पर काफी देर तक जब योगीराज का रोना चीखना बन्द नहीं हुआ तो लोग सत्य के तथ्य से परिचित हुए।

नारद जी ने विदेश की दृष्टि बचाकर अपने गालों पर थूक लगाकर आँसुओं का प्रदर्शन किया। फिर बोले 'डाक्टरों ने कहा है कि अब साधुजी की दाढ़ी में बीच-बीच में गड्ढे रहेंगे यह सुनकर विश्वामित्र बच्चे की तरह बिलख पड़े।"

"रोने दो रोने दो जैसा कर्म करेंगे वैसा ही फल पाएँगे।

'यह कितनी हेय बात है कि जहाँ नारी देखो वहाँ जप-तप भूलकर पापाचार करने उतर पड़े! हे राम!" ब्रह्मा ने पश्चाताप प्रकट किया।

विष्णु ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि बीच से जोर की आवाज़ आई। 'पन्द्रह अगस्त जिंदाबाद!" "महात्मा गांधी की जय!" "हमारे नेता जिंदाबाद!"

विष्णु भगवान गांधी की जय सुनकर पाँव पटक कर बोले, "हमारा अपमान! हमारे होते हुए पृथ्वी के प्राणी की जयजयकार! हम गांधीजी पर मानहानि का मामला स्वयं में चलायेंगे कि देवताओं के होते हुए उनकी जयकार क्यों?"

नारदजी ने वायसराय के तारों को अनसमझा कर निवेदन किया "अब युग बदल चुका है अब उसकी जयकार होगी जो जनताजनार्दन में लम्बे भाषण देना जानता है सुन्दर योजनाएँ बनाना जानता शहीदों के नाम की दुहाई देकर अपना उल्लू सीधा करना जानता है यह अपना भाग्य अब है जहाँ हाथ में कुठार उठा कर टोपी सब को पहना दे सकता है वहाँ जय-जयकार कराना बिल्कुल सरल बात है। अच्छा बंदे को आज्ञा दीजिए, देर हो रही है प्रणाम!" नारदजी वायसराय पर 'ए मेरे दिल कहीं और चल गम की दुनियाँ से दिल भर गया की धुन बजाते बजाते बिड़ला मन्दिर की ओर प्रस्थान कर गए।